मूल्य ₹ 30/-

www.jyotishgurudelhi.org

अप्रैल 2014

ज्योतिष गुरु

ज्योतिषीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 4 अंक 4

एस्ट्रोपोइंट

पं० के. के. शर्मा
प्रधान संपादक

ज्योतिष में शुक्र ग्रह का महत्व

प्रस्तुति - पं० के.के. शर्मा

स्वामी आनन्द शिव मेहता

चुनाव का महासंग्राम

वास्तु भी होता है चुनाव जिताने में सहायक

वास्तुगुरु कुलदीप सलूजा

कौन पहुँचेगा सत्ता के करीब कांग्रेस या भाजपा

डॉ० आचार्य किशोर चिल्डियाल

तंत्र क्या है?

आचार्य शशिमोहन बहल

// भारत सरकार से पंजीकृत //

ज्योतिष गुरु स्प्रीयुचल एण्ड एजूकेशनल ट्रस्ट के नेतृत्व में

ज्योतिष गुरु एस्ट्रो पॉइट

द्वारा संचालित ज्योतिषीय पाठ्क्रमों को पत्राचार द्वारा मात्र 90 दिनों में सीखें

2500/-

2500/-

2500/-

2500/-

5100/-

यदि आप ज्योतिष, हस्त रेखा, वास्तु शास्त्र, अंक शास्त्र अथवा लाल किताब के माध्यम से भविष्य देखने की विद्या सीखना चाहते हैं, और उसे व्यवसाय के रूप में अथवा समाज सेवा के उद्देश्य से प्रयोग में लाना चाहते हैं तो आपकी इस इच्छापूर्ति में संस्था आपका सहयोग करेगी। आप उपरोक्त दिये गये पाठ्क्रमों में अपना पंजीकरण कराने के लिए पाठ्यक्रम शुल्क का चैक अथवा डी.डी. JYOTISH GURU ASTRO POINT के नाम बना कर भेजें। आप संस्था के ICICI बैक खाते संख्या 003705016585 में भी जमा कर सकते हैं। पत्राचार में कभी भी किसी भी दिन पंजीकरण करा सकते हैं।

सभी शहरों में फ्रंचाइजी आमंत्रित हैं, अपने शहर में सिखाने के लिए सम्पर्क करें

सभी पाठ्यक्रम दिल्ली कार्यालय एवं हमारे चैप्टरो पर रैगूलर भी उपलब्ध हैं जिनका शुल्क 7000 रूपये प्रत्येक तथा लाल किताब 10,000 रूपये होगा।

नोट : प्रत्येक पाठ्यक्रम को दिल्ली कार्यालय में 15 दिनों में सिखाने की सुविधा उपलब्ध है। (शुल्क 20,000 प्रत्येक)

क्या आप अपनी किताब प्रकाशित कराना चाहते हैं?

यदि हाँ तो अपके लिए एक एक अच्छी खबर है कि ज्योतिष गुरु एस्ट्रो पॉईट संस्था ने पुस्तक प्रकाशन कार्य आरम्भ किया गया है। यदि आप किसी भी प्रचीन विधा ;वैदिक ज्योतिष, लाल किताब, हस्तरेखा, वास्तु शास्त्र, अंक शास्त्र, टैरो कार्ड, रेकी, योग एवं अध्यात्मद्ध से जुडे हैं और अपनी किताब प्रकाशित कराना चाहतें तो संस्था से सम्पर्क करें। आपके द्वारा किये गये शोध कार्य को किताब के रूप में प्रकाशित कर उसका वितरण भी किया जायेगा।

JYOTISH GURU ASTRO POINT

F-8A, Vijay Block, Gali No.3, Near Nathu Sweets, Laxmi Nagar, Delhi-110092

Ph. : 011-22435495, 09873295490, 09873295495

नक्षत्र मेला 2014

वृदावन यात्रा के लिए बस का प्रस्थान कराते हुए श्री घनश्याम अग्रवाल, डॉ. महेश अग्रवाल, पं. के. के. शर्मा एवं श्रीबाबूलाल गर्ग (प्रधानजी)

श्री खाटूधाम सेवा न्यास (पंजी.)

निःशुल्क वृदावन धाम बस यात्रा

प्रत्येक माह अन्तिम रविवार

सम्पर्क सूत्र

पं. के. के. शर्मा – 9873295495

घनश्याम अग्रवाल – 9810320450

नोट : सभी यात्रीयों के लिए भोजन व्यवस्था संस्था द्वारा की जाती है।

हमारे विशेषज्ञों से पाइये ज्योतिष, हस्तरेखा एवं वास्तु परामर्श

पं. हनुमान मिश्रा

पं. के. के. शर्मा

आ. किशोर पिल्लिवाल

अतुल कुमार जैन

ज्योतिष

धन, शिक्षा, व्यवसाय, विवाह, गृह क्लेश, कोर्ट–कचहरी, संतान आदि से संबंधित सभी समस्याओं के समाधान के लिए हमारे अनुभवी ज्योतिषाचार्यों से मिलें।

परामर्श शुल्क

ज्योतिषीय परामर्श	₹ 500
विस्तृत ज्योतिषीय परामर्श	₹ 1100
संपूर्ण ज्योतिषीय परामर्श	₹ 2100

वास्तु

घर में सुख समृद्धि तथा उद्योग संस्थान या व्यापार स्थल को उन्नत बनाने के लिए हमारे वास्तु विशेषज्ञ से परामर्श लें।

परामर्श शुल्क

वास्तु परामर्श	₹ 2100
स्थल निरीक्षण (घर, प्लाट व्यवसाय)	₹ 5100
औद्योगिक निरीक्षण	₹ 11000
सम्पूर्ण वास्तु निरीक्षण व समाधान	₹ 15000

कार्यालय में प्रत्येक शनिवार एवं मंगलवार परामर्श शुल्क 250/- रूपये मात्र

यदि आप हमारे कार्यालय में आने में असमर्थ हैं, तो अपनी कुंडली डाक द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। साथ में परामर्श शुल्क का चैक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट JYOTISH GURU ASTRO POINT के नाम से बनाकर अवश्य भेजें।

उपर्युक्त राशि आप icici Bank की किसी भी शाखा के खाता संख्या 003705016585 (JYOTISH GURU ASTRO POINT) में भी जमा करवा सकते हैं।

फोन द्वारा परामर्श के लिए बैंक में शुल्क जमा कराकर अपना जन्म विवरण एवं समस्या फोन द्वारा कार्यालय में बतायें।

।। एक रत्न जो आपका भाग्य बदल सकता ।।

हमें प्रकृति ने अनेकों बहुमूल्य उपहारों से नवाजा है। उन्हीं बहुमूल्य उपहारों में से एक उपहार है ''रत्नों का उपहार''। रत्न एक मूल्यवान निधि हैं। इनमें अद्भुद आकर्षण क्षमता होती है यही कारण है कि मनुष्य अनादिकाल से रत्नों की तरफ आकर्षित रहा है। यही आकर्षण आज भी मनुष्य के मन में बना हुआ है। रत्न न केवल देखने में शोभायमान होते हैं बल्कि इनमें दैवीय शक्ति भी होती है। रत्नों के भीतर चमत्कार करने की क्षमता भी छिपी होती है। रत्न आपकी रक्षा और सुरक्षा करते हैं, रत्न आपके रोगों को दूर करते हैं, रत्न आपको विपत्तियों से बचाते हैं, रत्न आपके भाग्योदय में सहायक होते हैं, बिगड़े काम बनते हैं, मेहनत रंग लाती है, रत्न शास्त्रों के अनुसार रत्न में रंक को राजा बनाने के शक्ति समाहित होती है। तो देर किस बात की आप भी अपने भाग्यशाली रत्न को मंगवाएं और उन्नति तथा सुख-शांति पाएं। goodluckgain.com इस काम में आपका सहायक बनेगा और आपको उपलब्ध कराएगा 'असली रत्न'। जिन्हें पहन कर आप भी रत्नों के चमत्कार का अनुभव कर पाएंगे। वैसे तो बाजार में बहुत सारे रत्न विक्रेता है लेकिन अधिकांश लोग आपको उच्च क्वालिटी के रत्नों के नाम पर बेहद कम कीमत वाले रत्न पकडा देते हैं उनमें से कई ऐसे भी हैं जो आपको नकली रत्न बेच रहे हैं। यही कारण है कि आपको उन रत्नों से कोई लाभ नहीं हो रहा है अथवा आप अपने लिए सही रत्न का चुनाव नहीं कर पा रहे हैं। गलत रत्न धारण करने से रत्न आपको कोई लाभ नहीं पहुंचा पाते अथवा आपका बहुत बड़ा नुकसान करवा सकते हैं। आपकी इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखकर goodluckgain.com लाया है आपके लिए ये सुविधाएं।

आपको असली रत्न उपलब्ध कराया जाएगा।
रत्न की सत्यता का प्रमाण पत्र दिया जाएगा।
रत्न धारण की सम्पूर्ण विधि बताई जाएगी।
रत्न आप तक पहुंचाने की व्यवस्था निःशुल्क होगी।।'

आपके लिए कौन सा रत्न/रुद्राक्ष या यंत्र शुभ रहेगा, विद्वान ज्योतिषी द्वारा इसकी सलाह निःशुल्क दी जाएगी लेकिन इससे पूर्व हमारे खाते में आपको 1100 रुपए जमा कराने होंगे। प्रोडक्ट मगांने पर 1100 रुपए प्रोडक्ट के मूल्य में से कम कर दिए जाएंगे। इतना ही नहीं रत्न के प्रतिकूल असरकारी होने की स्थिति में आपकी 80% धन राशि वापस कर दी जाएगी।

नीचे दिए गए मूल्य सामान्य क्वालिटी के रत्नों के हैं हम इससे सस्ते रत्न भी उपलब्ध करवा सकते हैं साथ ही उच्च कोटि के महंगे रत्न भी उपलब्ध करवाते हैं। हम उत्तम क्वालिटी के रत्नों के अलावा रुद्राक्ष, यंत्र और अन्य पूजन सामग्री भी उपलब्ध कराते हैं। आप अपनी धनराशि हमारे बैंक एकाउण्ट जमा कराकर हमें फोन नम्बर 8800 434 555 पर सूचित करें।

बैंक एकाउण्ट नं 3224250933 नाम विक्रम शर्मा, IFSC CBUN0283915 सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

माणिक्य 2000	मोती 1100	मूगा 2000	पन्ना 5000	पुखराज 11000
ओपल 3200	नीलम 14000	गोमेद 1100	लहसुनिया 1100	

नोट : दिए गए रेट साधारण क्वालिटी व सवा पांच रत्ती के रत्नों के हैं।

ज्योतिष गुरु
हिन्दी मासिक पत्रिका
ज्योतिष गुरु एस्ट्रो पॉइंट द्वारा प्रकाशित
ज्योतिष के पाठकों की प्रिय पत्रिका
RNI No.
DELHIN/2011/36240
मूल्य ₹ 36
अप्रैल 2014

संरक्षक
आचार्य शशिमोहन बहल
श्री अशोक प्रियदर्शी
पं. वृजनारायण शर्मा
आचार्य राजेश विशिष्ठ
आचार्य डॉ.दलीप कुमार
श्री किशोरी लाल शर्मा

प्रधान संपादक
पं. के. के. शर्मा

संपादक
पं. हनुमान मिश्रा

उप संपादक
आचार्य किशोर घिल्डियाल

सहसंपादक
ज्योर्तिविद अजीत रघुवंशी

सहयोगी
त्रिलोक कुमार झा
डॉ. लक्ष्मीनारायणशर्मा
अतुल कुमार जैन
डॉ. सुल्तान फेज
इंदर मोहन एडवोकेट
आचार्य ममता शर्मा

कानूनी सलाहकार
प्रमेन्द्र कुमार (एडवोकेट)
दिल्ली उच्च न्यायालय

सज्जा व रूपांकन
मुकेश कुमार

प्रसार
सोनू
संजय शर्मा

विज्ञापन
संगीता गुप्ता 9873295490

or R;kSgkj ,o 'kHk egr ------------------------ 05
2014 u{k=k vuHkko ------------------------ 07
r=k D;k g \ ------------------------ 08
T;ksfr"k esa 'kØ xg dk egRo ------------------------ 10
foØe lor 2071 ------------------------ 12
Hkkjrh; xf.krK ojkgfefgj ------------------------ 13
puko 2014 dk egklxke ------------------------ 15
Jh nxk"Veh iwtu ------------------------ 18
Qfyr T;ksfr"k esa i'u dMyh dk ;ksxnku ------------------------ 20
'kfu dk 'kHkk'kHk iHkko vkj vki ------------------------ 21
lUrku ikfIr ds fofo/k ;kx ------------------------ 23
T;ksfr"k esa ds dk iHkko ------------------------ 25
exy xg vkj T;ksfr"k ------------------------ 27
leL;k fuokjd ^lEekgu fpfdRlk* ------------------------ 28
fdrus 'kHk&v'kHk g oØh xg ------------------------ 29
pn xg o dkjdRo ------------------------ 30
;=kks)kjk tkus leL;kvks dk gy ------------------------ 31
okLrq Hkh gksrk g puko ftrkus esa lgk;d ------------------------ 32
tc xks/ku/kkjh Ñ".k us bUn dk vgadkj pj fd;k ------------------------ 33
tUei=kh esa O;olk; ;ksx ,o xgks ds vulkj O;olk; ------------------------ 34
uoxgks dk ekfyd g ^l;i xg* ------------------------ 37
fookg foyc dh foopuk ------------------------ 38
fdu dk;ks ds fy;s mi;ksxh g ^cxyke[kh lk/kuk* ------------------------ 39
jksxksa ipkj ds VksVds ------------------------ 40
detksj c/k ds udkjkRed iHkko ------------------------ 41
er 'kjhj dh vkRek fd djkekr ------------------------ 42
dku igpsxk lÙkk ds djhc dkxsl ;k Hkktik ------------------------ 43
eupkgk ifr dl s ------------------------ 44
jkT;dkjd jkg ,o /kudkjd ds ------------------------ 46
'kHk xg Hkh egkekjd curs g ------------------------ 48
fo|k ikfIr ds vklku mik; ------------------------ 50
vkRek vkj ijekRek ------------------------ 52
yky fdrkc esa dkyl ii nks"k nj djus ds mik; ------------------------ 54
xgks dh pky vulkj O;kikj&Hkfo"; vIy 2014 ------------------------ 56
fu%'kYd leL;k&lek/kku ------------------------ 57
vIy ekg jkf'kQy ------------------------ 58&60

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक कमलेश कुमार शर्मा द्वारा राजा आफसेट प्रिन्टर्स 1/51, ललिता पार्क लक्ष्मी नगर, दिल्ली–92 में मुद्रित एवं बी–44, गली नं. 4, बृह्मपुरी, दिल्ली–110052 से प्रकाशित।

'ज्योतिष गुरू' वास्तु, ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र–मंत्र की मासिक पत्रिका है। पत्रिका का कोई भी अंश, प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित करना वर्जित है। संपादक को किसी भी लेख को अस्वीकृत, संसोधन करने पुनः प्रकाशित करने का पूर्ण अधिकार होगा। लेखक के विचार से संपादक सहमत हो ऐसा आवश्यक नहीं है। तंत्र–मंत्र–यंत्र अथवा अन्य प्रकार के प्रयोग या उपचार पाठकगण स्वेछा से करें। इनसे होने वाले अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव के लिए संपादक, लेखक या प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगें। किसी भी विवादित मामले का न्यायक्षेत्र दिल्ली होगा।

ज्योतिष एवं अध्यात्म क्षेत्र से जुडे विद्वानों के लिए
संस्था की सदस्यता मात्र 999/- में।

सुविधायें : ज्योतिष गुरू के टोटके, वास्तु की महिमा, अंकों की महिमा, हस्तरेखा सूत्रम्, वशिष्ठ की वास्तु, चमत्कारी फलादेश एवं संस्थान द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तको की ई कापी एवं ''ज्योतिष गुरू'' मासिक पत्रिका पूरे वर्ष आपके पते पर कोरियर द्वारा पहुंचेगी तथा पत्रिका में 2.5 x 2" का विज्ञापन प्रकाशित किया जायेगा। आपके द्वारा भेजे गये लेख को पत्रिका में यथा योग्य स्थान देकर प्रकाशित किया जायेगा।

विज्ञापन यदि दो माह छपवाना चाहें तो शुल्क 1100/–, छः माह 1600/– तथा एक वर्ष के लिए 2000/– रूपये का चैक/डाफ्ट JYOTISH GURU ASTRO POINT के नाम बना कर भेजे अथवा ICICI बैक के खाता संख्या 003705016585 जमा करें एवं फोन द्वारा सूचित करें।

Jyotish Guru Astro Point
F-8A, Gali No.3, Vijay Block, Laxmi Nagar, Delhi-92
फोन : 011 22435495, 9873295490, 9873295495

समस्याओं का ज्योतिषीय समाधान फोन द्वारा

अब पण्डित जी से फोन द्वारा घर बैठे परामर्श प्राप्त कर सकतें हैं

एक समस्या 500 रू., तीन प्रश्न 1100 रू.

सम्पूर्ण ज्योतिषीय विशलेषण 2100 रू.

यदि आप भी किसी समस्या का ज्योतिषीय समाधान घर बैठे प्राप्त करना चाहते हैं तो संस्था के बैंक खाते में परामर्श शुल्क जमा कराकर, कार्यालय में अपना जन्म विवरण फोन नं सहित नोट करा दें, शीघ्र ही आपकी समस्या का ज्योतिषीय समाधान फोन द्वारा किया जायेंगा।

शुल्क संस्था के ICICI बैंक खाते संख्या (JYOTISH GURU ASTRO POINT) 003705016585 में जमा कराकर फोन द्वारा सूचित करें।

व्रत त्यौहार एवं शुभ मुहूर्त

अप्रैल 2014

व्रत त्यौहार

गौरी तृतीया (गणगौर)	2 अप्रैल	बुधवार
चैत्र मास विनायक चतुर्थी व्रत	3 अप्रैल	गुरूवार
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	4 अप्रैल	शुक्रवार
स्कन्द षष्ठी	5 अप्रैल	शनिवार
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	7 अप्रैल	सोमवार
भवान्युत्पत्ति	7 अप्रैल	सोमवार
श्री रामनवमी	8 अप्रैल	मंगलवार
वासन्त नवरात्रे समाप्त	8 अप्रैल	मंगलवार
कामदा (चैत्र शु.) एकादशी	11 अप्रैल	शुक्रवार
अनंग त्रयोदशी व्रत	12 अप्रैल	शनिवार
श्री महावीर जयन्ती	13 अप्रैल	रविवार
डॉ.भीमराव अंबेडकर जयंति	14 अप्रैल	रविवार
वैशाख संक्रान्ति,	14 अप्रैल	सोमवार
वैशाख पूर्णिमा, स्नान प्रारम्भ	15 अप्रैल	मंगलवार
गुड फ्राइडे	18 अप्रैल	शुक्रवार
वैशाख गणेश चतुर्थी	18 अप्रैल	शुक्रवार
वरूथनी (वैशाख कृ.) एकादशी	25 अप्रैल	शुक्रवार
श्रीवल्भाचार्य जयंति	25 अप्रैल	शुक्रवार
वैशाख मास शिवरात्रि	27 अप्रैल	रविवार
वैशाख (भौमवती) अमावस	29 अप्रैल	मंगलवार

अप्रैल माह के शुभ मुहूर्त

विवाह मुहूर्त : 15, 16, 18, 19, 20, 21, 22, 23, व 24।
नींव एवं गृहारम्भ : 16, 24, व 25 अप्रैल।
गृह प्रवेश : 16, 18 व 25 अप्रैल।
दुकान आरंभ : 16, 18, 24 व 25 अप्रैल।
मुण्डन संस्कार मुहूर्त : 15, 16, 19, 23, 24 व 25 अप्रैल।

द्विपुष्कर योग/त्रिपुष्कर योग

05 अप्रैल 22:55 से 06 अप्रैल 04:36 तक
26 अप्रैल 05:46 से 26 अप्रैल 11:02 तक

पंचक

27 मार्च 19:54 से 01 अप्रैल 24:27 तक
24 अप्रैल 02:23 से 28 अप्रैल 09:22 तक

गण्डमूल

31 मार्च 01:31 से 01 अप्रैल 23:57 तक
09 अप्रैल 13:00 से 11 अप्रैल 18:15 तक
18 अप्रैल 21:53 से 20 अप्रैल 19:33 तक
27 अप्रैल 10:03 से 29 अप्रैल 09:06 तक

सर्वार्थ सिद्धि योग/अमृतसिद्धि योग

01 अप्रैल 06:13 से 01 अप्रैल 23:27 तक
02 अप्रैल 24:06 से 03 अप्रैल 06:10 तक
13 अप्रैल 05:59 से 14 अप्रैल 05:58 तक
17 अप्रैल 22:40 से 18 अप्रैल 05:54 तक
18 अप्रैल 05:54 से 18 अप्रैल 21:53 तक
20 अप्रैल 05:52 से 20 अप्रैल 19:33 तक
27 अप्रैल 05:45 से 27 अप्रैल 10:03 तक
29 अप्रैल 05:43 से 29 अप्रैल 09:06 तक
30 अप्रैल 09:17 से 01 मई 05:42 तक

रवि योग

02 अप्रैल 24:06 से 03 अप्रैल 24:56 तक
04 अप्रैल 26:28 से 06 अप्रैल 04:36 तक
08 अप्रैल 10:04 से 10 अप्रैल 15:47 तक
12 अप्रैल 20:16 से 13 अप्रैल 21:46 तक
14 अप्रैल 07:35 से 14 अप्रैल 22:43 तक
20 अप्रैल 19:33 से 21 अप्रैल 18:08 तक

राहु काल

दक्षिण भारत में राहू काल का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घंटे के लिये यह अनिष्ट समय होता है, जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासंभव टाल देना चाहिये। दक्षिण भारत में राहुकाल का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार प्रातः 7:30 से 09:00 बजे तक
मंगलवार-दोपहर 03:00 से सायं 04:30 बजे तक
बुधवार-दोपहर 12:00 से 01:30 बजे तक
गुरूवार-दोपहर 01:30 से सायं 03:00 बजे तक
शुक्रवार-प्रातः 10:30 से सायं 12:00 बजे तक
शनिवार-प्रातः 09:00 से सायं 10:30 बजे तक
रविवार-सायं 04:30 से सायं 06:00 बजे तक

॥ सम्पादकीय ॥

पं. हनुमान मिश्रा

श्रीगणेशाय नमः

प्रिय पाठको!! सादर मिलन,

अप्रैल 2014 का अंक आपके हाथों में देते हुए अपार हर्ष हो रहा है। अप्रैल माह के शुरुआत में नवरात्रे का प्रभाव है और नवरात्रे में शक्ति की उपासना के समय नवग्रहों के विधिवत पूजन का भी विधान है। क्योंकि भारतीय संस्कृति में नवग्रह उपासना का उतना ही महत्व है जितना किसी देवी–देवता की उपासना का होता है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर हमनें अपने इस अंक में नवग्रहों से सम्बंधित बहुत सारी बातें व तथ्य आपके समक्ष रखने का प्रयास किया है।

नवग्रहों की उपासना के लिये पूजा साधना हमारे शास्त्रों में जप, तप, व्रत व दान इन चार प्रकार के माध्यमों से दी गई है। यदि हम तप की बात करें तो वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि तप एक कठिन प्रकिया है अतः ग्रहों के जप, व्रत और दान को कर लेना ही अपने आपमें एक प्रकार से तप ही हो जाएगा। अतः संक्षेप में ग्रहों के मंत्रों, मंत्र संख्या, सम्बंधित दान की वस्तु और व्रत के बारें में जान लिया जाय। नव ग्रहों के मंत्र, व्रत और दान इस प्रकार हैं–

सूर्य मंत्र– ऊँ घृणि सूर्याय नमः, जप संख्या 7000, दान– माणिक्य, लाल वस्त्र, लाल पुष्प, लाल चंदन, गुड़, केसर अथवा तांबा। व्रत– किसी भी माह के शुक्लपक्ष के प्रथम रविवार से व्रत आरंभ करके 1 वर्ष तक अथवा 30 या 12 व्रत करें। सूर्यास्त से पूर्व भोजन करें तथा नमक का प्रयोग नहीं करें। बुजुर्ग व्यक्तियों का सम्मान करें। पिता या पिता समान व्यक्ति की सेवा करे।

चंद्र मंत्र– ऊँ सों सोमाय नमः, जप संख्या– 11000, दान– बांस की टोकरी, चावल (साबुत), कपूर, मोती, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, घी से भरा पात्र, चांदी, मिश्री, दूध, दही, खीर, स्फटिक माला इत्यादि। व्रत– कुल 10 या 54 सोमवार के व्रत करें। भोजन में प्रथम 7 ग्रास दही, चावल या खीर के खाएं फिर, अन्य भोजन सामग्री ग्रहण करें। मातृ तुल्य महिलाओं का सम्मान करें और सेवा करे।

मंगल मंत्र– ऊँ अं अंगारकाय नमः, जप संख्या– 10000, दान– मूंगा, गेहूं, मसूर, लाल वस्त्र, कनेर पुष्प, गुड़, तांबा, लाल चंदन, केसर। व्रत– 21 या 45 मंगलवार के व्रत करें। भोजन में प्रथम 7 ग्रास गेहूं, गुड़ तथा घी से बना हलुआ या लड्डू के खाएं। पश्चात यथेच्छा पदार्थ का सेवन करें। विधवा महिलाओं का सम्मान करें, उनका आशीर्वाद लें। चांदी का चौकोर टुकड़ा हमेशा साथ रखें। गले में चांदी की माला धारण करें।

बुध मंत्र– ऊँ बुं बुधाय नमः, जप संख्या– 9000, दान– हरे मूंग, हरा वस्त्र, हरा फल, पन्ना, केसर, कस्तूरी, कपूर, शंख, घी, मिश्री, धार्मिक पुस्तकें तथा पूजा में मरगज के गणेशजी रखें। व्रत– 21 या 45 बुधवार के व्रत करें। भोजन के पूर्व 5–7 पत्ते तुलसी के गंगाजल के साथ ग्रहण करें, इसके बाद व्रत खोलें।

गुरू मंत्र– ऊँ बृं बृहस्पतये नमः, जप संख्या– 19000, दान– घी, शहद, हल्दी, पीत वस्त्र, पीत धान्य, शास्त्र पुस्तक, पुखराज, लवण, कन्याओं को भोजन, वृद्धजन, विद्वान एवं गुरूओं की सेवा करें। व्रत– 1 या 3 वर्ष अथवा 16 गुरूवार व्रत रखें। गुरूवार को केले के वृक्ष के दर्शन करें तथा पूजा करके हल्दी एवं सरसों मिलाकर जल प्रदान करें। ध्यान रखें जब गुरू अकारक हो तो स्वयं गुरूवार को केला नहीं खाएं, बल्कि केले के फल का दान दें।

शुक्र मंत्र– ऊँ शुं शुक्राय नमः, जप संख्या– 16000, दान– सफेद छींटदार वस्त्र, सजावट– श्रृंगार वस्तुएं, स्त्रियों का आदर–सम्मान, तुलसी पूजा, श्वेत स्फटिक, चावल, सुगंधित वस्तु, कपूर, श्वेत चंदन अथवा पुष्प, घी– शक्कर– मिश्री–दही गौ की सेवा। व्रत– 21 या 31 शुक्रवार के व्रत करें। व्रत के दिन सफेद रंग की गाय या कन्या के दर्शन करें। स्त्रियों का आदर–सम्मान करें। अंतिम व्रत के दिन 6 कन्याओं को भोजन कराएं। भोजन में खीर हो।

शनि मंत्र– ऊँ शं शनैश्चराय नमः, जप संख्या– 23000, दान– उड़द, तिल, सभी तेल, भैंस, लोहा धातु, छतरी, काली गाय, काला कपड़ा, नीलम, जूता–चप्पल, सोना, कंबल आदि का दान दें। व्रत– 19, 31, 51 शनिवार के व्रत करें। काले कुत्ते, भिखारी या अपाहिज को उड़द, दाल, केला तथा तेल से बना भोजन कराएं या इन्हीं वस्तुओं का दान दें।

राहु मंत्र– ऊँ रां राहवे नमः, जप संख्या– 18000, दान– गेहूं, उड़द, काला घोड़ा, खड़ग, नीला वस्त्र, कंबल, तिल, लौह, सप्त धान्य, अभ्रक आदि। व्रत– शनिवार का व्रत करें।

केतु मंत्र– ऊँ कें केतवे नमः, जप संख्या– 17000, दान– तिल, कंबल, कस्तूरी, काला वस्त्र तथा पुष्प, सभी तेल, उड़द, काली मिर्च, सप्तधान्य, बकरा, लौह धातु, छतरी, सीसा, रांगा इत्यादि। व्रत– शनिवार का व्रत करें।

यदि साधक पूर्ण श्रद्धा विश्वासपूर्वक ये उपासना सम्पन्न करता है तो साधक को अभिष्ट की प्राप्ति होती है। इन विभिन्न मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप प्रत्येक ग्रह की निश्चित जपसंख्या के आधार पर करना चाहिए। यह जाप 108 दाने की रूद्राक्ष माला द्वारा सम्पन्न होता है। प्रतिदिन नियत संख्या में माला करना चाहिए। जप पूर्ण होने पर जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन एंव मार्जन का दशांश ब्राम्हण भोजन का विधान है। वैसे तो शास्त्रों में कहा गया है कि ''कलियुग चर्तुभुजों'' अर्थात् कलियुग में निश्चित जपसंख्या के चार गुना जप करना चाहिए। लेकिन यदि ऐसा सम्भव न हो तो निश्चित जपसंख्या के अनुसार जप तो करना ही चाहिए।

यदि आपकी कुण्डली में कोई भी ग्रह नीच या अशुभकारी हो जाता तो जप व दान आदि शुभ फल देने में सहायक बनते हैं। कुंडली के कारक ग्रह अर्थात केंद्र त्रिकोण के स्वामी भी यदि नीचगत हों तो भी उपरोक्त तरीके से उनकी शांति सम्भव है। ध्यान देने वाली बात यह है कि अकारक अथवा नीचगत ग्रह का रत्न कदापि धारण नहीं पहनें, बल्कि इनसे संबंधित नगों, रत्नों, का दान करें। इससे ग्रहों की शुभता बढ़ेगी।

आशा है उपरोक्त बातों के माध्यम से आप जरूर लाभान्वित होंगे। और भी विषेश और विस्तृत ज्ञान के लिए निरंतर पघ्ते रहिए आपकी अपनी पत्रिका "ज्योतिष गुरु"। पत्रिका के प्रचार प्रसार के लिए आपका प्रयास प्रार्थनीय है।

आपका

हनुमान मिश्रा।

नक्षत्र 2014

दिनांक 15 से 23 फरवरी 2014 को दिल्ली के प्रगति मैदान में आई.टी.पी.ओ. व फ्यूचर पॉईंट के सौजन्य से नक्षत्र 2014 ज्योतिषीय मेले का भव्य आयोजन किया गया जिसमें भारतवर्ष के जाने–माने ज्योतिषीयों, ज्योतिष सस्थाओं व ज्योतिष जगत से जुड़े व्यक्तियों ने भाग लिया लगभग 200 से ज्यादा स्टॉल प्रगति मैदान स्थित हाल नं0 15 व फुलवारी हॉल में लगाए गये थे ज्योतिष गुरू एस्ट्रो पॉईंट संस्थान पूर्व की वर्षो के भांति इस वर्ष भी इसमें उपस्थित रही संस्था की और से सस्थापक ^i0 dsds'ke lLFkkid* Mk0 fd'kksj f?kfYM;ky (उपसंपादक), पी.पी.एस राणा इसमें शामिल हुए तथा संस्थान ने आम जनता के ज्योतिषीय समाधान किए, संस्थान ज्योतिष क्षेत्र में प्रचार–प्रसार हेतु ऐसे आयोजनों में हमेशा से अपनी उपलब्धि दर्शाती रही है संस्थान की ओर से डॉ0 किशोर घिल्डियाल, पी.पी. एस राणा, तनुश्री, निशा वशिष्ठ एवं पं. के.के. शर्मा ने जनता की समस्याओं का समाधान किया।

दिनांक 15 फरवरी को ज्योतिष गुरू परिवार के सम्मानित सदस्य डॉ0 दलीप कुमार जी ने अपनी ^uo;x T;ksfr"k f'k{k.k lLFkku** के दीक्षांत समारोह का आयोजन फुलवारी हाल में किया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में ज्योतिष गुरू परिवार से श्री के. के. शर्मा तथा फ्यूचर समाचार की ओर से श्री अरूण बंसल जी सम्मिलित हुए तथा उन्होंने लगभग 100 छात्रों को उनके ज्योतिषीय पाठ्यक्रम के पूर्ण होने पर डिग्री व सम्मान पत्र प्रदान किए।

17 फरवरी को ज्योतिष की अग्रणी संस्था फ्यूचर पॉईंट के द्वारा ज्योतिष सम्मेलन का आयोजन फुलवारी हाल में किया गया जिसमें देश के आगामी राजनीतिक परिवर्तन व चुनावों को देखते हुए ज्योतिष के विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए जिनमें श्री अजय भावी, श्री अरूण बंसल, श्रीमती आभा बंसल, डॉ0 मनोज कुमार इत्यादि मुख्य रूप से सम्मिलित थे।

19 फरवरी को फ्यूचर पांईट संस्था के द्वारा ज्योतिष से जुड़े विद्वान लेखकों एवं शोधकताओं को सम्मनित किया गया सम्मानित किए जाने वालों में ज्योतिष गुरू परिवार से जुड़े डॉ0 किशोर घिल्डियाल को उनके शोधपूर्ण कार्यों के लिये स्वर्ण पदक से सम्मानित किया ज्योतिष गुरू परिवार से जुड़े अन्य विद्वानों जैसे श्रीमति रशिम चौधारी, श्री संजय बुद्धिराजा, डॉ0 दिलीप कुमार टीपू सुल्तान फैज आदि को भी सम्मानित किया गया। संस्था आईफास नामक ज्योतिष संस्था के नाम से पूरे विश्व में कार्य करती है जो ज्योतिष से जुड़े विद्वानों को हमेशा प्रोत्साहित करती है ज्योतिष गुरू परिवार के डॉ0 किशोर घिल्डियाल व डॉ0 दलीप कुमार जी के शोधपूर्ण लेख उनकी रिसर्च जनरल व फ्यूचर समाचार नामक पत्रिका में छपते रहते हैं।

21 फरवरी को ज्योतिष गुरू परिवार ने अपने विद्वान लेखकों व सदस्यों को सम्मानित किया जिसमें एक मैडल, सम्मान पत्र व अंग वस्त्र प्रदान किए गए संस्थान ने हर वर्ष की भांति करीब 3000 से ज्यादा लोगों को ज्योतिषीय सामग्री व पूर्व प्रकाशित अंक की पत्रिकाएं निःशुल्क वितरण की तथा करीब 500 लोगों का समस्या समाधान किया जनता की ओर से ज्योतिषी गुरू पत्रिका की सालाना मेंम्बरशिप पर छूट दिए जाने के प्रावधान के तहत मेंम्बरशिप लेने की होड़ मची रही ज्योतिष गुरू परिवार आयोजको का धन्यवाद करता है तथा भविष्य में ऐसे आयोजनों में शामिल रहने की घोषणा करता है।

卐 卐 卐

i0 dsds'ke

आचार्य शशिमोहन बहल

तंत्र क्या है?

भारतीय अध्यात्म के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को बोध देते हुए मानव की ईश्वरीय सत्ता–युक्त वस्तुओं के प्रति अभिरूचि के मूलभूत कारण बताते हुए कहा है कि –

prfo|k HktUrsek tek% lÑfruks tuA
vklksftKkljFkkFkh Kkuh p Hkj"keAA

अर्थात् पृथ्वीवासियों में श्रेष्ठ अर्जुन! अति संकट में पड़ा हुआ जिज्ञासु अर्थात् ज्ञान का इच्छुक अर्थात सांसारिक सुखों का अभिलाषी तथा ज्ञानी, ऐसे उत्तम कर्म वाले लोग ही मेरा स्मरण करते हैं।

यह कथन हम और आप सभी के लिये समान रूप से लागू होता है।

हममें से कोई पीड़ित है तो कोई जिज्ञासु, तो कोई अर्थ कामना का इच्छुक। इनकी आवश्यकता कहाँ तक है, किसी से छिपी नहीं है। ये आवश्यकताएं कष्टों से मुक्ति पाने, ज्ञातव्य को जानकर जिज्ञासा को शांत करने तथा सांसारिक भौतिक सुखों को प्राप्त करने के लिये निरन्तर बढ़ती चली जाती है। इसी कारण हमारे महर्षियों ने इससे मुक्ति पाने के लिये जो उपास बताए हैं, उनमें से 'तंत्र' अपना विशेष महत्व रखता है।

इसी तंत्र की शक्ति से हमारे ऋषि–मुनियों ने अनेक प्रकार की आलौकिक सिद्धियाँ, शक्तियाँ प्राप्त की थीं। आज हम सभी तंत्र के द्वारा अपनी–अपनी आवश्यकता की पूर्ति का प्रयत्न करते हैं और कुछ सफलता भी प्राप्त कर लेते हैं। इसी कारण तंत्र को आवश्यकता की पूर्ति का साधना माना गया है।

हम जब भी दुःखों और कष्टों से मुक्त होते हैं, तब इच्छाएं व कामनाएं और अधिक बढ़ने लगती हैं। हम कम से कम श्रम में अधिकाधिक पूर्ति करना चाहते हैं। वस्तुतः तंत्र ही एक ऐसी शक्ति है जिसके द्वारा कम से कम श्रम व शक्ति से अधिकाधिक सफलता प्राप्त की जा सकती है।

प्राचीनकाल में तंत्र का जो भी सम्मानित स्थान भारत में रहा हो, पर सत्रहवीं शताब्दी के बाद से इसका महत्व बराबर घटता गया और लोगों की निगाहों से गिरता गया। इसे ढोंग, आडम्बर, लोगों को मूर्ख बनाने वाली विद्या के रूप में कुख्याति मिली। अठारहवीं शताब्दी के अंत तक लोगों की घृणा का विषय बन गया। अंग्रेजी सभ्यता से पीड़ित उन्नीसवीं शताब्दी के लगभग पचास वर्षों तक तो तंत्र-मंत्र को अत्यंत हीन और ढोंग धतुरा माना गया। इस ओर शिक्षा पाने के बाद ध्यान नहीं देते थे। इसका एक मात्र कारण था कि वास्तव में तब तंत्र में अनाधिकृत और निकृष्ट आचरण वाले व्यक्ति प्रवेश कर गए थे। इसमें ऐसे लोगों के आधिक्य के कारण तंत्र अन्धविश्वास और अश्रद्धा का केन्द्र बन गया।

तंत्र सामान्य मार्ग है। साधना मार्ग के सभी अभीष्ट मार्गों का एक अद्भुत, समन्वयकारी मार्ग है। ज्ञान–योग, भक्ति–कर्म आदि सभी मार्गों व माताओं की साधना का समावेश है। सभी एक–दूसरे के परस्पर पूरक हैं, विरूद्ध नहीं। साधना–याज्ञिक कार्य अनुष्ठानिक कर्म है। हठ योग व समाधि योग का भी अपना अलग महत्व है।

श्रद्धा–भक्ति के मार्ग में साधक अद्वैत ज्ञान में साम्राज्य से प्रतिष्ठित होते हैं।

आज के युग में मनुष्य द्वारा आध्यात्मिक उन्नति की चेष्टा असंभव है। अतः प्रवृत्ति मार्ग में तंत्र की उपासना सहज व सरल है। तंत्र भोग व मोक्ष दोनों देता है। कहा गया है –

जरा सोचें, मनुष्य में भोग न होने से त्याग कैसे आएगा ? मात्र कंठाग्र उपदेश या भाषणों के माध्यम से इन्द्रिय–शक्ति से मनुष्य को निवृत्त करने की कामना करते हैं। तंत्र में 'पंचमकार' को साधना के रूप में स्वीकार किया है। वह लोग जो इन्द्रिय–भोग में लिप्त हैं, वे साधना का अंग कहकर व्यवहार करेंगे। अध्यात्म धर्म व उपासना लोगों के दैनिक जीवन से अलग वस्तु नहीं है वरन् प्रतिदिन के सरल जीवन माया के समान आवश्यक है। इसका ज्ञान तंत्र शास्त्र ने ही मनुष्य के भीतर पैदा किया।

जगत–कारण–महामाया मातृत्व का प्रचार और साथ ही साथ सभी स्त्री–मूर्तियों पर एक शुद्ध व पवित्र भाव

को लाना भी एक पवित्र उद्देश्य है।

नारी का शरीर पवित्रम तीर्थ है। नारी पर मनुष्य, बुद्धि का त्याग कर, हर पल देवी बुद्धि रखें और जगदम्बा की विशेष शक्ति के प्रकाश की भावना कर हर समय स्त्री पर भक्ति और श्रद्धा का प्रदर्शन करें। तंत्र साधना में नर व नारी का समान अधिकार है। सिद्धि के मार्ग में और साधना के हर अंग में नर और नारी के संयुक्त कर्म का भी विधान है। नारी श्रेष्ठ है। नारी ही शक्ति है। कुमार व कुमारी की अवस्था में मनुष्य अपूर्ण है। साधना कर्म में अधिकार पैदा होता है। तंत्र मार्ग में नर और नारी के संगम व प्रणय के विधि–विधान अत्याधिक उदार है। एक साधक को एकाधिक शक्ति का व एक साधिका को एकाधिक भैरव का रूप ग्रहण करना तंत्र में है। युवा अवस्था में हमारी आशक्ति नारी की ओर सहज एवं स्वाभाविक रूप से होती है। आकर्षण से अपने मन को बरबस हटाने का आदेश तंत्र नहीं देता है। यदि स्त्री–संग ही किया जाये तब मनुष्य के अध्यात्मवाद की उन्नति होती है। सच्चे साधु कभी लंपट नहीं होते। तंत्र में बिना स्त्री के सिद्धि लाभ किया जा सकता है।

शरीर को कष्ट देने या सुखाने की बात तंत्र में नहीं है, भोग व योग एक ही क्षमता के दो भाग है।

'कुलार्णव' तंत्र में स्पष्ट कहा है कि सतयुग में श्रुति के विधानानुसार, त्रेता में स्मृतिनुसार, द्वापर में पुराणानुसार एवं कलियुग में 'तंत्र' अनुसार ही धर्म करना कल्याणप्रद है।

विष्णु यामल में भी स्पष्ट कहा गया है –

वर्तमान समाज में पंचमकार में लिप्त मानव को देखकर यही विचार आता है कि तंत्र साधना शुद्ध का आधुनिक युग में ही विशेष प्रयोजन है। तांत्रिक साधना में नैतिक बन्धन की आवश्यकता न होने के कारण भी यह उदार है। नीति बंधन के कारण अन्यान्य साधना की पद्धति में प्रवृत्ति के साथ प्रकृति का विरोध भी है।

भारत में शक्ति की उपासना चिरकाल से है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई यह स्पष्ट करती है कि यह नगर कई बार बसा व कई बार उजड़ा है। इसकी प्राचीनतम सभ्यत काल चार हजार ईसा पूर्व आंकते हैं। खुदाई से प्राप्त अनेक वस्तुओं के साथ अनेक देवी–देवताओं की मूर्तियां उपलब्ध हुई हैं। लिंग, योनि, स्वास्तिक, शक्ति, नदी के नाम है। इससे स्पष्ट है कि उस समय शक्ति उपासना अवश्य प्रचलित थी।

मंत्र अत्यंत प्राचीनकाल में भारतीय अध्याय का प्रमुख सहयोगी रहा है। तंत्र शास्त्र का रचनाकाल स्वयं इस बात को प्रमाणित करता है।

तंत्र शब्द का अर्थ बड़ा विस्तृत है। सिद्धांत व्यवहार नियम वेद की एक शाखा, शिव शक्ति आदि की पूजा और अभिचार आदि का विधान करने वाला शास्त्र आगम कर्मकाण्ड पद्धति और अनेक उद्देश्यों का पूरक उपाय अथवा उसकी युक्ति महत्वपूर्ण है। वैसे यह शब्द 'तन' और 'त्रे' से बना है। अतः तत्व को अपने अधीन करना। यह अर्थ तो व्याकरण की दृष्टि से स्पष्ट है, जबकि तत् पद से परमात्मा तथा 'त्र' से स्वाधीन बनाने के भाव को ध्यान में रखकर तंत्र का अर्थ देवताओं की पूजा से प्रकृति और परमेश्वर को अनुकूल बनाना होता है। परमेश्वर की उपासनार्थ जो भी उपयोगी साधन हैं, उन्हें भी तंत्र कहा गया है।

जिसके द्वारा सभी मंत्रार्थों अनुष्ठानों का विस्तारपूर्वक विचार हो तथा जिसके अनुसार कर्म करने पर लोगों की रक्षा हो, वही तंत्र है। तंत्र का दूसरा नाम आगम है। अतः तंत्र और आगम परस्पर पर्यायवाची है।

जो शिवजी के मुख से आया और पार्वती ने सुना तथा जिसे भगवान विष्णु ने अनुमोदित किया, वही 'तंत्र' है। इस प्रकार तंत्रों के प्रथम प्रवक्ता भगवान शिव हैं, सम्मति देने वाले भगवान विष्णु हैं जबकि पार्वती उसका केवल श्रवण कर जीवों पर कृपा करके उपदेश देने वाली हैं। अतएव भोग और मोक्ष दोनों के उपायों को बताने वाला विज्ञान 'तंत्र' कहलाता है।

खेद का विषय है कि आज भी शिक्षित समाज तंत्र की वास्तविक भावना से दूर केवल परम्परा मूलक धारणाओं के आधार पर इस भ्रम से छूट नहीं पाया है कि तंत्र का अर्थ है जादू–टोना। अधिकतर यही समझते हैं कि जैसे सड़क पर खेल दिखाने वाला बाजीगर अपने करतब दिखाकर लोगों को आश्चर्य में डाल देता है। ठीक उसी प्रकार तंत्र भी तब दिखलाने वाला शास्त्र होगा और तंत्र सिद्धि क्षणिक होती है। यह मिथ्या धारण है।

अपने शहर में निःशुल्क ज्योतिषीय समाधान शिविर के लिये सम्पर्क करें
फोन : 011–22435495, 9873295495, 9873295490

ज्योतिष में शुक्र ग्रह का महत्व

ज्योतिष शास्त्र में शुक्र को गुरू की भांति ही नैसर्गिक शुभ ग्रह की उपाधि प्रदान की गयी है। शुक्र स्त्री ग्रह है, जल का स्वामी, ब्राह्मण जाति, रजोगुणी शुभ ग्रह है। इसमें भी चन्द्रमा की तरह से सफेद किरणें दिखाई देती है, शरीर में इसका स्थान जीभ तथा जननेन्द्रिय है। यह इन स्थानों से जीव को सब रसों का रसास्वादन कराता है, अर्थात् सभी प्रकार के रसों का स्वाद जीभ से और मैथुन के समय जननेन्द्रिय को तिक्त और चरपरा आभास करवा कर आनन्द की अनुभूति प्रदान करता है। शुक्र के अस्त होने के समय कोई शादी सम्बंध जैसा शुभ कार्य नहीं किया जाता है। जातक का शुक्र कुंडली में अस्त होता है, तो तमाम प्रकार के वीर्य विकार पाये जाते है। पुरूष की कुंडली में सूर्य के साथ शुक्र होने पर संतान बड़ी मुश्किल से पैदा होती है, और अधिकतर गर्भपात के कारण देखे जाते हैं। स्त्री की कुंडली में शुक्र और मंगल की युति होने पर पति पत्नी हमेशा एक दूसरे से झगड़ते रहते हैं, और जीवन भर दूरियां ही बनी रहती हैं। अक्सर शुक्र अस्त वाला जातक पागलों जैसी हरकतें किया करता है।

एक ही ग्रह इस भचक्र में शामिल है, जिसे प्यार औकात का अधिकारी माना जाता है। शुक्र ग्रह को वैदिक अथवा पश्चिमी ज्योतिषाचार्यों ने स्त्री ग्रह का दर्जा दिया है। शुक्र को वास्तव में स्त्री ग्रह का दर्जा तो दिया गया है, लेकिन इसका वास्तविक प्रभाव प्रत्येक जीवधारी में बराबर का मिलता है, पुरूष के अन्दर स्त्री अंगों की उपस्थिति भी इस ग्रह का भान करवाती है। जिस प्रकार से मंगल की गर्मी गुस्सा और उत्तेजना को पुरूष और स्त्री दोनों के अन्दर समान भाव में पाया जाना है, उसी प्रकार से शुक्र का प्रभाव स्त्री और पुरूष दोनों के अन्दर समान भाव में पाया जाता है।

'kØ vkuUn vkj lUnjrk dk inkrk %& शुक्र को आनन्द का ग्रह कहा जाता है, वैसे सभी ग्रह अपने–अपने प्रकार का आनन्द प्रदान करते हैं, सूर्य राज्य का आनन्द प्रदान करवाता है। मंगल वीरता और पराक्रम का आनन्द प्रदान करवाता है। चन्द्र भावुकता का आनन्द देता है। बुध गाने बजाने का आनन्द देता है। गुरू ज्ञानी होने का आनन्द देता है। शनि समय पर कार्य को पूरा करने का आनन्द देता है। शुक्र आनन्द की अनुभूति जब देता है, जब किसी सुन्दरता के अन्दर प्रवेश हो, भौतिक रूप से या महसूस करने के रूप से जैसे भौतिक रूप से किसी वस्तु या व्यक्ति को सुन्दरता के साथ देखा जाये, महसूस करने के रूप से जैसे किसी की कला का प्रभाव दिल और दिमाग पर हावी हो जाये। शुक्र आनन्द के साथ दर्द का कारक भी है। जब हम किसी प्रकार से सुन्दरता के अन्दर प्रवेश करते हैं तो आनन्द की अनुभूति होती है, और जब किसी भद्दी जगह या बुरे व्यक्ति से सम्पर्क करते हैं तो कष्ट भी होता है। इसी अनुभूति का एक उदाहरण मेरे सामने आया कि मैं एक पागलखाने के डाक्टर के पास बैठा था। उसी समय एक खूबसुरत महिला को लाया गया। उसे देखकर अच्छा लगा (यह शुक्र का भौतिक रूप सामने था)। लेकिन जब उसके बारे में उसके परिजनों ने बताया कि वह पागल है, और कोई भी हादसा कर सकती है। यह सुनकर दिल में पीड़ा हुई कि एक महिला के अन्दर जो इतनी सुन्दर है, यह बीमारी है। यह शुक्र की आन्तरिक अनुभूति थी। उसी समय डाक्टर ने अपने सहायकों को बुलाया और उसके मस्तक में शार्ट देने के लिये करेंट लगाया। सहायकों ने उसे जबरदस्ती भींच लिया, और अचानक इस भींचने कि क्रिया में वह सुन्दर महिला एक दम भयभीत हो गयी, और करेंट को माथे में लगाते ही बहुत जोर से चीखी और बेहोश हो गई। डाक्टर और सहायकों पर उसका कोई असर नहीं था, क्योंकि उनकी क्रिया इसी प्रकार से सभी मरीजों के साथ हुआ करती थी,

और उनकी यह भावना भी हर बार करेंट देने में होती है कि इसके बाद व्यक्ति साधारण रूप से ठीक हो जायेगा, भले ही उसे शरीर में कितनी ही पीड़ा सहनी पड़े, और जब वह महिला बेहोश हो गयी तो एक अन्जानी से पीड़ा काफी देर तक दिल और दिमाग में छायी रही, कि या तो भगवान इस सुन्दर महिला को जन्म नहीं देता, और जन्म दिया था तो इस प्रकार की बीमारी नहीं देता, और बीमारी भी उसके किसी कर्म के अनुसार दी थी, तो उसको साधारण तरीके से ठीक भी होना चाहिये था। इस प्रकार की मनोभावनात्मक पीड़ा का पैदा होना भी शुक्र की देन है, जो चंद्र और शुक्र के मिले जुले प्रभाव के साथ मंगल की खुली अविभूति मानी जा सकती है।

'kØ dh jkf'k;k %& वृष और तुला शुक्र की राशियां हैं, वृष राशि भौतिक सुखों की तरफ अग्रसर करती है, और तुला राशि शारीरिक सुखों की तरफ अपना प्रभाव देती है। वृष राशि वाले जातक मेहनती और सोच समझकर काम करने वाले होते हैं। उनका उद्देश्य मात्र धन कमाना होता है, और धन वाले मामलों में अपनी सोच रखते है, जबकि तुला राशि वाले जातक अपने आस–पास के माहौल के साथ जो भी करते है, आपस का सामंजस्य बिठाने के काम करते हैं। तराजू की तरह तौल कर अपना काम करते हैं, और न्याय के साथ व्यापारिक गतिविधियों की तरफ अपना प्रभाव दिखाते है, तुला राशि का स्नान काल पुरूष के अनुसार विवाह जीवन साथी और साझेदार के अनुसार देखा जाता है, जबकि वृष राशि वाले जातक अगर अपने पास पूजा–पाठ या किसी प्रकार से रहने वाले साधनों में धार्मिक विश्वास के साथ चलें तो उनका जीवन सुखी रहता है। इस प्रकार के कथन ^^ekulkxjh** नामक ग्रंथ में कहे गये हैं।

'kØ lslEcfU/kr jksx %& शुक्र जनन सम्बन्धी रोग अधिक पैदा करता है। स्त्रियों में रज और पुरूषों में वह वीर्य का मालिक होता है, शुक्र जब खराब फल देता है, तो जातक को प्रमेह मन्दबुद्धि वीर्य और रज विकार नपुंसकता और जननेन्द्रिय सम्बंधी रोग होते हैं। यदि किसी प्रकार से दवाई के प्रयोग करने के बाद भी रोग का अंत नहीं हो तो समझना चाहिये कि कुंडली में शुक्र किसी न किसी प्रकार से खराब है, और शुक्र का समय भी चल रहा होता है मान लेना चाहिये। शुक्र का प्रभाव जब अच्छा होता है तो जातक के पास जमीन जो खेती के काबिल होती है, प्राप्त होती है, स्त्री सम्बंधी सुख प्राप्त होता है। घर की सजावटें होने लगती है। कम्प्यूटर और टी.वी. घर में अपना स्थान बना लेते हैं, व्यक्ति का नाम मीडिया में चमकने लगता है।

'kØ dsjRu vkj mijRu %& शुक्र के रत्नों में हीरा करगी और सिम्मा का नाम मुख्य माना जाता है। हीरा संसार प्रसिद्ध है। करगी कहीं–कहीं ही मिलती है, और सिम्मा जिसका दूसरा नाम जरकन है। कृत्रिम रूप से बनाया हुआ पत्थर है। इन रत्नों में हीरा सबसे महंगा रत्न है, और सेन्ट के हिसाब से मिलता है। सवा पाँच रत्ती का हीरा बहुत महंगा होता है, इसलिये इनको 6 की संख्या में या नौ कि संख्या में लेकर सोने की अंगूठी में जड़वा लेना चाहिये, और मध्यमा उंगली में शुक्रवार के दिन जब भरणी नक्षत्र हो उस दिन शुक्र के मंत्र का जाप करते हुये धारण करना चाहिये। रत्न की विधि विधान से प्राण प्रतिष्ठा नहीं हो जाती है, तब तक वह पूर्ण प्रभाव नहीं दे पाता है। जब तक उसकी प्रतिष्ठा नहीं की जाती है। वह केवल पत्थर है, जिस प्रकार से मंदिर में किसी प्रतिमा को लगा दिया जाये और उसकी प्राण प्रतिष्ठा नहीं हो, तब तक वह केवल पत्थर का तरासा हुआ रूप ही समझा जायेगा।

'kØ dh tMh cfV;k %& शुक्र के लिये जो जातक हीरा धारण नहीं कर पाते हैं वे शुक्रवार को सरपोंखा की जड़ भरणी नक्षत्र में सफेद धागे में पुरूष दांहिने और स्त्री बायें बाजू में बांध कर शुक्र का जाप करें, इससे भी जातकों को शुक्र का फल प्राप्त होना शुरू हो जाता है। सरपोंखा के साथ अरंड की जड़ को भी शुक्र की जड़ी माना गया है। अरंडी के फल की सफेद रंग की मिर्गी को लेकर उसे गर्म पानी के साथ डालने पर जो तेल पानी के ऊपर छहरा जाता है। उसे नित्य माथे से लगाने पर और शुक्र के रोगों में उसे पीने पर जातक को शुक्र सम्बंधी विकार खत्म होते हैं।

'kØ dsfy;snku %& भरणी पूर्वा फाल्गुनी पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में स्वयं के वजन के बराबर चावल उसमें थोड़ी सी चांदी थोड़ा सा घी सफेद वस्त्र चन्दन दही गंध द्रव्य चीनी हीरा या जरकन सफेद फूल मिलाकर दान करना चाहिये। किसी बड़ी पीड़ा में गोदान भी किया जाता है। गोदान करने के लिये जहाँ पर गाय का दान करना संभव नहीं है, वहाँ पर सवा गज सफेद कपड़े में सवा सेर चावल और सफेद चन्दन को रख कर बांध लिया जाता है। उसे संकल्प के साथ किसी ब्राह्मण को दक्षिणा सहित दान कर दिया जाता है।

'kØ lstMs0;kikj %& हीरे का व्यापार, आभूषणों के बनाने और आयात–निर्यात करने का काम, लेन–देन करने काम, ब्याज के काम, इत्र सुगन्धित तेल साबुन सोडा मनिहारी फैंसी स्टोर का काम फिल्म बनाने का काम फूलों से जुड़े काम फर्नीचर और पुरातत्व वस्तुओं का व्यापार पशु धन की बिक्री और खरीद का काम शराब बनाने का और बेचने का काम कलाकारी और सौंदर्य से जुड़ी वस्तुओं का काम आदि माने जाते हैं।

卐 卐 卐

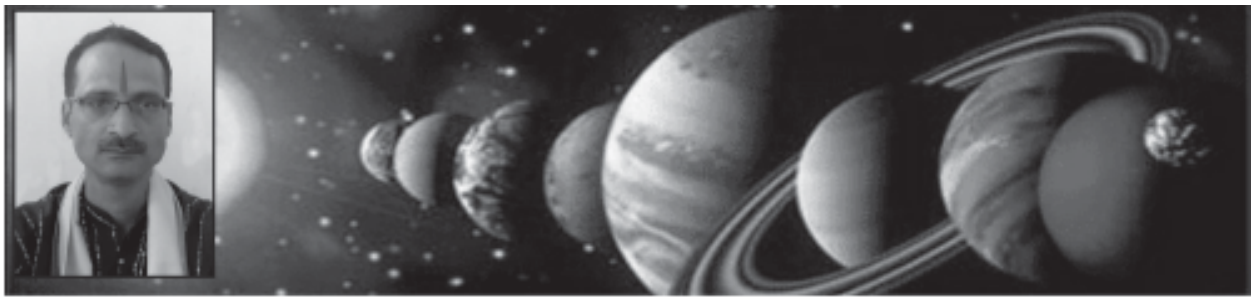

डॉ० आचार्य किशोर घिल्डियाल

विक्रम संवत् 2071

p=k foØe lor 2071 31 मार्च 2014 को रात्रि 00:15 बजे से आरम्भ होगा, इस सवंत् का नाम प्लवंग है जो वृश्चिक लग्न व मीन राशि से आरंभ होगा।

y\uš मंगल एकादश भाव में कन्या राशि का (व) होकर बैठा है जो दूसरे, पंचम व षष्ठ भाव को दृष्टि दे रहा है जिसके प्रभाव से धनकोष में आर्थिक संकट, सरकार की नीतियों के विरोध में हड़ताल, सेना पर ज्यादा खर्च, देश का उधार बढ़ना एवं मुद्रा का स्तर गिरना रूपया डॉलर के मुकाबले कमजोर होना इत्यादि होगा परन्तु तरक्की फिर भी होगी।

y\uš मंगल षष्ठेश भी है जो केन्द्र में किसी एक निश्चित सरकार को प्रदर्शित नहीं कर रहा है सभवतः अगली केन्द्र सरकार भी मिलीजुली ही होगी, चूँकि इस वर्ष मंगल राजा भी है तो इस वर्ष किसी बड़े नेता की मृत्यु देश में कई जगह अग्निकांड, दुर्घटनाएं व फसलों का नुकसान, बीमारी एवं कम वर्षा का होना जैसे प्रभाव ज्यादातर मिलेंगे।

nljs व पंचम भाव का स्वामी गुरू अष्टम में होने से ज्यादातर पैसा सरकार को बीमा कंपनियों व टैक्स से ही प्राप्त होगा सभवतः इन दोनों क्षेत्रों में बढ़ोत्तरी भी होगी वहीं चुनाव में छोटे–छोटे राज्य सरकार अपना प्रभाव भी दर्शा रही हैं सप्तमेश व द्वादशेश शुक्र तृतीय भाव में विदेश से लाभ व संचार साधनों में बदलाव के स्पष्ट संकेत दे रहा है कम्प्यूटर संस्थानों में बहुत लाभ होगा, शुक्र क्षेत्र व साहित्य क्षेत्र में विदेशी प्रभाव आएगा परन्तु इन्हीं क्षेत्रों से सम्बंधित व्यक्तियों की मृत्यु भी होगी। स्त्री जातकों का आपराधिक ग्राफ बढ़ेगा। राष्ट्रीय आपदाएं भी होंगी जिनमें भूकम्प, बाढ़, सूखा इत्यादि भी हो सकती है, वही मई माह बाद जमीन व जमीन से जुड़ी परियोजनाओं में गिरावट आएगी।

चतुर्थ भाव में बुध किसी बड़े नेता की हत्या करवा सकता है तथा फसलों में कमी भी रहेगी तथा देश के युवा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

सूर्य का पंचम में मंगल से दृष्ट होना सरकार हेतु अशुभता दे रहा है, कहीं–कहीं भयानक विस्फोट इत्यादि से जनहानि भी हो सकती है।

छठे भाव में केतु विदेशी देशों द्वारा गुप्त षड़यंत्र व हमला करने जैसे हालत पैदा करवा रहा है, विशेषकर अक्टूबर, नवम्बर में, जनता में जहर सम्बंधी रोगों का होना बढ़ सकता है। फौज के किसी बड़े अधिकारी की मृत्यु संभव है।

सप्तमेश शुक्र का तृतीय भाव में होना विदेशी व्यापार का गिरना, साथी देशों द्वारा धोखा करना, संचार साधनों से जुड़े लोगों का असंतोष जाहिर करना रेल व अन्य साधनों में अपराध बढ़ना तथा विपक्ष का प्रभाव बढ़ना जैसे हालत बता रहा हैं।

गुरू का अष्टम में होना किसी बड़े नेता, अधिकारी को देहांत होना बता रहा है। भूकंप व संक्रमित बीमारियों का बढ़ना, दुर्घटनाएं इत्यादि विशेषकर अप्रैल के अंत में ऐसा होने की पुष्टि कर रहे हैं।

नवमेश चंद्र पंचम में शेयर मार्केट, खेल व मनोरंजन से जुड़े लोगों के लिये नए कानून बनवाएगा, इन क्षेत्रों में सफलताएं भी बढ़ेगी जलीय क्षेत्रों विशेषकर जल सेना में, आंदोलन जैसी स्थिति बनेगी धार्मिक व न्याय से जुड़े विभागों से सम्बंधित घोटाले व षड्यंत्र उजागर होंगे।

दशमेश सूर्य का पंचम में होना शिक्षा, मनोरंजन खेल जगत में ज्यादा प्रभाव डालेगा वही राजकीय पार्टीयां अपना अपना उल्लू साधने का प्रयास करेंगी।

राहु का द्वादश में शनि तृतीयेश व चतुर्थेश संग होना समाज विरोधी कार्यों में बढ़ावा करेगा विशेष यौन अपराधों व समलैंगिकता के क्षेत्र में नए–नए कानून लाने का दबाव बनेगा अस्पतालों में इस प्रकार के केस पाए जाएंगे जनता में आक्रोश बढ़ेगा संभवतः किसी राज्य का सत्ता परिवर्तन भी हो सकता है कुछ नामचीन व जनता के प्रिय नेताओं का असली रूप भी उजागर होगा।

卐 卐 卐

92डी, पॉकेट डी–1, मयूर विहार दिल्ली
फोन – 9540715969

भारतीय गणितज्ञ वराहमिहिर

डॉ० हरिकृष्ण देवसर

भारतीय गणित और खगोल विज्ञान में वराहमिहिर एक सुप्रसिद्ध नाम है। वराहमिहिर का जन्म छठी शताब्दी ईसवी में हुआ था। इनके पिता का नाम आदित्यदास था और वे अवन्रि (उज्जयिनी) के निवासी थे। यों वराहमिहिर आर्यभट्ट के समकालीन थे किंतु वे आयु में आर्यभट्ट छोटे थे। वराहमिहिर मौलिक गणित ज्योतिषी तो न थे, किंतु उन्होंने छोटी–बड़ी कई पुस्तकें लिखी जिनका बाद के ज्योतिषियों पर गहरा प्रभाव पड़ा। फलित ज्योतिष की पुस्तकों पर वराहमिहिर के ग्रंथों का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि इससे पूर्व के लिखे ज्योतिष ग्रंथों का कोई महत्व नहीं रह गया। वराहमिहिर की कई पुस्तकें तो पिछले डेढ़ हजार वर्षों तक निरंतर ज्योतिषीयों के प्रयोग में आती रहीं।

सन् 550 ईस्वी के लगभग वराहमिहिर ने तीन महत्वपूर्ण पुस्तकों की रचना की, बृहद ज्जातक, बृहद संगीता, और पंच सिद्धांतिका। इन पुस्तकों में त्रिकोण मिति (ट्रीगनोमेटरी) के महत्वपूर्ण सूत्र दिए गए हैं, जो इस सत्य से परिचित कराते हैं कि वराहमिहिर को त्रिकोणमिति का व्यापक ज्ञान था। एक अन्य पुस्तक पंच सिद्धान्निका में वराहमिहिर ने अपने से पूर्व प्रचलित पांच सिद्धांतों का वर्णन किया है। यह सिद्धांत–पोलिश, रोमन, सूर्य तथा पितामह। वराहमिहिर ने पंच सिद्धांतिका में इन सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या की है। इनकी पुस्तकें लघु जातक, बृहज्जातक और बृहद संहिता में फलित ज्योतिष को प्रस्तुत किया गया है लेकिन इसी के साथ–साथ बृहद संहिता भारत के भूगोल, वनस्पति व जीव–जंतु सामाजिक–आर्थिक जीवन, स्थापत्य और चित्रकला, धर्म और राजतंत्र, शिक्षा और साहित्य, ऋतु विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र, विज्ञान का इतिहास एवं रीति रिवाजों से सम्बंधित सूचनाओं का भी अनुपम भंडार है। बृहद संहिता में वास्तु विद्या, भवन निर्माण कला, वायु मंडल की प्रकृति और औषधीय वृक्षों की भी

चर्चा है।

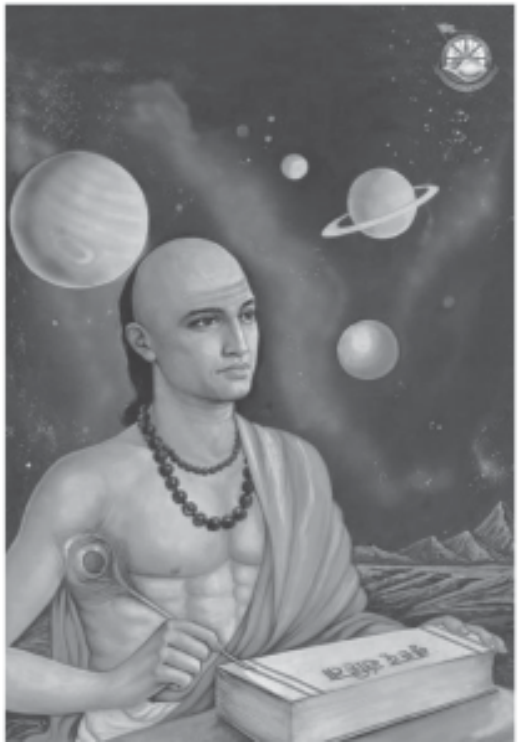

वराहमिहिर ने अपने बृहज्जातक ग्रंथ में एक श्लोक में अपने बारे में बताया है। उसके अनुसार उन्होंने कापिथक ग्राम के निवासी वराहमिहिर के पिता आदित्यदास से ज्ञान तथा सूर्य देवता से वरदान प्राप्त किया और प्राचीन मुनियों के ग्रंथों का अवलोकन करके अवन्नी प्रदेश में 'होरा' अर्थात जन्म कुंडली, विवाह, जातक, शकुन एवं यात्रा के लिये ग्रंथ की रचना की। वराहमिहिर की कार्य स्थली मुख्य रूप से उज्जैन रही है। जिसे प्राचीन काल में अवंतिका कहते थे। वराहमिहिर को उनके समय के अन्य ज्योतिषी और विद्वानों ने इसी कारण अवंतिकाचार्य कहा है। एक प्राचीन कवि ने लिखा है कि धनवंतरि, अमरसिंह, बैताल भट्ट, कालिदास और वराहमिहिर आदि नवरत्न राजा विक्रमादित्य के दरबार में थे। इसी आधार पर यह कहा गया है कि वराहमिहिर को किसी शक्तिशाली राजा का आशय प्राप्त था जो संभवतः हर्ष विक्रमादित्य रहे होंगे। जिनका शासन उज्जैन में छठी सदी ईसवी में था।

वराहमिहिर की कृतियों से पता चलता है कि उन्होंने भारत के लगभग सभी भागों की यात्रा की थी। और अपने उन्हीं अनुभवों के आधार पर बृहद संहिता की रचना की थी। भारत के विभिन्न छोटे–छोटे प्रदेशों के बारे में जानकारी भी दी थी। यह भी माना जाता है कि वराहमिहिर ने ईरान और सिकंदरिया की भी यात्राएं की थीं।

गणित एवं ज्योतिष की उनकी पुस्तकों से स्पष्ट होता है कि उन्हें यूनानी ज्योतिष (गणित व फलित) का अच्छा ज्ञान था। वराहमिहिर के समय तक भारत में यूनानी ज्योतिष का काफी प्रचार–प्रसार हुआ था। स्वयं वराह मिहिर ने यूनानी ज्योतिषीयों की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि यूनानी लोग

मलेच्छ हैं किंतु वे लोग ज्योतिष शास्त्र में पारंगत है। वे अपने ज्योतिष शास्त्र सम्बंधी ज्ञान के लिये ऋषि तुल्य पूज्य है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार ज्योतिष का ज्ञाता ब्राह्मण भी पूजनीय होता है।

वराहमिहिर के पंच सिद्धांतिका ग्रंथ में ज्योतिष के पांच सिद्धांतों की बड़ी विद्ववता पूर्ण व्याख्या की है एक विद्वान के अनुसार 'पंच सिद्धांतिका उन लोगों के लिये अमूल्य स्रोत ग्रंथ बन जाता है जो हिंदू ज्योतिष शास्त्र का ऐतिहासिक अध्ययन करना चाहते हैं।' विदेशी विद्वानों ने पंच सिद्धांतिका के विषय में लिखा है जो ईसा की छठी शताब्दी में लिखा गया, वराहमिहिर का पंचसिद्धांतिका ग्रंथ भारतीय ज्योतिष के इतिहास को और पूर्ववर्ती बेबीलोनिया तथा यूनान के ज्योतिष के साथ इसके सम्बंधों को जानने के लिये एक महत्वपूर्ण स्रोत है। वराहमिहिर ने अपने इस ग्रंथ में सूर्य को सबसे अधिक स्पष्ट बताया है।

वराहमिहिर के ज्योतिष ग्रंथों में सर्वाधिक प्रचार अरब और ईरान आदि मध्य एशिया के देशों में अलबरूनी ने किया। अलबरूनी ने ज्योतिष के कई गंथों का अरबी में अनुवाद किया। जिसमें वराहमिहिर की वृहदसंहिता और लघु जातक पुस्तकें भी शामिल है। अलबरूनी और वराहमिहिर की भेंट हुई होगी। यह इस बात से भी स्पष्ट है कि वराह के प्रति अलबरूनी के मन में बहुत सम्मान था। वराहमिहिर ने अपने ज्योतिष ग्रंथों के द्वारा भारत में नक्षत्र विज्ञान के नए युग का सूत्रपात किया। उनका वैज्ञानिक गणित ज्योतिष और फलित ज्योतिष का सम्मिश्रण अद्भुत है। अलबरूनी ने लिखा है कि 'वैज्ञानिक गणित ज्योतिष और फलित ज्योतिष दोनों का परिचय पाकर वराहमिहिर के गणितीय और ज्योतिषीय ज्ञान के बारे में जितना समझा हूँ उसे तुलनात्मक रूप में यही कह सकता हूँ कि वह मुक्ता–सीप और खजूर या मुक्ता और गोबर या बहुमूल्य मणियों और सामान्य कंकड़ों का अनोखा मिश्रण है।' वराहमिहिर के ज्योतिष सम्बंधी ग्रंथ आज भी भविष्य वक्ता ज्योतिषीयों के लिये एक उल्लेखनीय स्रोत है।

卐 卐 卐

MkO gfjÑ".k nslje

– साभार नेशनल दुनिया –

चुनाव 2014 का महासंग्राम

स्वामी आनन्द शिव मेहता

16 मई 2014, तिथि ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया दिन शुक्रवार, ज्येष्ठा नक्षत्र, प्रथम चरण में चुनाव के परिणाम घोषित होंगे, उस समय शनि दंड पतदह योग में होने के कारण छत्र भंग एवं राजा नाश योग बनता है। साथ ही उस समय शनि वक्री होकर राहु के साथ होने से जिन राजनेताओं के नाम अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्दा पुर्नवसु, पुष्य, अश्लेषा के हैं, उनके सांसद पद गवांने की पूर्ण संभावना है यदि वह वर्तमान में सांसद पद पर है तो साथ ही मंगल के वक्री होने से इन नक्षत्र नामों वाले व्यक्तियों के मौजूदा पद पर होने के बाद टिकट कट जायेंगे चुनाव हारने वालों में यह लोग प्रमुख होंगे सूर्य कृतिका नक्षत्र में बुध के साथ होने से कृतिका नक्षत्र का राज्यभंग नष्ट हो जाता है यदि इन नक्षत्रों वाले उम्मीदवार शांति विधान विशेष करें तब इनके हारने (ज्यादा मतों) की संभावना कम होकर विजयश्री भी प्राप्त कर सकते हैं। शांति विधान कराने वालों से विनम्र निवेदन है कि वह बगुलामुखी एवं विपरित प्रत्यांगिरी प्रयोग न करावें यह करवाने से उनका (स्वयं) का भी नुकसान संभव है कुछ कम ज्ञानी विद्वान (पंडित) केवल और केवल बगुलामुखी प्रयोग का सुझाव देते हैं (मेरे अनुभव से) वह सही भी है।

साथ ही परिणाम ज्येष्ठा नक्षत्र में होने से सिंहासन चक्र में ज्येष्ठा नक्षत्र आधार पट में होने से इस समय नियुक्त होने वाला प्रधानमंत्री (राजा) दूसरों के आधीन रहकर कार्य करने वाला होगा वैसे यह गणना शपथ नक्षत्र से होती है जो कि सही भी होती है किन्तु परिणाम ही विशेष अधिकार देने का कारण होने से परिणाम नक्षत्र का फल यहाँ लिखा है (यानि मिलीजुली सर्मथन की सरकार)।

यहाँ पर भी स्पष्ट है कि शनि सिंहासन चक्र में वक्री है, जो कि ओजस्वी एवं तेजस्वी अत्याधिक बलवान होने पर एवं अत्याधिक सुरक्षा के बावजूद भी किसी बड़े नेता की मृत्यु के संकेत दे रहा है, (भगवान करे मेरा यह लिखा गलत साबित हो)। इस समय जो भी पद पर बैठे वह अपने आचार्यों से शांति विधान अवश्य सम्पन्न करावे। इस लोकसभा के चयनित उम्मीदवार कार्यकाल में अनेकों राजनेता असमय मृत्यु को प्राप्त होंगे, मगर उस दिन चन्द्रमा अनुराधा–ज्येष्ठा में रहने से इन नक्षत्रों वाले राजनेता पूर्णरूप सुरक्षित रहेंगे।

पूर्व में विधानसभा चुनाव में शपथ चक्र से स्पष्ट हुआ श्री केजरीवाल द्वारा पद त्याग एवं मध्यप्रदेश में ओलावृष्टि द्वारा जनता का त्राही त्राही, राजस्थान के बड़े नेता पुत्र की दुर्घटना का संकेत किन्तु अभी यह घटा नहीं है।

उत्तर प्रदेश सरकार, मुलायम सिंह जी मायावती जी को चुनाव में सफलता हेतु प्रयास विशेष रूप से करना चाहिये यहाँ ही सर्वाधिक सीटों के हारने मौजूदा सांसदों की ज्यादा संभावना है। यह लेख 9 मार्च 2014 को लिखा इस समय से इसे प्रभावी जाने यह गणना की विशेष पद्धति से है न कि साधारण प्रचलित आम ज्योतिष कुंडली की गणना के आधार का सुनिश्चित करता है।

यह लिखना किसी को डराना नहीं वरना रक्षा–सुरक्षा पर ध्यान विशेष देकर आने वाले संकट से समय पूर्व सुरक्षा करना है, उत्तर प्रदेश, दिल्ली में बम विस्फोट या दंगा व भूकंप जातीय हिंसा के क्षीण योग बनते हैं सुरक्षा पर ध्यान दें।

सर्वाधिक सीटों पर बदलाव दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, पंजाब, उत्तराखण्ड, राजस्थान व दिल्ली से लगे सीमावर्ती क्षेत्र में ज्यादा होगा।

8 मार्च 2014 को घोषित 194 नाम जो कांग्रेस ने घोषित किए हैं यह उम्मीदवार ज्यादा संख्या में विजयी रहेंगे, ठीक वैसे ही भाजपा द्वारा घोषित 52 उम्मीदवारों के भी विजयश्री की संभावना ज्यादा है। पूर्वोत्तर में कांग्रेस को ज्यादा नुकसान होने का ग्रह योग संकेत देते हैं ज्यादा प्रयास वहाँ पार्टी को करना चाहिये। सर्वाधिक लाभ भाजपा को ऊपर

लिखे प्रदेशों में होना संभावित है। यहाँ अत्याधिक प्रयास से सीटों की संख्या बढ़ाई जा सकती है यह बदलाव सरकार में प्रभावी भूमिका प्रदान करेगा।

यह लोकसभा चुनाव अनेकों प्रभावी राजनेताओं को भारतीय राजनीति पटल से ओझल कर देगा, श्री मोदी एवं श्री राहुल गाँधी के लिये एक नए युग की शुरूआत होगी। यह सर्वमान्य सत्य होगा कि भाजपा देश के सबसे बड़े दल के रूप में उभरकर सामने आए कांग्रेस का पूरी तरह सफाया हो ऐसा भी प्रतीत नहीं होता है, सरकार का असंमजस नतीजों के पश्चात कुछ दिनों तक चलेगा प्रचलित कुंडलियों के आधार पर एवं समय नक्षत्र से यह लिखा नेताओं के जन्म समय में बदलाव होने से इसमें परिवर्तन भी संभव है सभी की अनेकों कुंडलियां बाजार में चलन में हैं।

16/05/2014 को नतीजों में दोपहर 12:01 मिनट से 02:18 मिनट तक सिंह लग्न रहेगा इस समय श्री मुलायम सिंह जी, मायावती जी एवं ममता बनर्जी स्वयं एवं पाटी की सीटें लीड (बढ़त) करेगी जो कि निर्णायक होगी अन्ततः इस समय की बढ़त वाली सीटों पर यह विजय श्री का वरण करेंगे इस समय मनमाहेन सिंह जी की पार्टी के कुछ सांसद लीड (बढ़त) करेंगे।

इस समय पूरा माहौल बदल जायेगा सुबह के समय आगे वाली सीटें पीछे होकर इस समय तक भाजपा एकतरफा बढ़त बनाती जायेगी उसके सहयोगी दलों की भी सीटें निर्णायक भूमिका में होगी।

दोपहर पश्चात कांग्रेस का ग्राफ जो सुबह स्पष्ट था वह कम होता जायेगा इनके सहयोगी दलों की भी स्थिति इस समय निर्णायक होगी शाम तक चारों ओर मोदी ही मोदी राहुल ही राहुल के नारे गूंजने लगेंगे यद्यपि कांग्रेस के हाथों से सत्ता छीन जायेगी परन्तु वह इस समय सम्मान जनक स्थिति में आ जायेगी राहुल जी के नेतृत्व क्षमता इसके बाद और परिस्कृत होगी वह एक समय पुनः किंग मेकर की भूमिका में आ जायेंगे। यह समय मोदी जी का ही है इस समय उनके ग्रह अत्यंत बलवान चल रहे हैं, जो उन्हें अपने प्रतिद्विदियों से हर कदम में आगे करते चले जा रहे हैं पूरा देश ही क्या उनकी यह क्षमता सम्पूर्ण धरा मण्डल को वशीभूत कर देगी किन्तु फिर भी स्पष्ट बहुमत मिलना अत्यंत कठिन है।

भाजपा के 2009 के चुनाव में सीटें कम होने का महत्वपूर्ण कारण बरसों से चले आ रहे उम्मीदवारों का बार–बार चुनाव में खड़ा करना रहा था। इसका यदि बदलाव नहीं किया गया तब पुनः सीटें कम होने का मुख्य कारण बनेगा जो भी मोदी के प्रधानमंत्री बनने में सबसे बड़ी बाधा होगा।

श्री राहुल के लग्न से इस समय शनि छठे भाव में भ्रमण एवं चंद्र से द्वादश है जो कि उनके विरोधकताओं (पार्टी एवं बाहर) को दूर (नष्ट) कर देगा। सत्ता एवं सहयोगियों में बिखराव होगा।

श्री मोदी के शनि लग्न में एवं चंद्र से द्वादश होकर केन्द्र में है यह जनता एवं पार्टी के विशेष सहयोग व उनके हितैषी बनकर पार्टी को सत्ता की ओर बढ़ा रही है।

श्री केजरीवाल की पार्टी इस समय बहुत पिछड़ेगी 'आप' पाटी अनेकों सीटों पर वृद्ध नेताओं के हार का कारण बनेगी कई स्थापित राजनेताओं की छवि आप पार्टी के कारण धूमिल होगी साथ ही कईयों के अप्रत्याशित रूप से विजयी होने का कारण भी 'आप' पार्टी होगी यद्यपि बहुत ज्यादा सफलता के योग नहीं किन्तु देश की वर्तमान राजनीति को बदलाव की स्थिति में यह लाकर खड़ा कर देंगे।

lÙkk 'k=k dsgkFk tkusdk le; ;g ?kkš.kk dk le; ;g ?kkš.kk dh xb ;g lÙkk foj kšh dksfeysxh &

चुनाव घोषणा समय कुंडली
05.03.2014, 10:10 दिल्ली

चुनाव परिणाम घोषित कुंडली
16.05.2014, 05:00 दिल्ली

तीनों मुख्य दावेदारों की उस दिन की कुंडली बताने का कारण ग्रह का स्पष्टीकरण है यहाँ भावेश शनि शत्रु भाव में शत्रुओं का अन्त करता है साथ ही सत्ता एवं भाग्य शत्रु के हाथों में जाने का संकेत देता है। सत्ता से दूर जाने पर शत्रु बचेंगे कहाँ शत्रु तो सत्ता के कारण हैं। यहाँ महिला नेत्रियों का सहयोग केजरीवाल एवं श्री गाँधी को मिलता दिख रहा है यह ही इनके दुःख का कारण होगी ममता बनर्जी यहाँ कुछ असमंजस डाल सकती है मायावती जी एवं मुलायम सिंह जी श्री मोदी का विरोध करेंगे यह स्थिति परिणाम दिवस की होगी सभी नेतागण अपनी ढपली अपना राग अलापेंगे।

यहाँ पर भी इस समय देश की सत्ता महिला एवं धनपति के हाथों जाने का योग बनता है, भारत का भविष्य अत्यंत तेजस्वी है मगर अराजकता का बोलबाला होगा, शासन का रवैया आक्रामकता का हो सकता है।

16/05/2014, लग्न से गोचर प्रभाव

श्री नरेन्द्र मोदी

श्री राहुल गाँधी/अरविन्द केजरीवाल

मनमोहन सिंह जी, 26.09.1932, पश्चिमी पंजाब

परिणाम के समय मनमोहन सिंह जी की कुंडली

स्वतंत्र भारत का जन्मांग

भारत का मीडिया जो दिखा रहा है उससे लगता है कि भारत की जनता श्री मोदी को प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहती है किन्तु उनके प्रतिद्वंदी किसी भी कीमत पर प्रधानमंत्री बनने देना नहीं चाहते हैं श्री मोदी की कुंडली का शत्रुहंता योग तमाम विरोधों के बाद भी उन्हें सफलता प्रदान करेगा इस समय यह स्पष्ट है कि सरकार भाजपा संगठन की ही बनेगी।

卐 卐 卐

47 माणक चौक राजवाड़ा इन्दौर (म.प्र.)
फोन – 09926077010

शीघ्र विवाह एवं
सुखद दाम्पत्य जीवन
हेतु धारण करें

गौरी शंकर रुद्राक्ष

विवाह में अड़चन के कई कारण होते हैं। ग्रहजनित कारण, शत्रुजनित कारण एवं ऊपरी बाधा से संबंधित कारण विवाह में विलम्बकारी होते हैं। इस कारण विवाह की आयु निकल जाती है और यह एक समस्या बनकर खडी हो जाती है। इन सभी समस्याओं से मुक्ति के लिए गौरीशंकर रुद्राक्ष विशेष प्रभावशाली है।

गौरी-शंकर रुद्राक्ष (नेपाल)
मूल्य 3500 रूपये
गौरी-शंकर रुद्राक्ष (इंडोनेशिया)
मूल्य 2400 रूपये
घर बैठे प्राप्त करने
के लिए फोन करें

JYOTISH GURU ASTRO POINT
F-8A, Vijay Block, Gali No.3,
Laxmi Nagar, Delhi-92
e mail : jyotishgurumagazine@gmail.com,
jyotishgurumagazine@yahoo.com
Ph. : 011-22435495,
(M) 09873295490

श्री दुर्गाष्टमी पूजन

ekgkRE; % अध्यात्म क्षेत्र में मुहूर्त के रूप में नवरात्र पर्व को विशेष मान्यता प्राप्त है। जैसे आत्मिक प्रगति के लिये कभी भी किसी मुहूर्त की प्रतीक्षा नहीं की जाती, ठीक वैसे ही नवरात्र में प्रारंभ किये गये प्रयास, शुभ कार्य में संकल्पबल के सहारे देवी दुर्गा की कृपा से सफल होते हैं। नवरात्र के नौ दिनों में शरीर व मस्तिष्क में विशिष्ट रसस्रावों की बहुलता के कारण उल्लास, उमंगें जन्म लेती है। शिवपुराण में नवरात्र के माहात्म्य के सम्बंध में लिखा है –

uojk=korL;kL; iHkko oDreh'oj%A
prjkL;ksu ipkL;ksu "kMkL;ksu dksijAA

नवरात्र के व्रत का ऐसा अटल एवं अद्भुत माहात्म्य होता है, जिसे ब्रह्मा, शिव, स्वामी कार्तिकेय तथा अन्य कोई देव भी वर्णन करने में असमर्थ हैं। इसी पुराण के श्लोक 75 से 77 में यह भी लिखा है कि इस नवरात्र के व्रत को करके पहले राजा विरथ के पुत्र सुरथ ने अपने अपहृत राज्य की प्राप्ति की थी। इस महाव्रत के प्रभाव से महामनीषी ध्रुव सन्धि के पुत्र अयोध्या के अधीश्वर राजा सुदर्शन ने छिने हुये राज्य को पुनः प्राप्त कर लिया था। इसी व्रत को करके समाधि नामक वैश्य महेश्वरी भगवती की कृपा से उसकी आराधना के द्वारा संसार के बंधनों से छूट कर मुक्त हो गया था।

देवी पुराण में कहा गया है कि नवरात्रि के व्रत महासिद्धि देने वाले, सभी शत्रुओं का दमन करने वाले, सब कार्यों को पूरा करने वाले, यश, धन–धान्य, राज्य, पुत्र, सम्पत्ति सबकी प्राप्ति कराते हैं।

भगवान् श्रीराम ने रावण पर विजय पाने के लिये नवरात्र में शक्ति की पूजा की थी। इस व्रत को भगवान् शिव ने भी किया था। नवरात्र के दिन शक्ति पूजन, शक्ति संवर्द्धन और शक्ति संचय के होते हैं। इसीलिये इस दौरान शक्ति की आराधना की जाती है। नवरात्र में महामाया दुर्गा पूजन के साथ–साथ कन्या पूजन का भी माहात्म्य है। दुर्गा सप्तशती में दुर्गा माहात्म्य के विषय में कहा गया है कि शुम्भ, निशुम्भ तथा की थी। दुर्गा देवी ने प्रसन्न होकर चैत्र तथा अश्विन शुक्ल प्रतिपदा से दशमी पर्यन्त देवी पूजन व व्रत का विधान बताया, तभी से नवरात्र पर्व मनाने की परंपरा प्रारंभ हुई।

itu fof/k&fo/kku %& नवरात्र का पर्व वर्ष में दो बार मनाने का विधान है। पहला चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक मनाये जाने वाले नवरात्र को वासंतिक और आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक मनाए जाने वाले दूसरे नवरात्र को शारदीय नवरात्र कहा जाता है। शास्त्रों के अनुसार शारदीय नवरात्र का ज्यादा महत्व बताया गया है। नवरात्र के नौ दिनों में देवी भगवती के नौ रूप शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री की पूजा–आराधना करने का विधान है।

नवरात्र के पहले दिन घट स्थापना कर देवी प्रतिमा स्थापित की जाती है। प्रतिपदा के दिन प्रातःकाल नित्य कर्म, स्नानादि से निवृत्त होकर नवरात्र व्रत का संकल्प करें तथा गणपति पूजन, पुण्याहवाचन कर मातृकाओं का विधिवत् पूजन करें। भूमि पर एक चौकी बनाकर पूर्व–पश्चिम दिशा की ओर मिट्टी के एक कलश (घट) में पानी भरकर हरे पत्ते डालें और चंदन लगाकर सर्व औषधि संस्कार करें। आम्र, दूर्वा, पंचपल्लव, पंच रत्न घट में डालकर

उस पर सूत या वस्त्र लपेटें। उसके बाद घट के मुख पर गेहूँ/जौ से भरा पूर्ण पात्र रखकर वरूण का पूजन करें। भगवती का आह्वान करें। मिट्टी के दो बड़े कटोरों में काली मिट्टी भरकर उसमें गेहूँ के दाने बोकर ज्वार उगाये जाते हैं। इन्हें टोकरी से ढककर और हल्दी के पानी से सींचकर पीला रंग दिया जाता है। व्रती को घट के समीप नौ दिन तक अखंड दीपक जलाना अनिवार्य होता है। दशमी पर्यंत घट के सामने नित्य शतचंडी और दुर्गा सप्तशती का पाठ और श्रीमद्देवी भागवत का श्रवण करना चाहिये। अंतिम दिन हवन करके कन्या पूजन व भोजन का आयोजन करना चाहिये, फिर व्रत का समापन करें। दशमी के दिन प्रतिमा, घट और ज्वारों का विसर्जन करें। व्रत के दौरान व्रती को संयमित जीवन व्यतीत करना चाहिये। एक समय भोजन करते हुये नौ दिन बिताने चाहिये।

कन्या पूजन का विधान यूं है कि पूजक को ज्ञान प्राप्ति के लिये किसी ब्राह्मण कन्या का, बल प्राप्ति के लिये क्षत्रिय कन्या का, धन प्राप्ति के लिये वैश्य कन्या और शत्रु विजय, मारण आदि सिद्धि के लिये चांडाल कन्या का पूजन करना चाहिये। इस प्रकार नवरात्र में कन्या पूजन का वैदिक विधान जहां एक प्राकृतिक धर्मानुष्ठान है, वहीं मानव संगठन और चरित्रय–संरक्षण का भी एक अनुपम अभियान है। पूजन के लिये 2 वर्ष से 10 वर्ष की कन्या चुनने का विधान है। दो वर्ष की कन्या कुमारी, तीन वर्ष की त्रिमूर्ति, चार वर्ष की कल्याणी, पांच वर्ष की रोहिणी, छः वर्ष की काली, सात वर्ष की चंडिका, आठ वर्ष की शांभवी तथा नौ वर्ष की दुर्गा और दस वर्ष की सुभद्रा के नाम से पूजी जानी चाहिये। ग्यारह वर्ष से ऊपर और एक वर्ष से कम की कन्या का पूजन विधानानुसार वर्जित किया गया है। देवी भगवती होम, जप, दान से इतनी प्रसन्न नहीं होतीं, जितनी कन्या पूजन से होती है। उल्लेखनीय है कि समस्त नारी महामाया की प्रतिकृति हैं। कन्याएं निर्विकार होने के कारण दुर्गा रूप में पूजने योग्य हैं।

तंत्र ग्रंथों के अनुसार कन्या पूजन से भगवती प्रसन्न होती हैं। उनको भोजन कराने से देवी आनंदित होती है और जहाँ कुमारी कन्या का पूजन होता है, वहाँ भगवती का निवास होता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि जो कन्या रूपी देवी को पूजन के उपरांत बालप्रिय फल, नैवेद्य, भोजनादि से तृप्त करता है, उसने जैसे त्रैलोक्य को तृप्त कर लिया। कुमारी कन्या पूजन से मनुष्य को लक्ष्मी, सम्मान, पृथ्वी, विद्या, महान तेज प्राप्त होता है और रोग, दुष्ट ग्रह, भय, शत्रु विघ्न शांत होकर दूर हो जाते हैं। यहाँ तक कि बुरे स्वप्न एवं दुःखदायक समय भी नहीं आता।

ikjkf.kd dFkk %& इस कथा का श्रीमार्कण्डेय पुराण में इस प्रकार वर्णन आया है –

कहा जाता है कि एक बार दैत्य गुरू शुक्राचार्य के कहने पर दैत्यों ने घोर तपस्या कर ब्रह्माजी को प्रसन्न किया और वर मांगा कि उन्हें कोई पुरूष, जानवर और शत्रु न मार सकें। ब्रह्माजी द्वारा वरदान मिलते ही असुर अत्याचार करने लगे। महिषासुर नामक दैत्य ने देवताओं को अत्याधि पीड़ित, आतंकित करना शुरू कर दिया। घबराकर देवराज इंद्र के नेतृत्व में देवताओं ने ब्रह्मा के पास जाकर अपनी रक्षा की गुहार की। तब देवताओं की रक्षा के लिये ब्रह्मा ने वरदान का भेद बताते हुये कहा कि असुरों का सर्वनाश कोई स्त्री शक्ति ही कर सकती है। ब्रह्माजी की सलाह से देवताओं ने अपनी–अपनी शक्तियां प्रदान कर उनके सम्मिलित रूप से एक अदम्य शक्ति रूपी देवी का सृजन किया। उसने महिषासुर के साथ नौ दिन तक भयानक युद्ध किया और दवसें दिन उसे मारने में सफल हुई। जब तक देवी महिषासुर से युद्ध करती रही, तब तक सभी देवी देवता और धरती के स्त्री–पुरूष उस शक्ति स्वरूपा, सिंहवाहिनी की पूजा–अर्चना करते रहे। महिषासुर के वध से प्रसन्न होकर कन्याओं को खिला–पिलाकर, दान–दक्षिणा देने की परंपरा तभी से चल पड़ी, जिसका निर्वाह आज भी नवरात्रों में किया जाता है। चूंकि देवी ने रौद्र रूप धारण कर असुरों का संहार किया था, इसीलिये शारदीय नवरात्र को 'शक्ति पर्व' के रूप में मनाया जाता है।

卐 卐 卐

–हिन्दुओं के व्रत, पर्व और तीज–त्यौहार–

बेटा बेटी में फर्क क्यों?

अगर बेटा वारिस है, तो बेटी पारस है। अगर बेटा वंश है, तो बेटी अंश है।।
अगर बेटा आन है, तो बेटी गुमान है। अगर बेटा संस्कार है, तो बेटी संस्कृति है।।
अगर बेटा आग है, तो बेटी बाग है। अगर बेटा दवा है, तो बेटी दुआ है।।
अगर बेटा भाग्य है, तो बेटी विधाता है।।
अगर बेटा शब्द है, तो बेटी अर्थ है। अगर बेटा गीत है, तो बेटी संगीत है।।
जब इतनी कीमती हैं बेटियाँ। तो फिर क्यों खटकती हैं मन को बेटियाँ।
जबकि सबको पता है, बेटों को भी जन्म देती हैं बेटियाँ।।

फलित ज्योतिष में प्रश्न कुंडली का योगदान

डॉ० पी.पी.एस. राणा

मित्रों अहमदाबाद, गुजरात से दिनाँक 24/08/2012 को समय 07:28 सायंकाल को एक फोन आया कि मेरी एक रूद्राक्ष को माला जो सोने से जड़ी हुई थी पूजा के स्थान से 13.08.2012 से गायब है।

कृपा करके यह बतायें कि माला मिलेगी कि नहीं? यदि मिलेगी तो कहाँ मिलेगी ?

उस लग्न जो प्रश्न कुंडली बनती हे वो इस प्रकार से है –

प्रश्न कुंडली

प्रश्न कुंडली कुंभ लग्न की बनती है। जिसमें गुरू केतु चतुर्थ भाव यानि वृषभ राशि में स्थित है। शुक्र पंचम भाव यानि मिथुन राशि में स्थित है। बुध छठे भाव यानि कर्क राशि में है। सूर्य अपनी ही राशि में सिंह में, सप्तम भाव में स्थित है। चंद्र, मंगल, शनि नवम भाव यानि तुला में स्थित है।

उपरोक्त प्रश्न कुंडली के अनुसार मैंने बताया कि आपकी रूद्राक्ष की माला चूहे ने उठाकर बिल में रख दी है। घर के सब बिलों में माला को ढूंढे।

मित्रों दिनाँक 26.8.2012 को उस स्त्री जातक का फोन आया कि माला बिल में रखी हुई थी और वह मिल गयी आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

मित्रों, रूद्राक्ष की माला चूहे ने उठाकर बिल में रखी है यह मैंने कैसे बताया, इसका ज्योतिष विश्लेषण इस प्रकार से है –

¼1½ प्रश्न कुंडली में प्रथम भाव प्रश्नकर्त्ता का होता है व सप्तम भाव चोर का होता है।

इस प्रश्न कुंडली में प्रथम भाव का स्वामी यानि लग्नेश शनि अपनी उच्च राशि तुला में भाग्य भाव में विराजमान है। अतः यह स्थिति प्रश्नकर्ता के भाग्य को मजबूत दिखाती है।

¼2½ धनेश व लाभेश होकर गुरू का चतुर्थ भाव यानि सुख भाव में बैठना भी शुभ स्थिति को दर्शा रहा है। अतः यह स्थिति दर्शाती है कि सामान अवश्य मिलेगा।

¼3½ सप्तम भाव चोर का भाव है। और सप्तमेश सूर्य अपने ही घर में विराजमान है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि चोर घर में ही है।

¼4½ प्रश्न कुंडली सिद्वांत के अनुसार जब भी सूर्य व चंद्र दोनों या इनमें से एक भी सप्तम भाव में स्थित होंगे तो चोरी के प्रश्न में चोर घर में होता है।

¼5½ लग्न सिद्धात के अनुसार इस कुंडली का लग्न ^dEHk* है। कुम्भ यानि घड़ा यानि कुँआ या ^fcy* यानि जमीन के अन्दर।

अतः लग्न से स्पष्ट होता है कि जो चोर है। वह कोई मनुष्य ना होकर, कोई जन्तु है जो बिल में रहता है। अतः चूहा ही ऐसा जन्तु है। जो बिल में रहता है। और चूहा ही सामान को इधर–उधर कर सकता है।

अतः उपरोक्त ज्योतिषीय विश्लेषण के आधार पर यह सिद्ध होता है कि 'रूद्राक्ष की माला' चूहे ने उठाकर बिल में रखी।

मित्रों क्या यह फलित ज्योतिष में प्रश्न कुंडली का योगदान नहीं है।

卐 卐 卐

पराशर ज्योतिष सेवा संस्थान
परम विहार, नालापानी चौक, सहस्त्रधारा रोड़ देहरादून उत्तराखण्ड
फोन – 09412018457

अपने शहर में निःशुल्क ज्योतिषीय समाधान शिविर के लिये सम्पर्क करें
फोन : 011–22435495, 9873295495, 9873295490

डॉ० लक्ष्मी नारायण शर्मा 'मयंक'

शनि का शुभाशुभ प्रभाव और आप

शनि पृथ्वी से सर्वाधिक दूरी वाला ग्रह है। पौराणिक मान्यताओं में शनि सूर्य पुत्र माने गये हैं। सूर्य से शनि ग्रह की औसत दूरी 143 करोड़ कि.मी. है। शनि भचक्र की 12 राशियों को प्रति सैकण्ड 9.6 कि.मी. की औसत गति से 30 वर्षों में भोग लेता है। अर्थात् 30 वर्ष में यह सूर्य का एक चक्कर लगाता है। महाभारत की भीष्म पर्व में शनि ग्रह का उल्लेख मिलता है। वाल्मीकि रामायण में भी शनि ग्रह का उल्लेख है। ईसा से छठवीं शताब्दी में प्रसिद्ध भारतीय ज्योतिषी वराहमिहिर ने अपने ग्रंथ वृहद् संहिता में शनि की शुभाशुभता के बारे में विस्तार से वर्णन किया है। राशियों में मकर और कुंभ इसके अधिपत्य की राशियाँ है। यह सम्पूर्ण मकर राशि तथा कुंभ में 21 अंश से 30 अंश तक स्वराशि का होता है और कुंभ में 1 अंश से 20 अंश तक त्रिकोण राशि का कहलाता है। तुला राशि में 20 अंश तक उच्च राशि में तथा मेष में 20 अंश तक नीच ााशि का रहता है। बुध, शुक्र, राहु इसके मित्र ग्रह है। सूर्य, चंद्रमा, मंगल इसके शत्रु ग्रह है। शनि गुरू तथा केतु से समभाव रखता है अर्थात् न मित्र न शत्रु। यह जन्म लग्न से तीसरे, छठे एवं एकादश भाव में श्रेष्ठ फलदायी कहा गया है। यह पुष्य, अनुराधा और उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का स्वामी है। यह मकर राशि पर अधिक बली रहता है। यह नंपुसक लिंग तथा तामस स्वभाव वाला ग्रह है। यह मृत्यु का कारक ग्रह है। इसे कालपुरूष का दुख माना गया है। यह मनुष्य के कर्म और उसके परिणाम का प्रतीक है। यह सूर्य के विपरीत स्वभाव का ग्रह है। सूर्य प्रकाश है तो शनि अंधकार सूर्य जीवन है तो शनि मृत्यु। शनि ग्रह मनुष्य के स्नायुविक मण्डल पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है। शनि जिस भाव में बैठता है उससे तीसरे, सातवें तथा दसवें भाव पर पूर्ण दृष्टि डालता है। शनि जहाँ बैठता है, वहाँ वृद्धि करता तथा जहाँ दृष्टि डालता है वहाँ हानि करता है। जब यह कुंडली में शुभफल कारक होता है तो व्यक्ति को धन ऐश्वर्य एवं राज सुख सम्पन्न बना देता है। यदि अशुभ स्थिति में हुआ तो सब प्रकार के कष्ट देता है।

¼1½ 'kfu dh 'kHkQynk;d fLFkfr;k %&

Hkos'kk;k fg 'ku'pjL; uj% ijxke Ñrkf/kdkj%A /khek'p nkukf/k Ñrkfr'kkyh ukuk dykdk'ky l;rk'pAA

rjx gsekEcj dtjk|% lEiérk ;kfr fouhrrk pA nsf}tkpkfHkjrksfo'kSkj ijkru LFkku dykC/k lk[;%AA

—जातका भरणम्

नगर या ग्राम का अधिकार, बुद्धि की वृद्धि दान में रूचि, नाना प्रकार की कलाओं में कुशलता, घोड़े, हाथी आदि सवारी, स्वर्ण, वस्त्रों का लाभ, विनय, देव, ब्राह्मणों में भक्ति तथा प्राचीन स्थानों से लाभ एवं सुख होता है।

egkjkt ilkns xt okgu Hk"k.keA jkt;kss idohr lsuk/kh'kkUegRl[keAA

y{eh dVk{k fprkfu jkT; yHkk djksfr pA xgsdY;k.k lifÙknfj i=kkfn yHkkÑrAA

—बृहत्पाराशर होरा शास्त्र

शनिराज योगकारी हो तो सेनापति से सुख हो, घर में खूब लक्ष्मी हो। कल्याण सम्पत्ति लाभ तथा स्त्री पुत्रादि लाभ होते हैं।

¼2½ 'kfu dh 'kHkk'kHkrk fofHké yXuks dslnHk es%&

♦ मेष लग्न के लिये कर्म भाव तथा लाभ भाव का स्वामी होकर नैसर्गिक रूप में अनिष्टकारी लेकिन धन के मामले में लाभदायक बनता है।

♦ वृषभ लग्न के लिये केन्द्र एवं त्रिकोण का स्वामी सम्पत्ति लाभदायक एवं राजयोगकारी बनता है।

♦ मिथुन लग्न के लिये भाग्येश के साथ अष्टमेश भी बनता है। मिश्रित फलदायी रहता है।

♦ कर्क लग्न के लिये सप्तमेश एवं अष्टमेश अतः स्वास्थ्य एवं आयु के संदर्भ में अरिष्टकारक।

♦ सिंह लग्न के लिये छठे एवं सातवें भाव का स्वामी प्रबल मारक रोग ऋणदायक तथा रोगकारी होता है।

♦ कन्या लग्न के लिये शनि पंचम एवं छठे भाव का स्वामी है अतः मिश्रित फलदायी है लेकिन यदि अष्टम भाव में अपनी नीच राशि में होने से धन खूब देता है।

◆ तुला लग्न के लिये शनि चतुर्थेश एवं पंचमेश है। प्रबल कारक है। सर्वविधि लाभ देता है।

◆ वृश्चिक लग्न के लिये तृतीयेश चतुर्थेश है अशुभ फल करने वाला होता है।

◆ धनु लग्न के लिये द्वितीयेश तृतीयेश है अशुभ फलकारी है यदि बलहीन हुआ तो धन के मामले में लाभ देगा।

◆ मकर लग्न के लिये लग्नेश एवं द्वितीयेश है अतः शुभ फलदायी है।

◆ कुंभ लग्न के लिये लग्नेश एवं द्वादशेश है लेकिन लग्नेश होने से शुभ फलदायक है।

◆ मीन लग्न के लिये लाभेश एवं व्ययेश अतः स्वास्थ्य के मामले में अशुभतादायक तथा धन के मामले में शुभतादायक रहता है। शनि की एक–विशेषता है कि यह क्रमशः दो राशियों का स्वामी है। अन्य कोई भी ग्रह क्रम से दो राशियों का स्वामी नहीं है।

¼3½ 'kfu vkj ip egki:"k ;ksx %&

'शश' नामक पंच महापुरूष योग शनि द्वारा बनता है जब यह जन्म लग्न में अपनी स्वराशि, मूल त्रिकोण राशि या उच्च राशि में है। यह योग एक राजयोग है। यह योग उन्हीं लग्नों में बनेगा जिनमें शनि राशि केन्द्र में आये अतः मिथुन, कन्या, धनु एवं मीन राशि की लग्नों यह योग नहीं बनता है। शश योग में जन्म लेने वाला जातक दीर्घ देह वाला किंचित सांवले रंगवाला, बड़ी–बड़ी आँखें तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह योग व्यक्ति को राजनीति में उच्च स्तरीय नेता बना देता है। व्यक्ति जिस किसी भी क्षेत्र में हो सर्वाधिक प्रगति करता है। यह योग श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री एच.डी. देवगौड़ा, श्रीमती वंसुधरा राजे सिंधिया, श्री कांशीराम, श्री एम.के. करूणानिधि, श्री लियोनेद ब्रेजनेव (भूतपूर्व सोवियत राष्ट्रपति) जिमी कार्टर (अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति) श्रीमती माग्रेट थैचर (भूतपूर्व ब्रितानी प्रधानमंत्री) आदि कई महान हस्तियों की कुंडली में विद्यमान रहा है।

¼4½ 'kfu dh l[k] ykHk ,o ixfrnk;d fLFkfr;k %&

◆ यदि कुंडली में शनि और बुध एक साथ हो तो जातक अन्वेषक बनता है।

◆ शनि चतुर्थेश होकर बलवान हो तो जमीन जायदाद का पूर्ण सुख देता है।

◆ शनि लग्नेश या अष्टमेश होकर बलवान हो तो जातक लम्बी उम्र पाता है।

◆ धनु, तुला तथा मीन लग्न में शनि लग्न में हो तो व्यक्ति को धनवान बनाता है।

◆ जन्म लग्न या वर्ष लग्न वृषभ हो तथा शनि शुक्र का योग हो तो लाभदायक परिणाम प्राप्त होते है।

◆ शुक्र शनि में मित्रता है अतः शनि वृष एवं तुला लग्न में शुभफल करता है।

◆ वृष लग्न में शनि नवम या दशम भाव में हो तो राज योग देगा।

◆ शनि छठे, आठवें एवं बारहवें भाव का कारक ग्रह है। यदि जन्म कुंडली में इनमें से किसी भी भाव में हो तो लाभदायक रहेगा।

¼5½ 'kfu dh vfu"Vdkjh fLFkfr;k %&

◆ शनि राहु की युति अचानक घटनायें देती है। धन हानि या धन प्राप्ति अचानक होती है।

◆ शनि गुरू योग जन्मांग में होने पर धन का अभाव/पुत्र संतान का अभाव देता है।

◆ शनि मंगल की युति के भी परिणाम अच्छे नहीं मिलते हैं। यह योग प्रत्येक कार्य में बाधायें देने वाला रहता है।

◆ शनि चंद्र योग जलोदर रोग का कारण बनता है। शनि प्रथकता जन्य प्रभाव वाला ग्रह है जिस भावेश के साथ या जिस सम्बंधी के कारक ग्रह के साथ जुड़ता है उसी से सम्बंधित सुख को बिगाड़ता है।

◆ शनि की दृष्टि यदि द्वितीय भाव के स्वामी पर या भाव पर, पंचम भाव, भावेश पर या बुध पर हो तो शिक्षा में कमी रहती है, जातक अपनी शिक्षा का उपयोग नहीं कर पाता है।

◆ शनि और सूर्य युति को ठीक नहीं माना गया है। पिता पुत्र में मतभेद तथा अलगाव की प्रवृत्ति देता है। अष्टम भाव में यह युति दरिद्रता देती है।

◆ यदि शनि ग्यारहवें भाव में हो तो व्यक्ति को सन्निपात तथा स्नायु से सम्बंधित हानि करता है और अंत में व्यक्ति की मृत्यु इन्हीं रोगों से होती है।

◆ पंचमेश शनि हो तथा कुंडली में बल युक्त हो तो कन्या संतान की अधिकता होती है।

◆ लग्न में शनि, सप्तमस्थ शनि, शुक्र के साथ शनि युति या दृष्टि प्रभाव डाले तो दाम्पत्य सुख को बिगाड़ता है। गुरू उसके प्रभाव में हो तो लड़कियों के विवाह में बाधा एवं पति सुख में बाधा या कारण बनता है।

◆ शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा या शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा प्रायः अशुभ परिणाम देती है। इसी प्रकार राहु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा या शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा अशुभ परिणाम लाती है।

◆ जन्म कुंडली में जिस राशि में सूर्य है उससे सप्तम राशि में जब शनि चलित में आता है तो रोग देता है।

◆ यदि किसी का जन्म मंगल की महादशा का हो तो चौथी महादशा शनि की होगी। यह महादशा जातक को सर्वाधिक कष्टदायक सिद्ध होगी। इस प्रकार अनेकानेक शुभाशुभ स्थितियाँ है जिन्हें छोटे से लेख में पाना संभव नहीं है।

卐 卐 卐

धात्री एस्टोलॉजीकल ब्यूरो
श्री जगदम्बा कालोनी, ठाकुर बाबा रोड,
डबरा – 475110, ग्वालियर
फोन :– 09977522168

सन्तान प्राप्ति के विविध योग

आचार्या रश्मि चौधरी

सन्तान प्राप्ति गृहस्थ जीवन का पूर्ण सुख माना जाता है। हमारे शास्त्रों एवं पुराणों में भी मनुष्य जीवन के विविध सुखों यथा – निरोगी काया, माया, सुलक्षण पत्नी इत्यादि में से सन्तान प्राप्ति सुख प्रमुख एवं अति उत्तम माना गया है और हो भी क्यों न ?..... क्योंकि सन्तान से माता–पिता की बहुत सी आशाएं और आकांक्षाएं जुड़ी होती है। जैसे की वंश वृद्धि, ऐश्वर्य प्राप्ति, बुढ़ापे की लाठी इत्यादि न जानें – क्या–क्या। इसीलिए विवाह के उपरांत प्रत्येक व्यक्ति उत्तम सन्तान प्राप्त करना चाहता है। किन्तु यह सभी सुख उसे ही प्राप्त होते हैं जिन पर ईश्वर की असीम कृपा होती है। और कुंडली में सन्तान प्राप्ति के उत्तम योग होते हैं। ये योग निम्नलिखित है।

सन्तान पक्ष का ज्ञान प्राप्त करने के लिये लग्न तथा चन्द्र कुंडली के पंचम भाव को देखना चाहिये। इस भाव में विभिन्न ग्रहों की स्थिति, दृष्टि, युति एवं ग्रहों के बलाबल के अनुसार ही सन्तान प्राप्त होती है।

ज्योतिष शास्त्र में पंचम भाव के अतिरिक्त नवम भाव के अतिरिक्त नवम भाव को सन्तान का वैकल्पिक भाव माना गया है। क्यों कि यह पंचम से पंचम है। सन्तान के सम्बंध में और अधिक ज्ञान सप्तमांश वर्ग कुंडली के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है अतः सन्तान अथवा सन्तान प्राप्ति सम्बंधी कोई भी फलादेश करते समय लग्न तथा चन्द्रमा, पंचम भाव, पंचमेश, लग्न भाव, नवमेश, लग्न, लग्नेश तथा सप्तमांश कुंडली पर भी पूर्ण ध्यान देना चाहिये।

^Qynhfidk* ग्रन्थ के अनुसार लग्न या चंद्रमा से पंचमेश या गुरू यदि केन्द्र, त्रिकोण या धनभाव में हो, तथा अस्त, शत्रु, क्षेत्री और नीच गत न हो अथवा पंचम भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि या शुभ योग बनता हो तो उत्तम संतान की प्राप्ति होती है।

पंचम भाव पंचमाधिपति और गुरू के शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट अथवा युत होने से सन्तान योग बनता है।

बलवान गुरू पर लग्नेश की दृष्टि हो तो उत्तम सन्तान योग होता है।

लग्नेश पंचम भाव में हो और गुरू बलवान हो तो उत्तम सन्तान योग होता है।

ipe Hkko esa ki xg & पुत्रकारक पंचम स्थान में पापग्रह हो किन्तु वह स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री या उच्च राशि में हो तो पुत्र योग का निर्माण होता है।

vYi lUrku ;ksx & वृष, सिंह, कन्या तथा वृश्चिक राशियां अल्प सन्तति राशियां मानी गई है, पंचम भाव में यदि यह राशियां तो अल्प सन्तान योग होता है, जातक को कम सन्तानों की प्राप्ति होती है।

पंचमेश, अष्टम या द्वादश भाव में हो तो भी कुंडली में अल्प सन्तान योग बनता है।

nÙkd i=k;ksx & यदि पंचम भाव में 3, 6, 10, 11 राशियों में गुलिक या शनि हो अथवा पंचम भाव पर शनि की दृष्टि हो –

लग्नेश या सप्तमेश का कोई भी सम्बंध न हो अथवा पंचमेश निर्बल हो तो व्यक्ति संतान गोद लेता है।

lUrku ghurk ;ksx & राहु की पंचमेश के साथ युति, पंचम भाव स्थित राहु पर मंगल की दृष्टि हो।
मंगल द्वितीय तथा शनि तृतीय भाव में हो।

- पंचम भाव में बुध राहु की युति हो।
- पंचम भाव पर मंगल का प्रभाव, कन्या राशि एवं उसमें राहु स्थित हो।
- लग्नस्थ राहु तथा पंचम भाव में मंगल गुरू की युति हो।

यह सभी गृहयोग सन्तान हीनता का निर्माण करते हैं ऐसी स्थिति में जातक को सन्तान का पूर्णतया अभाव होता है।

i=k ghurk ;ksx & लग्न में पाप ग्रह, पंचम में लग्नेश, पंचमेश तृतीय में और

चतुर्थ में चंद्रमा हो तो पुत्र हीनता योग बनता है।

विषम राशि, विषम नावांश में, चन्द्रमा पंचम में स्थित होकर सूर्य से दृष्ट हो तो या तो पुत्र होता ही नहीं है अथवा होकर कष्ट ही देता है।

सिंह राशिगत शनि, मंगल, पंचम भाव में और पंचमेश छठे भाव में हो तो पुत्र प्राप्ति नहीं होती है।

foyEc lsUrku izkfIr ;ksx & पाप ग्रह अथवा गुरू चतुर्थ या पंचम भाव में हो और अष्टम भाव में चन्द्रमा हो तो 30 वर्ष की आयु में सन्तान की प्राप्ति होती है।

पंचम में गुरू हो और पंचमेश शुक्र से युक्त हो तो 32 या 33 वर्ष की आयु पुत्र होता है।

दशम भाव में सभी शुभग्रह और पंचम भाव में सभी पापग्रह हो तो अति विलम्ब से सन्तान प्राप्त होती है।

lUrku uk'k ;ksx & पंचमेश यदि नीचगत, अस्त, शत्रुक्षेत्रिया 6, 8, 12 भावेशों से युत हो तथा पंचम भाव व पंचमेश को शत्रुग्रह देखे तो सन्तान का नाश होता है।

lUrku l[;k & ज्योतिष में सामन्यताः माना जाता है कि पंचम भाव में जितने ग्रह हो और उन पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो उतनी ही सन्तान संख्या समझनी चाहिये। पंचम भाव पुरूष ग्रहों का योग और दृष्टि हो तो पुत्र और स्त्री ग्रहों का योग हो तो कन्या सन्तान समझनी चाहिये।

पंचम भाव में विभिन्न ग्रहों का फल–सूर्य अथवा मंगल–कष्टप्रद सन्तान उत्पत्ति, यदि सूर्य पर शुभ दृष्टि हो तो सन्तान से लाभ भी होता है।

pUn & शुभ चंद्रमा विख्यात सन्तान तथा पूर्ण सन्तति सुख तथा अशुभ दृष्ट चंद्रमा कुख्यात सन्तान देता है।

c/k & जातकाभरणम के अनुसार ऐसी स्थिति में पुत्र सुख की प्राप्ति होती है।

x: & उत्तम शुभ एवं आज्ञाकारी सन्तान।

'kØ & सर्वगुण सम्पन्न, कलाकार एवं संगीत में निपुण सन्तान।

'kfu & विलम्ब से सन्तान उत्पत्ति, शान्ति पर यदि अन्य क्रूर ग्रहों (राहु, मंगल, केतु) इत्यादि का प्रभाव होगा तो अपने माता–पिता के प्रति संतान का व्यवहार सदैव कटु ही रहेगा।

jkg & 'मानसागरी' के अनुसार पुत्र नाशक योग तथा आचार्य मन्त्रेश्वर के अनुसार भी पुत्र हीनता योग

ds & फलदीपिका ग्रन्थ के अनुसार सन्तान हानि योग, जातकाभरणम् के अनुसार ऐसे जातक का स्नेह अपने भाईयों से अत्याधिक होता है।

इस प्रकार सन्तान प्राप्ति के यह कुछ विशिष्ट योग है जो किसी भी जातक की कुंडली में सन्तान पक्ष से सम्बंधित फलादेश करने में अत्याधिक सहायक सिद्ध होते हैं।

卐 卐 卐

मिश्रा कॉलोनी, काशीरामपुर, गोविन्द नगर कोटद्वार, उत्तराखण्ड 246149
फोन – 01382226592, 09761712285

शत्रु नाश के लिये बगलामुखी कवच

न्यौछावर राशि 900/-

यह समय घोर प्रतिस्पर्धा का है। हर व्यक्ति दूसरों के सुख से दुःखी है, उसे अपना सुख तुच्छ और दूसरों का सुख महान दिखलाई पड़ता है। भाई-भाई से ईर्ष्या, वैर-विरोध, आस-पड़ोस से लड़ाई-झगड़े, व्यापारियों से प्रतिस्पर्धा, सहयोगी कर्मचारियों से आगे निकलने की होड़ में व्यक्ति शत्रु बनता चला जाता है, दूसरों के लिये। और यह दुश्मनी बढ़ती-बढ़ती मारपीट, हत्या, कोर्ट-कचेहरी के मामले में बदल जाती है। कई व्यक्ति दूसरों से तांत्रिक प्रयोग, मारण प्रयोग तक करवाने लगते हैं। ऐसे में हर समय घात-प्रतिघात का भय सदैव लगा रहता है। यदि घर से बाहर है तो घर में पत्नी, बच्चों की चिंता, घर में हैं तो भी हर समय किसी अनिष्ट की आशंका लगी रहती है। प्रश्न उठता है कि आखिर इसका उपाय क्या है। हमारे पवित्र ग्रंथ इनका उत्तर देते हैं - यदि जीवन में शत्रु, कष्ट, कोर्ट-कचहरी, मान-सम्मान, मुकद्दमेबाजी, कलह व भय सभी से रक्षा करनी है तो 'बगलामुखी कवच' धारण करना चाहिये।

JYOTISH GURU ASTRO POINT

F-8A, Vijay Block, Gali No.3, Near Nathu Sweets, Laxmi Nagar, Delhi-110 092

फोन : 011-22435495, 09873295490/95, 09868935651

E-mail : jyotishgurumagazine@gmail.com, jyotishgurumagazine@yahoo.com

ज्योतिष में केतु का प्रभाव

डॉ० सुरेन्द्र कुमार शर्मा

ब्रह्माण्ड में स्थित नव ग्रहों में से प्रमुख सात ग्रहों (सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र तथा शनि) को छोड़कर शेष दो छाया ग्रहों (राहु–केतु) में केतु का विशेष स्थान है। हालांकि इन छाया ग्रहों का कहीं भौतिक अस्तित्व नहीं है केवल आभास मात्र है लेकिन अन्य प्रमुख ग्रहों की भांति इनका भी भूतल निवासी मानवों पर सीधा प्रभाव दृष्टि गोचर होता है। जिसके कारण केतु नामक छाया ग्रह भी ज्योतिष जगत में अपना विशेष स्थान रखता है।

ds ,o bldh oØh xfr %&

जब चंद्रमा अपनी कक्षा में दक्षिण से उत्तर को गति करता हुआ क्रांतिवृत्त को काटता है तो वह पात बिन्दु राहु तथा जब चंद्रमा अपनी कक्षा में उत्तर से दक्षिण को गति करता हुआ पुनः क्रांतिवृत्त को 180 डिग्री पर काटता है तो वह पात बिन्दु केतु कहलाता है। चन्द्र कक्षा क्रान्ति–वृत्त पर 05 डिग्री झुकी हुई है अतः यह पात बिन्दु प्रत्येक बार थोड़ा पीछे की तरफ बनता है, यही वक्री गति कहलाती है।

ds dk fofHké Hkkoksesi Hkko %&

1- iFke Hkko %& यदि केतु अशुभ हो तो जातक वात–रोगी, शरीर के विभिन्न भागों में पीड़ा, संतान व पत्नी की ओर से चिंतित, चित्त में भ्रम व घबराहट, व्यर्थ की चिंता, पत्नी को कष्ट–क्लेश, नौकरी से बर्खास्तगी, (षडयंत्र व हानि का कारक), चेहरे व नेत्र सम्बंधी रोग, दुखी व परिश्रमी, व्यग्र व बेचैन, असफलता से हताशा होता है। यदि केतु शुभ हो तो जातक को सरकारी नौकरी में फायदा, पुत्र–सम्पत्ति सुख, कृपण व रोगी, सिंह के केतु से अतुल सम्पत्ति, मकर या कुम्भ के केतु से पुत्र व सम्मान प्राप्ति होता है।

2- f}rh; Hkko %& यदि अशुभ केतु हो तो जातक दृष्ट प्रवृत्ति, दुःखी, भाग्यहीन, धर्महीन, परिवार में सदैव विरोध, मुख–रोग से पीड़ित, दुराचारी, जुआरी, शराबी, बुरे व्यसनों में लिप्त, स्त्री–सुख से वंचित, यदि स्त्री–सुख है तो व्याभिचारी भी, पुत्र–सुख नहीं होता है। शुभ केतु होने पर जातक महत्वाकांक्षी, उच्च शिक्षारत, मेष मिथुन

व कन्या का केतु शुभ व कल्याणप्रद, धर्म–मान–यश प्राप्ति, धन संचय की प्रवृत्ति कम अतः ऋण से बचाव जरूरी, द्वितीयेश से युति से अधिक धन–संपदा की प्राप्ति होता है।

3- rrh; Hkko %& यदि अशुभ केतु हो तो जातक को व्यर्थ का वाद–विवाद, बक–बक करने की प्रवृत्ति, भूत–प्रेत में आस्था, तंत्र में विश्वास, कंधे अथवा हाथ में दर्द होता है। शुभ केतु होने पर जातक साहसी, पराक्रमी, विषम परिस्थितियों में भी आत्मविश्वास व साहस से विजय, शत्रुओं व विरोधियों का नाश करने वाला, एकान्तप्रिय, ईश्वरीय कृपा को सदैव याद रखने वाला होता है।

4- prFk Hkko %& अशुभ केतु होने पर जातक माता के सुख व मित्र–प्रेम से वंचित, स्वयं अपनी संपत्ति लुटाने वाला, घर–परिवार नष्ट होने के कारण किसी अन्य के परिवार में पालना व बढ़ना होता है। शुभ केतु होने पर भूमि भवन व कृषि उत्पाद से लाभ, माता–पिता में से केवल एक का ही प्यार, देशांतर में बाधा, वृश्चिक या धनु के केतु से राज–योग जैसे सुख, धनवान, सत्यवादी, परिश्रमी व समृद्ध होता है।

5- ipe Hkko %& अशुभ केतु होने से जातक सदैव रोगी, डरपोक व धैर्यहीन, सदैव भाईयों से विवाद, अल्प–संस्कृति वाले, समाज में अशोभनीय कार्यों में संलग्न, ज्ञान व विवेक की कमी होती है। शुभ केतु होने पर वीर्य–वान, पराक्रमी, बली, एक या दो पुत्र, परन्तु पौत्र काफी, लोगों से मिलने से प्रसन्नता व कीर्ति, उच्च शिक्षा, अधिकार व दासिओं का सुख, लॉटरी, जुआ, सट्टे में धन–प्राप्ति 5, 8, 9, 12 राशि के केतु से धन–मान–सम्मान की प्राप्ति, प्रवचनकर्ता अथवा कथावाचक होता है।

6- "k"Ve Hkko %& अशुभ केतु होने से जातक को चापलूसी करने की आदत से सदैव हानि, दंत व ओष्ठ रोग से

पीड़ित, मामा से कभी न बनना, यात्रा में सदैव परेशानी, कट्टरपंथी प्रवृत्ति, इस भाव में चंद्र हो तो चोर व उच्च परिवार की स्त्रियों से अवैध सम्बंध, बेपरवाह, बहस में क्रोध का आना होता है। शुभ केतु होने पर जातक को पशुपालन से लाभ, शत्रुओं को नष्ट करने वाला, प्रत्येक मनोकामना पूर्ण, संतान का हर कार्य में सहयोग, रोग–हीन, दृढ़–प्रतिज्ञ, हुनर–मंद, व लोकप्रिय होता है।

7- lIre Hkko %& अशुभ केतु होने से जातक बुद्धि व धन–हीन, व्यर्थ की चिन्तावाला, पत्नी को रोग व जल से भय, व्यय अधिक, वैवाहिक जीवन कष्टप्रद, बुरी स्त्रियों की सांगत व गुप्तांग में पीड़ा व रोग, कम संतान, मन अशांत होता है। शुभ केतु होने पर जातक निडर, बहादुर, मन स्थिर, वृश्चिक या धनु राशि के केतु से धन–मान–सुख लाभ, आत्म–प्रशंसा व स्तुति पाने का इच्छुक, कभी–कभी पराक्रमी व दुस्साहसी भी होता है।

8- v"Ve Hkko %& अशुभ केतु होने से जातक रोगी, दुराचारी, शस्त्र से चोट, दुर्बल व दरिद्र, कुटिल, कुसंगति से स्वजनों का विरोध, घृणा–पात्र, पत्नी व पुत्र सुख से वंचित, 25 वर्ष तक मृत्यु की संभावना होता है। शुभ केतु होने पर जातक मेहनती व पराक्रमी 1, 2, 3 या 8 राशि का होने पर शुभ व लाभप्रद, गुप्त–विद्या में रूचि, जीवन–मृत्यु मृत्योपरांत विषय पर गहन चिंतन, परदेश में अधिक धन कमाना, साहसी व दीर्घ आयु होता है।

9- uoe Hkko %& केतु होने से जातक क्रोधी, दम्भी, भाग्य–हीन, दरिद्र, सगे, सम्बंधी व मित्रों से पीड़ा, पिता से द्वेष के कारण समाज में निंदनीय, व्यवहार कुशलता के अभाव से उपहास व उपेक्षा का पात्र, दुर्भाग्यपूर्ण यात्रा या जेल का भय, नास्तिक व धर्म की अवहेलना करने वाला होता है। शुभ केतु होने पर जातक दानी, परोपकारी, यशस्वी व मंत्री सरीखा सुख, भ्रमणशील, अनेक शस्त्र वाला जन्म के बाद ही पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी, विदेशी लोगों से धन लाभ व भाग्य में वृद्धि, तपस्या व दान आदि से बहुत आनंदित होता है।

10- n'ke Hkko %& अशुभ केतु होने से जातक को पिता के सुख में कमी, वाहन सम्बंधी कष्ट व देह–विकार, पर–स्त्री आसक्त से कष्ट, व्यापार–नौकरी आदि से सफलता नहीं, परिश्रम से असफलता, माता–पिता का सुख नहीं, पिता भी कष्ट भोगता है। शुभ केतु होने पर जातक यश–मान प्रतिष्ठा, साहसी, पराक्रमी, समाज कल्याण 9 या 12 राशि के केतु से वैभव व यश–प्राप्ति होता है।

11- ,dknk Hkko %& अशुभ केतु होने से जातक को पेट व गुदा–रोग, भाग्यहीन, अल्प–व्ययी, चिंताग्रस्त, धूर्त, ठग व चोर, पैर–नेत्र व गुदा रोग से कष्ट, गुप्त शत्रु से पराजित, कारावास का भय, 45वें वर्ष में कष्ट होता है। शुभ केतु होने पर जातक मीठी–वाणी, श्रेष्ठ वस्त्र वाला, धनी, उदार, परोपकारी, विनोद–प्रिय प्रवृत्ति, लोक कल्याण व परोपकार के कार्य से मान–सम्मान व यश, उत्तम भोगों से सम्पन्न, विद्वान व कर्मठ होता है।

12- }kn'k Hkko %& अशुभ केतु होने से जातक लौकिक सुख से वंचित, अपकारी प्रवृत्ति, कारावास का भय, व्याभिचारी प्रवृत्ति, धरती पर अपने कर्मों का ही फल भोगने वाला होता है। शुभ केतु होने पर जातक नेत्र बड़े व सुंदर, राजा समान, धन खर्च करने वाला, ऐश्वर्य व सुख भोगने वाला, उच्च शिक्षा प्राप्त, युद्ध–विवाद व विरोधी पर सदैव विजयी, संतानोत्पत्ति के बाद भाग्योदय होता है।

ds lEcf/kr jksx rFkk vU; fo'ks"k rF; %&

1- तृतीय भाव में राहु/केतु होने से भाई–बहनों में मन–मुटाव रहता है।

2- केतु पंचम में हो तो वह अपनी दशा आने पर बुद्धि पर अवश्य प्रभाव डालता है। पंचम में केतु Extra Marital Affairs देता है। बुध+केतु की युति पंचम में लड़की/लड़कियां देते हैं।

3- केतु छठे भाव में रोग देता है। शनि+केतु की युति षष्ठम में जातक को चेचक, एलर्जी, फोड़े–फुंसी देता है।

4- अष्टम में केतु धर्म व मोक्ष के लिये अच्छा होता है। परन्तु रक्त सम्बंधी रोग तथा रहस्यमय बीमारी देता है। अष्टम भाव व आठवीं राशि (वृश्चिक) रहस्य की है। केतु अष्टम भाव में कष्ट देता है। यदि अष्टमेश अथवा अन्य पापी ग्रह के साथ केतु अष्टम में हो तो मृत्यु अथवा मृत्यु–तुल्य कष्ट होता है। केतु तथा मंगल अष्टम भाव में होता ह। तो बवासीर रोग होता है। (अष्टम भाव + अष्टम राशि (8) + मंगल व केतु का सम्बध = बवासीर) अष्टम भाव अथवा लग्नेश पर केतु का प्रभाव हो तो कैंसर आदि का रोग दे सकता है।

5- केतु व सूर्य के प्रभाव से प्रायः हड्डी टूटती है व उसमें नकली हड्डी पड़ती है।

6- चन्द्र + केतु की युति कहीं भी हो जातक को अनचाहा भय (डर) देते हैं।

7- मंगल व शनि का केतु पर गोचर होने से उस भाव की हानि होती है।

8- केतु तकनीकी शिक्षा देता है। मंगल (काटना) की केतु (कीड़ा) पर दृष्टि हो तो जातक को कीड़ा काटता है अथवा कपड़े जलते हैं।

fo'ks"k mik; %& केतु (अंतर्मुखी ग्रह होने के कारण) की अन्तर्दशा में अंतर्मुखी होकर बैठकर दिन में तीन बार ध्यान अवश्य करें।

卐 卐 卐

15/754, आदर्श नगर
बाई पास रोड, बुलंदशहर–203001
फोन :– 05732–234197, 9711034710

मंगल ग्रह और ज्योतिष

'वामनहरि पांडे'

ज्योतिष के दृष्टी से नवग्रहों में मंगल बहिर्वर्ती ग्रह है यानि वह पृथ्वी और सूर्य के दरम्यान न होकर पृथ्वी के बाद में सूर्य माला में स्थित है और पृथ्वी की बाहर की कक्षा से सूर्य का चक्कर लगाता है। उसका एक राशि में भ्रमण का एक महीने से ज्यादा होकर वह करीब डेढ़ महीना रहता है। इस कारण वह हर तीसरे साल में वक्री रहता है। शनि और गुरू के समान उसका वक्रीत्व नियमित नहीं है, इसलिये उसका वक्रीत्व महत्वपूर्ण रहता है। मंगल रंग से लाल है उस पर लोहे का ऑक्साइड प्रचुर मात्रा में है मंगल पुरूष प्रकृति का है और जिस पुरूष के कुंडली में मंगल उत्तम स्थान में होकर बली है उसका व्यक्तित्व चुंबकीय होता है उसके तरफ लोग उसके किसी बिना विशेष प्रयास के खीचें चले आते हैं। किसी भी कुंडली में व्यक्ति के ऐश्वर्य का कारक मंगल होता है ऐसा शास्त्र में बताया गया है नये वर्ष के आने पर जो प्रार्थना पंचांग में होती है। उसमें मंगल को ऐश्वर्य कारक मानकर उसकी ऐश्वर्य बढ़ाने हेतु पूजा की जाती है। मंगल के इस गुण धर्म को जाँचने हेतु हम निम्नलिखित दो जातकों की कुंडलियों का अध्ययन करेंगे।

कुंडली क्रमांक 1 एक निवृत्त शिक्षक की है। बुध और शुक्र राजयोग बनाकर भी पढ़ाई अधूरी रही। केवल स्नातक तक पढ़ाई हुई। मंगल दशा शुरू होते ही बीमार होना पड़ा। उससे नौकरी लगने के करीब चार साल बेकार गये। 26वें साल में 1975 में नौकरी लगी, पर आर्थिक तरक्की नहीं हुई।

3.9.1949, 01:00, महाराष्ट्र

केन्द्राधिपत्य योग और सातवें स्थान में गुरू एवं चन्द्रमा दोनों ग्रहों के कारण उचित रूप में अपेक्षित पत्नी पाने में असफलता मिली। बुध एवं शुक्र तथा तीसरे स्थान में सूर्य तथा शनि के होने से लेखन करने का हुनर प्राप्त हुआ पर वह आर्थिक रूप से बहुत कुछ दे नहीं सका। मंगल नीच और पांचवे स्थान पर दृष्टि रखने से पंचम स्थान दूषित हुआ। पढ़ाई में बाधा और संतान प्राप्ति में विघ्न यही उसका फल है। उसकी दशा में (14/2/1972 से 14/2/1979) बीमारी के कारण केन्द्रिय विद्यालय जैसे स्थान में नियुक्ती मिलकर भी वहाँ जा नहीं सका मंगल की बलहीन अवस्था के कारण उम्र के साठ वर्ष तक नौकरी करके भी कोई विशेष आर्थिक स्थिति नहीं बन पायी।

कुंडली क्रमांक 2 के जातक कुंडली क्रमांक 1 के जातक से परिचित है ज्योतिष के अभ्यास के लिये ऐसी दो कुंडलियां और उनके जातक मिलना भाग्य की बात है। ज्योतिष के नये विद्यार्थी भी सहजता से मंगल की स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन देख सकते हैं।

27.8.1949, 01:00, महाराष्ट्र

मंगल मिथुन राशि के अंत में है शायद एक दिन बाद कर्क में गये होंगे। गुरू वक्र गति से 29 अगस्त 1949 को मकर से धनु में गये। मंगल की स्थिति इस कुंडली में कुंडली क्रमांक 1 से बहुत ज्यादा बदलाव कर गई। मंगल चतुर्थ दृष्टी से चतुर्थ स्थान स्थित बुध, शुक्र, चंद्र एवं केतु को देखता है तथा गुरू को अष्टम दृष्टी से देखता है। इस दृष्टी का नतीजा बहुत फायदा पहुंचाने वाला रहा। यह जातक बैंक के उपमहा प्रबंधक के घर पैदा हुआ और स्वयं भी राष्ट्रीयकृत बैंक के प्रबंधक पद पर कार्यरत रहा स्वेच्छा निवृत्ति स्वीकार करके गत सात–आठ वर्ष से सोने पर ऋण देने वाली संस्था में प्रबंधक के रूप में कार्यरत है नागपुर जैसे शहर में दो मकान, फार्म हाउस, मोटर कार आदि सुविधाएं मौजूद है। मंगल मिथुन में भी ज्यादा बलवान नहीं होता पर उसकी सभी शुभ ग्रहों पर दृष्टि पड़ने से उनको ऊर्जा प्राप्त हुई। वे सारे ग्रह आर्थिक ऊर्जा देने

के लिये ज्यादा सक्षम हो गये।

इस लेख से मंगल ग्रह के बारे में खासकर उसकी दृष्टि के बारे में एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष मिलता है। उसकी सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र, गुरू इन पर दृष्टि उन्हें ऊर्जा प्रदान करती है। चूंकि मंगल ऐश्वर्य यानी धन का कारक होने से ये ग्रह आर्थिक दृष्टि से मददगार साबित होते हैं। शनि राहु एवं केतु पर मंगल की दृष्टि हानिकारक होती है। धन लाभ होगा तो धन हानि भी हो सकती है। मंगल ग्रह का कुंडली में नवग्रह स्तोत्र के अनुसार ऊर्जा, शक्ति एवं ऐश्वर्य की दृष्टि से महत्व है यही उपरोक्त जातकों के कुंडलीयों के अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है।

卐 卐 卐

132, आकाश नगर, मानेवाडा, नागपुर–34
फोन :– 9423430228

समस्या निवारक 'सम्मोहन चिकित्सा'

डॉ० भगवान सहाय श्रीवास्तव

सम्मोहनकर्ता की कला का अर्थ उसकी दक्षता, योग्यता एवं उसके व्यक्तित्व से है, क्योंकि सम्मोनह में पात्र की इच्छा के विरूद्ध बिना उसके सहयोग के सम्मोहित नहीं किया जा सकता। सामान्यतः प्रत्येक सामान्य व्यक्ति सम्मोहित हो सकता है। जैसे शिशु पागल या मंदबुद्धि वाले जो सहयोग नहीं करते। जिनकी इच्छा शक्ति जितनी दृढ़ होती है। उतना ही अधिक सहयोग करके जल्दी सम्मोहित हो जाते हैं। सम्मोहनकर्ता मस्तिष्क को तन्द्रा अवस्था में ले जाता है। इस अवस्था में अचेतन मन 90 प्रतिशत कार्यरत रहता है। ऐसी अवस्था में जो भी सूचनाएं दी जाती हैं वे मस्तिष्क में थैलेमस नामक ग्रन्थि को सक्रिय कर देती है जिससे मनुष्य का आत्म विश्वास बढ़ जाता है। सम्मोहित व्यक्ति सकारात्मक हो जाते हैं। शारीरिक मानसिक शक्ति में वृद्धि करके वे पूर्णतः स्वस्थ हो जाते हैं।

सम्मोहन द्वारा सामाजिक, मानसिक, शारीरिक एवं अन्य कई प्रकार की समस्याओं का समाधान हो सकता है। सम्मोहन क्रिया के दौरान सर्वप्रथम किसी एक वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करना, इसके बाद विश्राम और अंत में कल्पना क्षेत्र। इसके अन्तर्गत पात्र को सम्बंधित बिमारी के विषय में सकारात्मक सुझाव दिये जाते हैं एवं उसकी इच्छा शक्ति एवं आत्मविश्वास को बढ़ाया जाता है। जिससे वह स्वस्थ होने लगता है।

lkekftd leL;k,a & आत्म विश्वास की कमी, शर्मीलापन, अकेलापन, संकोची स्वभाव सम्मोहन द्वारा पूरी तरह किया जा सकता है। किसी भी तरह का साक्षात्कार देने जाने से पहले सम्मोहन की एक सिटिंग ले ली जाये तो आत्म विश्वास बढ़ जाता है।

ekufld & धूम्रपान, ड्रग्स, मदिरापान की आदत, नाखून चबाना, अंगूठा चूसना, चिंता, अवसाद, अनिद्र, हकलाहट सोच, हीनता की भावना, सनक, डर (फोबिया) आदि समस्याओं से सम्मोहन द्वारा मुक्ति संभव है।

f'k{kk lEc/kh leL;k,a & पढ़ाई के प्रति कम रूचि, स्मरण शक्ति की कमी, घबराहट, अरूचि आदि। सम्मोहन चिकित्सा में शत प्रतिशत परिणाम है। खिलाड़ियों का भी सम्मोहन द्वारा आत्मविश्वास व मनोबल बढ़ाया जा सकता है।

'kkjhfjd leL;k,a & एलर्जी, अस्थमा, डायबिटिज, कैंसर, उच्च रक्तचाप, माइग्रेन, सिरदर्द, अनिद्रा, कब्जियत एवं हृदय रोगों का सफल इलाज किया जाता है। इसके अलावा सरल, जल्दी एवं वेदना रहित प्रसूति में भी सम्मोहन चिकित्सा का विशेष योगदान है।

वस्तुतः किसी भी चिकित्सा के साथ यदि सम्मोहन चिकित्सा भी ली जाए तो व्यक्ति अपेक्षाकृत जल्दी स्वस्थ होने लगता है। जीने की चाह बढ़ने लगती है। एवं आत्मविश्वास प्रबल हो जाता है। आवश्यकता है सही ढंग से सम्मोहनकर्ता की और उसके प्रति आस्था श्रद्धा और विश्वास की।

卐 卐 卐

फोन – 07599101318

कितने शुभ-अशुभ हैं वक्री ग्रह

आचार्य गोपाल राजू

हिन्दी ज्योतिष शास्त्र में वक्री ग्रहों पर बहुत ही सीमित सामग्री उपलब्ध है। प्रायः देखने में आता है कि फलादेश के लिये ग्रह–नक्षत्रों की गणनाएं करते समय ग्रहों की वक्रता को अनदेखा कर दिया जाता है। जबकि फलाफल के लिये वह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जहाँ ग्रहों की वक्र चाल को देखकर फलादेश के लिये धैर्य से ध्यान रखा जाता है, वहाँ परिणाम भी तुलनात्मक रूप से संतोषजनक मिलते हैं। आवश्यकता है केवल इस विषय के प्रति गंभीर होकर ज्योतिष के गुप्त–सुप्त सूत्र तलाशने की।

आज्ञानतवश कुछ लोगों में यह भ्रम व्याप्त है कि सम्भवतः ग्रह अपने निश्चित परिपथ पर विपरीत दिशा में गोचरवश चलने लगता हो। वास्तव में देखा जाऐ तो ऐसा नहीं है। कोई भी ग्रह अपनी वक्री अवस्था में उल्टा नहीं चलता। वह सदैव एक ही दिशा में गतिशील होता है। हम क्योंकि पृथ्वी से उनको देखते हैं, इसलिये हमें ग्रह के उल्टे चलने का भ्रम होता है। ग्रह की गति वस्तुतः पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने के कारण ही यथा समय वक्री प्रतीत होती है। सूर्य एवं चंद्र कभी वक्री नहीं होते तथा राहु और केतु छाया ग्रह सदैव वक्री गति में ही रहते हैं।

अपने निश्चित परिपथ में भ्रमण करते ग्रहों की वक्र गति का एक समय लगभग निश्चित है। बुध 24 दिन वक्री रहता है तथा एक दिन पहले और तीन दिन बाद तक स्थिर दिखाई देता है। शुक्र 42 दिन वक्री तथा क्रमशः 2 दिन एवं 3 दिन पहले और बाद में स्थिर रहता है। गुरू की वक्री रहने की अवधि 120 दिन तथा स्थिर रहने की 5 दिन है। शनि के लिये यह समयावधि 140 दिन तथा 5 दिन है। यूरेनस, नेपच्यून तथा प्लूटो क्रमशः 150, 159 और 160 दिन वक्री तथा 9 और 10 दिन स्थिर रहते हैं।

ज्योतिष वाड्मय को धैर्य से तलाशें तो ग्रहों की वक्रता पर जो सामग्री मिलती है, वह अपने में लगता है कहीं अधूरी है। तदन्तर में ग्रहों की वक्र चाल पर कोई ठोस शोधपरक कार्य हो भी नहीं पाये। कुछ मूल और शास्वत ग्रंथों के अंश देखें।

होरा सार के अनुसार वक्री गुरू बहुत ही अधिक बलशाली माना गया है, परन्तु वह अपनी विरोधी राशि में स्थित नहीं होना चाहिये। इन राशियों में ग्रह की वक्रता का विपरीत प्रभाव पड़ता है।

जातक तत्व के अनुसार भी शुभ राशि अथवा स्थान के वक्री ग्रह राज्य तथा धन के प्रतीक हैं। शत्रु राशि में यह घाटा देते हैं। वक्री ग्रह की दशा में व्यक्ति को धन, सुख तथा मान–सम्मान मिलता है।

सारावली ग्रंथ के अनुसार भी बलशाली वक्री ग्रह सुखकारक तथा बलहीन अथवा शत्रु क्षेत्री वक्री ग्रह दुष्ट तथा अकारण और अशांति पूर्ण भ्रमण करवाते हैं।

साकेतनिधि के अनुसार वक्री मंगल अपने से तृतीय भाव के प्रभाव को दर्शाता है। इसी प्रकार गुरू अपने से पंचम, बुध चतुर्थ, शुक्र सप्तम तथा शनि अपने से नवम भाव के फल देता है।

जातक परिजातक में स्पष्ट लिखा है कि वक्री ग्रह के अतिरिक्त शत्रु भाव में किसी अन्य ग्रह का भ्रमण अपना एक तिहाई फल खो देता है।

उत्तर कालामृत के अनुसार वक्री ग्रह के समय की स्थिति ठीक वैसी हो जाती है जैसे कि ग्रह के अपने उच्च अथवा मूल त्रिकोण राशि में होने से होती है।

फलदीपिका में मंत्रेश्वर महाराज का कहना है कि ग्रह की वक्री गति ग्रह के चेष्टावल को बढ़ाती है। कृष्णामूर्ति पद्धति ग्रहों की वक्रता पर विशेष बल देती है। कृष्णामूर्ति प्रश्न ज्योतिष के अनुसार प्रश्न काल के समय को ग्रह उनका वक्री ग्रह के नक्षत्र में होना आदि नकारात्मक उत्तर बताता है। यदि कोई सम्बन्धित ग्रह वक्री नहीं है परन्तु वक्री ग्रह के नक्षत्र में प्रश्न के समय स्थित है तो वह कार्य ग्रह की वक्रता अवधि तक कदापि पूर्ण नहीं होगा। जैसे ही ग्रह मार्गी होगा वैसे ही कार्य की पूर्ति सम्भावित होने लगेगी।

इसी प्रकार और भी अनेक मत वक्री ग्रह को लेकर प्रस्तुत किये जा सकते हैं। परन्तु विवाद वहाँ होने लगता है जब एक परन्तु विवाद वहाँ होने

लगता है जब एक स्थान पर ग्रह की वक्रता को शुभ और हमारे मत के अनुसार अशुभ कहा जाता है। ज्योतिष का विद्यार्थी भ्रमित होने लगता कि किस मत को स्वीकार किया जाये और किसको छोड़ा जाये। देखा जाये तो कृष्णामूर्ति पद्धति इस विषय के प्रति अधिक सत्यता के निकट सिद्ध हुई है। जिज्ञासु पाठक नवग्रहों के बलाबल, दशा, गोचर आदि को थोड़ी देर के लिये भूल जायें और ग्रहों की वक्रता को ध्यान में रखते हुये कुछ बीती हुई घटनाओं का अध्ययन मनन करें। सम्भवतः इस विवादास्पद विषय को लेकर उनका दृष्टिकोण कुछ बदल जाये।

अंक ज्योतिष, ग्रहों के विभिन्न राशिगत गोचर और विशेष रूप से ग्रहों की वक्रता को लेकर मैंने सैकड़ों की संख्या में श्रमसाध्य कार्य किये हैं। सामने एक परिणाम अवश्य आया है कि जब भी कोई ग्रह विशेष रूप से गुरू वक्री अथवा मार्गी होता है तो देश, मौसम, राजनीति, प्राकृतिक आपदाओं तथा दुर्भिक्षों में अच्छे और बुरे परिणाम अधिकांशतः देखने को मिलते हैं। जो कृष्णमूर्ति पद्धति के विद्यार्थी हैं, उन्होंने भी यह अवश्य अनुभूत किया होगा कि ग्रहों की वक्रता को वहाँ बहुत अधिक महत्व दिया गया है और भविष्यवाणियाँ वहाँ सत्य भी होती है।

जो भी तथ्य पाठक अपने स्वाध्याय, श्रम साध्य गणनाओं और तदनुसार अनुभवों से निकालें, एक बार यह अवश्य स्वीकार करेंगे कि लेख में कुछ न कुछ सार अवश्य है और शुभ तथा अशुभ घटनाओं के फलाफल में वक्री ग्रहों की एक महत्वपूर्ण भूमिका भी छिपी हुई।

卐 卐 卐

30, सिविल लाइन्स, रूड़की, (उ.ख.)
फोन :– 9760111555

ज्योतिष किसी भी व्यक्ति के भूतकाल, वर्तमान और भविष्य को जानने की विधि है। ज्योतिष के द्वारा हम किसी भी व्यक्ति के बारे में यह जान सकते हैं कि उसका बचपन, जवानी, वृद्धावस्था, शिक्षा, धन कमाने की शक्ति, विवाह, वैवाहिक जीवन का आनन्द, सन्तान, सन्तान का भविष्य, मान प्रतिष्ठा, समाज में रूतबा, जमीन–जायदाद, वाहन इत्यादि का सुख कितना है। ज्योतिष के अनुसार जब किसी बालक का जन्म होता है, उस समय ब्रह्माण्ड में भ्रमण करते हुये ग्रहों की स्थिति के अनुसार बालक की कुंडली बन जाती है।

कुंडली में बारह भाव, बारह राशियाँ, नौ ग्रह व सत्ताइस नक्षत्र, बालक के जीवन का जन्म से लेकर मृत्यु तक का विवरण देते हैं। जिसके अनुसार ज्योतिषी बालक के सम्पूर्ण जीवन का हाल बता देते हैं।

xgksdk ifjp; & ज्योतिष के अनुसार नौ ग्रह होते हैं। सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु व केतु।

xgksdsdkjdRo & ग्रहों के स्वाभाविक गुण/धर्म तथा किन–किन वस्तुओं के कारक हैं इसका विचार हम ग्रहों के अनुसार करते हैं।

pUnek & चन्द्रमा का शरीर गोल, रंग गोरा है, नेत्र सुन्दर, मुख पर आर्कषण व बाल काले हैं तथा श्वेत वस्त्र धारण करता है चन्द्रमा युवा व प्रौढ़ दोनों है। शरीर में रक्त अधिक है। वाणी मधुर, स्वभाव मृदु है। चन्द्रमा कफ व वात दोष युक्त है। ग्रहों के मत्रिमण्डल में चन्द्रमा को रानी की पदवी प्राप्त है। स्त्री ग्रह, जलीय तत्व, वैश्य जाति का सात्विक ग्रह है। चन्द्रमा, चंचल, बुद्धिमान व कामुक प्रकृति का है। चन्द्रमा वायव्य दिशा का स्वामी, है तथा वर्षा ऋतु पर अधिकार है। चन्द्रमा जलीय स्थानों पर वास करने वाला, नमकीन प्रिय, शुक्ल पक्ष में बली, रात्रिबली, चतुर्थ भाव में दिग्बली, धातु चाँदी व सफेद रंग का स्वामी है। चन्द्रमा के मित्र सूर्य व बुध है तथा चन्द्रमा किसी को शत्रु नहीं मानता अतः मंगल, गुरू, शुक्र व शनि को चन्द्रमा सम मानता है। चन्द्रमा वृष राशि में 3^0 पर परम उच्च व वृश्चिक राशि में 3^0 पर परमनीच हो जाता है। चंद्रमा कर्क राशि का स्वामी है तथा रोहिणी, हस्त व श्रवण नक्षत्रों का स्वामी है। चन्द्रमा की महादशा 10 वर्ष की होती है। वृष राशि में 3^0 से 30^0 तक मूल त्रिकोण में होता है। रत्न सफेद मोती है। चन्द्रमा मन, माता, जलीय रोग, कवि, वस्त्र, कल्पना–शक्ति, जल, रक्त, भावना, प्रसन्नता, यात्रा, बागवानी, द्रव्य पदार्थ, बायीं आँख, सफेद वस्तुएं, विदेश यात्रा, ख्याति, यश, चेहरे की कान्ति, धन, यात्रा, सत्ता की अनुकूलता, निद्रा, मन की प्रसन्नता, सफेद वस्तु, खेती, चाँदी, दूध, वस्त्र, गाय, भोजन, संमुद्री यात्रा, शराब, शीतल पेय, रेस्टोरेन्ट, प्रचार, अस्पताल, पर्यटन, जनता, प्रजा, काँच की वस्तुएं, प्रर्दशनी, संगीत समारोह इत्यादि का कारक है।

卐 卐 卐

एच–33/6, सैक्टर 3, रोहिणी दिल्ली
फोन – 9711079544

यंत्रों द्वारा जानें समस्याओं का हल

1- xgksdh 'kkfr dk ;=k %& इस यंत्र को भोजपत्र पर लाल चंदन, केशर तथा गोरोचन से अनार की कलम द्वारा लिखकर पूजा स्थल पर स्थापित कर दें। प्रतिदिन धूपादि करके नवग्रह कवच का पाठ करें। ऐसा करने से यंत्र प्रभावी हो जाता है।

यदि किसी व्यक्ति को एक साथ कई ग्रहों ने परेशान कर रखा हो, तो इस यंत्र का प्रयोग करना चाहिये। यंत्र के प्रभाव से ग्रहों का बुरा प्रभाव समाप्त हो जाता है। इसी के साथ व्यक्ति की सारी परेशानियां भी समाप्त हो जाती हैं।

ग्रहों की शांति का यंत्र

3	2	8	5	4	9	1	6	7
5	4	9	1	6	7	3	2	8
1	6	7	3	2	8	5	4	9
8	3	2	9	5	4	7	1	6
9	5	4	7	1	6	8	3	2
7	1	6	8	3	2	9	5	4
2	8	3	4	9	5	6	7	1
4	9	5	6	7	1	2	8	3
6	7	1	2	8	3	4	9	5

2- n?kVuk fuokj.k ;=k %& इस यंत्र को सादे कागज पर लिखकर, धूप–दीप से पूजन करके अपने पास रखना चाहिये। इसे लिखने के उपरांत चौकी पर रखकर, इसके किसी भी एक अंक पर अंगुली रखें। अंक की जो संख्या हो, उतनी ही बार, ^vtfu lr gueku j{kr LokfLr* मंत्र का जप करें। इस प्रकार यंत्र के प्रत्येक अंक पर एक बार अंगुली रखकर उतनी ही संख्या में मंत्र का जप करते रहें। इसके पश्चात् अगरबत्ती जलायें और आंक के सूखे पत्तों की धूनी यंत्र को दें।

इस क्रिया से यंत्र प्रभावी हो जाता है। जब जब भी गाड़ी लेकर कहीं जायें, तो यंत्र को कपड़े में लपेटकर अपनी जेब आदि में रख लें अर्थात् वाहन चलाते समय यंत्र पास में अवश्य होना चाहिये। इसके प्रभाव से कभी कोई दुर्घटना नहीं होगी।

दुर्घटना निवारण यंत्र

22	29	2	9
7	3	16	15
18	16	9	1
4	6	24	11

csdkjh nj djusdk ;=k %& इस यंत्र को रवि पुष्य योग में गोरोचन, कपूर, केशर और गंगाजल (अभाव में गुलाब जल) मिलाकर, चमेली की कलम से भोजपत्र पर लिखें। इसे लिखते समय मुंह में मिश्री की डली अवश्य रहनी चाहिये।

जो व्यक्ति काम–धन्धे की तलाश में भटक रहा हो, किन्तु उसे कहीं कोई नौकरी, काम न मिल पा रहा हो, तो इस यंत्र को विश्वासपूर्वक धारण करने से बेकारी दूर होती है तथा कहीं न कहीं नौकरी या काम अवश्य मिल जाता है।

बेकारी दूर करने का यंत्र

ॐ	चं	जं	SII
हैं	डं	ह्रीं	SIII
व	डं	जगज्‌	IIS
देवदत्त			

5- inkéfr dk chlk ;=k %& इस यंत्र को मंगलवार अथवा गुरूवार के दिन लिखना आरंभ करें। अर्थात् यंत्र को केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखें। प्रतिदिन 100 यंत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इस प्रकार कुल 5 हजार यंत्र लिखकर जल में प्रवाहित करें। ऐसा करने से पदोन्नति अवश्य हो जाती है।

पदोन्नति का बीसा यंत्र

10	9	1
6	3 7 ॐ 8 2	14
4	11	5

वास्तुगुरू कुलदीप सलूजा

वास्तु भी होता है चुनाव जिताने में सहायक

चुनाव जीतने के लिए आजकल कई उम्मीदवार पूजा–पाठ, यंत्र–तंत्र–मंत्र इत्यादि का सहारा भी खूब लेते हैं, जिसके लिए पण्डितों द्वारा बड़े–बड़े अनुष्ठान करवाए जाते हैं, परन्तु इसके बाद भी ज्यादातर उम्मीदवार बुरी तरह चुनाव में हार जाते हैं। उम्मीदवार चुनाव जीतने के लिए पूजा–पाठ की बजाए अपने घर के वास्तु पर ध्यान दें तो चुनाव में निश्चित सफलता पा सकते हैं। ध्यान रहे सत्ता और यश केवल उसे ही मिलता है, जिसके घर में इससे जुड़ी वास्तुनुकूलता होती है। यहाँ एक बात विशेष ध्यान देने की है कि पूजा–पाठ, अनुष्ठान इत्यादि से यदि लाभ मिलता भी तो सिर्फ एक चुनाव के लिए वह भी उसे ही जिसके लिए अनुष्ठान किया गया है जबकि घर की वास्तुनुकूलता उस घर में रहने वाले सभी सदस्यों को जीवनभर यश, मान–सम्मान, इज्जत, दिलाती रहती है।

चुनाव में यश पाने के लिए नेता के घर की उत्तर दिशा एवं उत्तर ईशान कोण में वास्तुनुकूलताएँ होना अत्यन्त आवश्यक है और यदि उपरोक्त दिशाओं में वास्तुदोष है तो निश्चित ही वहाँ रहने वालों को यश नहीं मिल सकता। यश पाने के लिए जरूरी है कि यह दिशाएँ किसी भी प्रकार कटी या दबी नहीं होना चाहिए। भवन का इन दिशाओं का बढ़ा होना शुभ होकर यश दिलाता है। यहाँ पर भूमिगत पानी का स्रोत या किसी भी प्रकार का गड्ढा वास्तुनुकूल होकर यश दिलाने में बूस्टर की तरह कार्य करता है। इसके विपरीत इन दिशाओं का किसी भी प्रकार से ऊँचा होना अपयश का कारण बनता है और अपयश मिलने पर चुनाव जीतना सम्भव नहीं होता।

उम्मीदवार का वह घर जहाँ वह निवास करता है उस घर की उत्तर, पूर्व दिशा और ईशान कोण घर की अन्य दिशाओं और कोणों से नीची हो तो परिवार में सर्वथा अभिवृद्धि होगी, ऐश्वर्य आनंद की प्राप्ति होगी, उसे विजय, प्रशंसा और ख्याति प्राप्त होगी।

यदि उत्तर दिशा एवं उत्तर ईशान में वास्तुनुकूलता है तो उस घर में रहने वाले यदि अपने ड्राईंगरूम के अंदर जाने वाले द्वार के सामने की दीवार के मध्य उचित ऊँचाई पर यदि अपना फोटो लगाएँ, साथ ही फोटो के ऊपर लाल रंग का जीरो वाट का बल्ब लगाएँ जो कि घर आए मिलने–जुलने वालों को ड्राईंगरूम के द्वार से घुसते ही नजर आ जाए तो यह यश, मान–सम्मान में प्रसिद्धि पाने में सोने में सुहागे का कार्य करता है। ध्यान रहे यह बल्ब 24 घण्टे चालू रहना चाहिए।

घर के वास्तु के साथ–साथ उम्मीदवार यदि अपने स्थायी कार्यालय एवं चुनाव कार्यालय में भी उपरोक्त वास्तु सिद्धान्तों का पालन करें तो चुनाव जीतने की सम्भावना और प्रबल हो जाती है। इसी के साथ उम्मीदवार को चाहिए कि चुनाव के दौरान होने वाली सभाओं में वह अपना मुँह उत्तर या पूर्व दिशा में रख सभा को सम्बोधित करें। उम्मीदवार का मुँह उत्तर दिशा में जब ही रहेगा जब मंच सभा के स्थान की दक्षिण दिशा की ओर होगा इसी प्रकार पूर्व दिशा की ओर मुँह जब ही रहेगा जब मंच सभा के स्थान की पश्चिम दिशा की ओर बनेगा इस प्रकार के वास्तुनुकूल मंच पर खड़े होकर चुनावी सभा को सम्बोधित करने से सभा सफल एवं प्रभावी होती है।

fo'ks"k & सभी राजनैतिक पार्टियों का केंद्रीय कार्यालय का वास्तु देश प्रदेश में उस पार्टी की सरकार बनाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि किसी पार्टी का केंद्रीय कार्यालय वास्तुनुकूल होगा तो वह पार्टी देश और प्रदेश में अपनी सत्ता आसानी से स्थापित कर सकती है।

卐 卐 卐

बिल्लू एण्ड बिल्लू फ्रिगंज, उज्जैन
फोन – 09425091601

जब गोवर्धनधारी कृष्ण ने इन्द्र का अंहकार चूर किया

डॉ0 हनुमान प्रसाद उत्तम

जब कृष्ण बड़े हुए तो गाये चराने लगे। उन्हें अपने गायें, उनके बछड़े तथा ब्रज के हरे–भरे चरागाय बेहद प्रिय थे। समस्त गाँवों के ग्वाल–बाल उनके साथी थे। वे अपने साथियों के साथ सुबह–सुबह गायों को जंगल ले जाते तथा शाम होने पर घर लौटा लाते। जंगल में गायों के चरने के लिये हरी–हरी घास तथा पीने के लिये साफ जल की बहुलता थी। कृष्ण तथा उनके मित्रों के खेलने और लुत्फ मनाने के लिये भी जंगल बहुत मनोरम स्थान था।

कृष्ण की संगीत से बेहद लगाव था। वह अत्यंत सुंदर बाँसुरी बजाते थे। जो भी उनके संगीत को सुनता, मोहित हो जाता। जंगल में किसी वृक्ष की डाली पर या किसी बड़ी चट्टान पर बैठकर जब वे बाँसुरी बजाते तो सभी ग्वाल–बाल उनका संगीत सुनने के लिये हरी घास पर आकर बैठ जाते। गायें तथा बछड़े भी बछड़े भी चरना छोड़ कृष्ण के पास उस सुरीले संगीत को सुनने लगते। यहाँ तक कि कृष्ण की बाँसुरी की ध्वनि सुन जंगली जानवर भी अपना जंगलीपन भूल जाते। गाँव में भी कृष्ण का संगीत लोगों का मन मुग्ध कर लेता था। जब वे बांसुरी बजाते तो स्त्री–पुरूष तथा बच्चे अपना–अपना कार्य छोड़ उनके पास दौड़े आते। वे सबके प्यारे थे।

वृंदावन के लोग एक मर्तबा इन्द्र का यज्ञ करने की तैयारी करने लगे। यह देखकर कन्हैया ने नंद से पूछा, 'पिता जी! ये सब तैयारियाँ किस लिए? बेटा! हम इन्द्र की अर्चना–आराधना करने जा रहे हैं। इन्द्र वर्षा के देवता हैं। उसी की कृपा से जल बरसता है तथा विविध भाँति की फसलें होती हैं।' नंद ने जवाब दिया। यह बात सुनकर कन्हैया ने कहा 'पिताजी! हमारे सच्चे देवी–देवता तो ये गायें तथा यह गोवर्धन पर्वत है अतः हमारे इनकी आराधना करनी चाहिये। हम इन्द्र की कृपा की भीख क्यों माँगने जाएं? तब वृंदावन के लोगों ने इन्द्र का यज्ञ बंद कर दिया। यह देखकर इन्द्र को बेहद नाराजगी हुई। उसने ग्वालों से बदला लेने की ठानी। बस, उसकी आज्ञा से पलभर में गगन मेघों से आच्छादित हो गया। बिजली चमकने लगी। विकट गड़गड़ाहट के साथ ओलों की बारिश प्रारंभ हुई। तब कन्हैया ने उस विशाल गोवर्धन पर्वत को अपनी कानी अंगुली पर उठा लिया तथा एक छाते की भांति पकड़े रखा। ग्वाले सब अपनी गायों के साथ उसके नीचे आ गए। इन्द्र ने सात दिन तक यों जल बरसाया किंतु वृंदावन के लोगों का बाल भी बाँका न कर सका। तब उसके आकर कृष्ण के पैर पकड़कर क्षमा माँग ली। इन्द्र का घमंड चूर हो गया।'

卐 卐 卐

जन शिक्षण इण्टर कॉलेज
प्रेमपुर–बड़ागांव कानपुर नगर – 209401
फोन – 2756205

जन्मपत्री में व्यवसाय योग एवं ग्रहों के अनुसार व्यवसाय

डॉ० कमल प्रकाश अग्रवाल

धनवान होकर भी दुःखी, निर्धन होकर झोंपड़ी में रहकर भी सुखी। कारण प्रकृति में धुले हुये सुख–दुःख की अनुभूति से मानव का मन भी अछूता नहीं है। कठोपनिषद् यही कहता है।

व्यक्ति को व्यापार या नौकरी किसमें सफलता मिलेगी? व्यवसाय का चुनाव करते समय यह आम समस्या होती है नौकरी करने वाला व्यक्ति उच्च अधिकारी तो हो सकता है परन्तु आमदनी निश्चित होती है। जबकि व्यापारी हजारों, लाखों एक ही समय में कमा लेता है। व्यापार की सफलता के लिये द्वितीय, पंचम, नवम, दशम और एकादश भाव तथा उन भावों में ग्रहों की स्थिति सम्पत्ति की सूचक है। जिनके उपरोक्त पांचों भाव निर्बल हो तो उन्हें नौकरी मिलती है।

द्वितीय भाव जातक की आर्थिक स्थिति को विशेष रूप से स्पष्ट करता है। द्वितीय भाव की स्थिति में विशेष जानकारी प्राप्त की जाती है। धन लाभ का तरीका क्या होगा? एकादश से विचार करना चाहिये। एकादश भाव साझेदारी के विषय में प्रकाश डालता है तथा नवम भाव जातक के भाग्यशाली अथवा भाग्यहीन होने की सूचना देता है। आकस्मिक् लाभ के सम्बंध में विचार करते समय चतुर्थ, पंचम तथा अष्टम भाव की स्थितियों पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

चतुर्थ भाव जातक की स्थायी, पैतृक सम्पत्ति के सम्बंध में बताता है। पंचम भाव लॉटरी, आकस्मिक् धन लाभ के विषय में सूचित करता है। सप्तम भाव साझेदारी के व्यवसाय तथा ससुराल द्वारा होने वाले धन लाभ का सूचक है। दैनिक आमदनी के सम्बंध में भी सप्तम भाव से विचार किया जाता है। अष्टम भाव, रिक्त, लॉटरी द्वारा धन लाभ, गढ़े हुये धन का लाभ अथवा परस्त्री आदि से होने वाले धन लाभ की सूचना देता है। नवम भाव भाग्यशाली होने के बारे में तथा दशम भाव ऐश्वर्य, सत्ताधिकार, राज सम्मान, उपजीविका, धंधे, नौकरी के सम्बंध में जानकारी देता है। धन–हानि के सम्बंध में द्वादश भाव से विचार करना चाहिये।

लग्न तथा चंद्रमा इन दोनों के मध्य में जो बली हो एवं उससे जो दशम स्थान हो वह कर्म या व्यवसाय का घर है उसी के वृद्धि से कर्म की वृद्धि तथा शुभ ग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो उस मनुष्य की सुखजनक जीविका होती है।

लग्न व चंद्रमा से दशम में सूर्यादि ग्रह हो तो पिता से या पिता के व्यवसाय से धन की प्राप्ति होती है। उसी प्रकार चंद्र हो तो माता से, भौम हो तो शत्रु से, बुध हो तो मित्र से, गुरू हो तो भाई से, शुक्र हो तो स्त्री से, शनि हो तो नौकर से धन की प्राप्ति होती है। लग्न चंद्र तथा सूर्य इन तीनों के मध्य जो अधिक बली हो उससे दशम में जो राशि हो उसका स्वामी जिस ग्रह के नवांश में हो उसकी वृत्ति अनुसार जीविका होती है। अर्थात् सूर्य की दृष्टि से चिकित्सा, झगड़ा, जल, धान्य, सुवर्ण, मोती, मंत्रोपदेश, मनोरंजन आदि से। चंद्रमा की वृत्ति से वस्त्र, राजा तथा स्त्रियों के आश्रय से, मिट्टी के काम, खेती के कार्य से जीविका होती है। मंगल की वृत्ति से युद्ध तथा प्रहार, अग्नि, साहस, धातु कला की वृत्ति, चोर वृत्ति आदि से। बुध की वृत्ति से काव्य ज्ञान, शास्त्र, वेदान्त मार्ग, पुरोहिताई, जप, वेदपाठ, शिल्प कलादि से। गुरू की वृत्ति से पुराण, शास्त्र, नीति, धर्मोपदेश, अध्यापन मार्ग द्वारा जीविका होती है। शुक्र के नवांश में माणिक्य, वाहन, चावल, नमक, स्त्री, गाय आदि से शनि की वृत्ति में घूमने–फिरने, नीच कार्य, लकड़ी, शिल्प, परिश्रम, भार वहन से जीविका होती है।

व्यवसाय या कर्म, आज्ञा, कृषि, पिता, आजीविका, यश, व्यापार, सत्ता प्राप्ति, पद प्राप्ति, मान, वंश, सन्यास, आश्रम, आकाश, प्रवास, ऋण, विज्ञान, विद्या, वस्त्र, राज–सम्मान दास आदि इन सभी वस्तुओं का विचार दशम भाव से करें। उपरोक्त सभी बातों का विचार करते समय बुध, गुरू, रवि तथा दशमेश से भी विचार करें। मंगल स्वराशि मेष या वृश्चिक का हो वह शुक्र, बुध से युक्त हो एवं दशम स्थान उस मंगल से दृष्ट हो तो अपने कर्मफल की स्वल्पता होनी चाहिये। षष्ठम, द्वादश या अष्टम में शुक्र, बुध, गुरू हो और वे पाप ग्रह से दृष्ट हो तो उक्त योगों में निम्न कर्मों का नाश होता है।

ग्रहों का फल विचारते समय ग्रह के अंश उच्च राशि व नीच राशि का भी ध्यान रखना चाहिये। जो ग्रह सूर्य के साथ ही सामान्यतयः उन्हें अस्त ही माना जाता है। पत्रिका में वर्तमान में दशा अन्तर्दशा तथा प्रयन्तर्दशा का भी ध्यान रखना चाहिये। क्योंकि ग्रह अपनी दशा तथा अन्तर्दशा में अधिक फलदायी होते हैं।

राशियाँ तीन प्रकार की होती हैं। चर राशियां – मेष, कर्क, तुला, मकर। स्थिर राशियां – वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ। द्विस्वभाव राशियां – मिथुन, कन्या, धनु, मीन। इन राशियों से हम व्यवसाय आदि की गणना करते हैं।

♦ यदि जन्म कुंडली में चर राशिगत ग्रह अधिक संख्या में हो तो जातक कोई स्वतंत्र व्यवसाय करने वाला महत्वाकांक्षी होता है। वह अपनी योग्यता, व्यवहार एवं कुशलताओं के आधार पर अपने क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान पाने के लिये प्रयत्नशील रहता है। जिस व्यवसाय में सद्व्यवहार विनम्रता युक्ति आदि की विशेष आवश्यकता पड़ती हो, वे उसके लिये लाभदायी सिद्ध होते हैं।

♦ यदि जन्म कुंडली में स्थिर राशिगत ग्रह अधिक संख्या में हो जातक धैर्यवान, सहनशील तथा दृढ़–विचारों का होता है। जिस नौकरी में इन सब गुणों की अधिक आवश्यकता पड़ती हो, चिकित्सा कार्य, सरकारी नौकरी आदि, उनमें ऐसे ग्रहों वाले जातक को विशेष सफलता मिलती है।

♦ यदि जन्म कुंडली में द्विस्वभाव राशिगत ग्रह अधिक संख्या में हो तो जातक को व्यवसाय की अपेक्षा अध्यापकी, मुनीमी, एजेंसी आदि के कार्यों तथा नौकरियों में अधिक सफलता मिलती है क्योंकि द्विस्वभाव राशिस्थ ग्रहों में चर एवं स्थिर दोनों प्रकार के ग्रहों सम्मिलित गुण पाये जाते हैं।

♦ यदि तीनों प्रकार की राशियों में से दो में बराबर की संख्या में ग्रह हो तथा तीसरी प्रकार की राशि में कम ग्रह हो तो अधिक ग्रहों वाली दोनों राशियों के बलाबल को देखकर ही जातक के व्यवसाय अथवा नौकरी आदि के सम्बंध में विचार करना चाहिये।

♦ यदि लग्न तथा चंद्र राशि दोनों अलग–अलग हो तो मिश्रित फल प्राप्त होगा। लग्न पर जिस ग्रह की दृष्टि हो उसका प्रभाव भी दृष्टिगोचर होगा। राशि तथा ग्रहों के बलाबल भी फलादेश में अंतर ला देते हैं।

यदि दशम स्थान में कोई ग्रह न हो तो दशमेश के नवांशेश द्वारा धन प्राप्ति के सम्बंध में विचार करना चाहिये। दशमेश के नवांशेश विभिन्न ग्रहों का फल यदि सूर्य हो तो व्यवसाय, चिकित्सा, युद्ध कार्य ठेकेदारी से। यदि चंद्रमा हो तो जलीय पदार्थ, वस्त्र आदि के व्यवसाय से। यदि मंगल हो तो धातु, शस्त्र, मशीनरी से। यदि बुध हो तो लेखन, व्याख्यान, शिल्प से यदि गुरू हो तो धार्मिक अथवा न्याय सम्बंधी कार्यों से। यदि शुक्र हो तो पशु, वाहन, स्त्री से। यदि शनि हो तो मजदूर, मजदूरी श्रम से।

rRoksa ds vk/kkj ij vkthfodk %&

यदि अग्नि तत्व की प्रमुखता हो तो जातक उन व्यवसायों में तरक्की करता है, जिनमें बौद्धिक तथा मानसिक क्रियाओं का चमत्कार प्रदर्शित करना आवश्यक होता है। इस तत्व की प्रधानता वाले जातक साहसी, कर्मठ, प्रतिभाशाली तथा यांत्रिक कार्यों में अधिक सफल होते हैं।

जल तत्व की प्रधानता हो तो जातक चंचल चित्त तथा अस्थिर स्वभाव वाला होता है। वह अपने व्यवसाय को बदलता रहता है और किसी एक काम को जम कर नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति विदेश यात्रा, नौकायान, द्रव पदार्थ आदि के व्यवसायों में सफल होता है।

यदि वायु तत्व की प्रधानता हो तो कलाकार, साहित्यकार, संवाददाता, प्रकाशक, परामर्शदाता, एजेन्ट के व्यवसायों में सफल होता है।

l;w %& सब ग्रहों का तेजस्वी सूर्य राजा है। यदि सूर्य व्यवसाय का कारक हो तो जातक उच्च श्रेणी का व्यवसाय करता है। सूर्य का सम्बंध राज्य से है, उसका सम्बंध दूरवर्ती स्थान से भी है। ऐसा जातक अधिक पूंजी लगाकर व्यवसाय करता है। जातक शासनाधिकारी या उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है सूर्य–शनि या राहु से सम्बंध रखता हो तो चिकित्सक बनता है यदि सूर्य का सम्बंध गुरू से हो तो धर्माचार्य, पुजारी आदि होता है।

pUn %& जल तत्व प्रधान ग्रह है इसे सम्बंधित जीविका, पेय पदार्थ, जल, नाविक आदि होती है। चन्द्र का सम्बंध राहु से होने पर शराब या मादक औषधियां। यदि चन्द्र का सम्बंध शुक्र से हो तो सुगंध व तेल। चन्द्र का बुध से सम्बंध होने पर खाद्य पदार्थ का व्यवसाय होता है। चन्द्र गुरू का सम्बंध चीनी, मिठाई आदि से होता है। चन्द्र स्त्री ग्रह है, शुक्र–शनि–बुध स्त्री ग्रह से सम्बंध होने के कारण जातक फिल्म लाइन से जुड़ जाता है। चतुर्थ भाव से चन्द्र का सम्बंध होने पर जातक नीच कर्म से धन उपार्जन करता है।

exy %& अग्नि तत्व प्रधान ग्रह है। पराक्रम, हिंसा, कर्मठता, रक्त, मांस आदि का अधिपति है। अतः दशम भाव में मंगल प्रधान व्यक्ति सेना, पुलिस, सर्जन आदि होता है। भूमि पुत्र होने के कारण भूमि, भवन, कृषि कार्य, सम्पत्ति को किराये पर उठाने से सम्बंध रहता है। मंगल का सम्बंध सूर्य के साथ भट्टा, बिजली का सामान, मंगल का सम्बंध चन्द्र से होने पर होटल, लॉज, किराये के मकान आदि का व्यवसाय होता है। मंगल लग्न में होने पर चतुर्थेश या एकादश से सम्बंध होने पर क्रूर कर्मों या चोरी द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

c/k %& पृथ्वी तत्व का प्रतीक ग्रह बुध है। व्यापार का नायक है। यदि बुध लग्नेश, सूर्य तथा चन्द्र को प्रभावित करता है जो जातक अध्यापन कार्य करता है। यदि बुध द्वितीयेश या पंचमेश होकर गुरू से सम्बंध हो तो जातक वकील, अध्यापक, उपदेशकर्ता होता है। बुध यदि सूर्य से प्रभावित हो तो क्लर्क, लेखाकार, बैंक आदि के पद पर होता है। बुध का शनि–शुक्र से सम्बंध होने पर वस्त्र विक्रेता, बुध द्वितीयेश के साथ होने पर ज्योतिषी बना देता है। बुध तृतीयेश होने पर विद्वान लेखक या पत्रकार होता है।

xq: %& वायु तत्व प्रधान ग्रह है। यह विद्या, कानून, वित्त, वाणी, राज्य की कृपा आदि का प्रधान ग्रह है। अधिक बली गुरू न्यायाधीश बनाता है। गुरू द्वितीयेश या एकाद्वाशेश होकर लग्न और लग्नेश पर प्रभाव हो तो बैंक, किराया, ब्याज, शिक्षक, आदि का कार्य हो सकता है।

'kØ %& जल तत्व प्रधान ग्रह है। यह भोग–विलास वाला ग्रह है। इसके प्रभाव से कलात्मक तथा सौंदर्य प्रसाधन वस्तुऐं,

सुगंध आदि से सम्बंधित व्यवसाय होते हैं। यदि चतुर्थेश से सम्बंध हो तो वाहन आदि से सम्बंधित कार्य होता है। यदि शुक्र लग्नेश, धनेश अथवा गुरू से प्रभावित हो तो जातक जौहरी होता है। शुक्र चतुर्थ चतुर्थेश के साथ चंद्रमा को प्रभावित करता हो तो जातक कवि होता है।

'kfu % वायु तत्व प्रधान ग्रह है इसका प्रभाव रोग, धातु, मृत्यु, भूमि, पत्थर आदि पर है। शनि मंगल से प्रभावित हो तो इंजीनियर अथवा बिजली का काम करने वाला होता है। बुध से प्रभावित होने पर बिजली का काम करने वाला, शनि से सूर्य व राहु प्रभावित होने पर चिकित्सा कार्य, चतुर्थेश शनि पृथ्वी के अंदर वाले पदार्थ तेल, पेट्रोल तेल, पेट्रोल, कोयला आदि का कारक है। सप्तम से शनि का सम्बंध हो और लग्न या लग्नेश को प्रभावित कर रहा हो तो व्यक्ति भवन ठेकेदार होता है या उसका व्यवसाय करता है। कम अंश का शनि यदि तुला राशि में हो तो नौकरी करता है।

jkgq&ds % छाया ग्रह हैं। इनका पृथक अस्तित्व नहीं है। किसी की दृष्टि होने पर या युक्ति होने पर कारकत्व को प्राप्त होते हैं।

दशम भाव में मंगल प्रधान व्यक्ति चुनौतियों को स्वीकार करते हैं जब तक जीते हैं स्वाभिमान से जीवन व्यतीत कर समाज में त्याग व बलिदान की परम्परा डालकर राष्ट्रीय सम्मान से विभूषित होते हैं। जब सूर्य मंगल के साथ लग्न का स्वामी भी दशम भाव में हो तो निश्चित है राष्ट्र में सर्वोच्च सम्मान मिलता है।

मंगल के साथ शुक्र की स्थिति कुंडली में हो तो व्यक्ति नाइट क्लब, होटल या मनोरंजन घर, सिने–निदेशक इत्यादि हो सकता है उसका विपरीत लिंग वालों से सम्बंध रहता है।

शुक्र का सम्बंध राहु अथवा शनि से होगा या सातवें भाव का सम्बंध राहु या शनि से होगा तब वह व्यक्ति सिने तारिका या कार्यालय से कार्यरत विपरीत लिंगी से विवाह कर जीविका साधन बना सकता है। साथ में यदि पांचवें तथा ग्यारहवें भाव का सम्बंध भी सातवें भाव से हो तो मनुष्य अन्य जाति में विवाह सम्बंध स्थापित कर लेता है। कर्म भाव से गुरू स्वराशि का शैक्षिक व्यवसाय का द्योतक है। नवम का स्वामी शनि आयेश का स्वामी मंगल, धनेश चन्द्रमा का लग्न में होना व्यक्ति को प्राप्त होता है। उच्च का शुक्र भाग्य स्थान पर, भाग्येश गुरू की इस पर दृष्टि हो जो जातक के लिये भाग्यदायी होगा। भाग्येश में राहु संघर्षशील बनता है। दशमेश मंगल पराक्रम भाव में स्थित होकर भाग्येश को अधिक संघर्षमय बनाता है। तुला लग्न के व्यक्ति निर्माण क्षेत्र में अग्रणी होते हैं। दशम पर चन्द्र की पूर्ण दृष्टि–शनि–चन्द्र की दृष्टि, गुरू सूर्य, मंगल, बुध, चंद्र की दृष्टि विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों से सम्पर्क कराकर कॉलोनी का ठेकेदार बना देती है। यदि हम सम्पादन से जुड़ी एक महिला की कुंडली देखें तो हम पायेंगे कि इस महिला का दशम का स्वामी लग्न में हैं, चन्द्र–सूर्य–बुध पद के कारक ग्रह हैं, मंगल का सम्बंध कागज से है। इस कारण यह सम्पादक स्थाई तौर पर पत्रिका या लेखन कार्य से जुड़कर आय करती रहेगी।

केतु–चन्द्र–मंगल की दशम पर दृष्टि, नवमेश दशम में होने से दशम का सम्बंध, बुध, सूर्य, चन्द्र, मंगल, केतु से होने पर जातक औषधि सम्बंधी कर्म या मसाले वगैरा का व्यापार कर सकता है। शुक्र और शनि की दृष्टि से स्त्री के प्रति कुविचार एवं द्वितीय भाव का स्वामी सप्तमेश भी माफिया गिरोह से सम्बंध स्थापित करता है। लेखन द्वारा धन की प्राप्ति की संभावना जब रहती है अगर दशम का स्वामी बुध भाग्य स्थान पर हो दशम में सूर्य हो, व्ययेश कर्म भाव में हो। सूर्य से दशम में गुरू हो। गुरू से लेखन, बुध से गणित, सूर्य से ज्योतिष, मंगल से वैद्यक, केतु से तंत्र, शनि से योग, चन्द्र शुक्र से कामकला का सम्बंध है। इस कुंडली में जल तत्व राशि का प्रभाव ज्यादा होने के कारण शुक्र की दशा में किसी स्त्री के सहयोग से या स्त्री के धन से विदेश व्यापार भी कर सकते हैं। दशम में भाग्येश हो या वह लग्न से दशमेश का सम्बंध हो या सुख भाव में शुक्र गुरू हो नवम में सुखेश हो वे अस्तगत तथा नीच राशि में न हों एवं लग्न में दशमेश हो या वह लग्न को देखता हो तो सत्ता प्राप्ति योग होता है। दशम में दशमेश लग्नेश, सुखेश हो और लग्न से दशमेश का सम्बंध हो या सुख में शुक्र गुरू हो नवम में सुखेश हो पंचम केन्द्र व नवम में सुखेश हो पंचम केन्द्र व नवम में नवमेश हो या अपनी राशि में सुखेश, धनेश, लग्नेश हो और लग्न में नवमेश हो या नवम तथा लग्न में बली शुभ ग्रह हो, केन्द्र में उच्च राशिगत धनेश हो या केन्द्र में धनेश युक्त शुभ ग्रह हो, लग्न में उच्च राशिगत ग्रह हो और केन्द्र में धनेश हो या दशम में सुखेश, लग्नेश तथा नवमेश हो और वे बली दशमेश से युक्त हो या चतुर्थेश में पाप ग्रह हो या लग्न का केन्द्र में शुभ ग्रह हो, लग्न में, उच्च राशि गत ग्रह हो और केन्द्र में धनेश हो या दशम में सुखेश, लग्नेश तथा नवमेश हो और वे बली दशमेश से युक्त हो या चतुर्थेश तथा दशमेव ग्रह ये दोनों बली तथा नवमेश से युक्त दुष्ट हो अथवा चतुर्थेश तथा दशमेश ग्रह परस्पर एक दूसरे की राशि में हो तो उक्त योगों में उत्पन्न मनुष्य का उच्च पद या सत्ता की प्राप्ति होती है। चतुर्थेश की दशा तथा अन्तर्दशा में चतुर्थेश की अधिष्ठित राशि के स्वामी की दशा में दशमस्थ ग्रह की अन्तर्दशा की दशा तथा अन्तर्दशा में चतुर्थेश की अधिष्ठित राशि के स्वामी की दशा में दशमस्थ ग्रह की अन्तर्दशा के आने पर मनुष्य सत्तासीन होता है। कर्क लग्न के व्यक्ति अत्यंत साहसी और कर्मठ होते हैं। सुखेश चन्द्र मंगल तुला राशि के होने के कारण निरन्तर निर्माण कार्य कराते हैं। मंगल दशम का स्वामी होकर सुखेश में बैठा है। सूर्य सप्तम में समाज सेवा के क्षेत्र में अग्रणी बना देगा। भाग्य स्थान स्वराशि गुरू से परेशानी के समय स्वयं सहायता प्राप्त होती रहेगी। केन्द्र के शुभ ग्रह विशेष तौर गुरू सब प्रकार की विघ्न बाधा को हर लेता है।

卐 卐 卐

श्रीधाम 47, हुसैनी बाजार, चंदौसी (उ.प्र.)
फोन :– 9412140444, 9837823450

नवग्रहों का मालिक है 'सूर्य ग्रह'

सरदार सुरेन्द्र सिंह

पूरे ब्राह्मण्ड का मालिक है। हमारा सूर्य ग्रह और सारे के सारे ग्रहों का भी मालिक है। सूर्य ग्रह का एक तरफ अधिकार है। पूरे ब्राह्मण्ड में इसके बिना ब्राह्मण्ड की कल्पना करना भी बेमानी है। सूर्य ग्रह सभी नौ ग्रहों को शामिल कर लिया है, और भी नया ग्रहों की खोज की जा रही है। सभी ग्रहों पर सूर्य ग्रह का प्रभाव होता है। इसके प्रभाव से सभी नौ ग्रह अपना–अपना काम करते हैं। और जातक के जीवन पर अपना अच्छा या बुरा प्रभाव डालते हैं। और जातक को सुखी और सम्पन्न करते हैं। सूर्य ग्रह एक लाल अंगारे का विशाल भण्डार हैं। आज तक वैज्ञानिक भी इसके आस–पास तक पहुंचने का इंतजाम नहीं कर सके सूर्य ग्रह एक चक्के के रथ पर विराजमान रहते हैं। सूर्य ग्रह के रथ में सात घोड़े रहते हैं। दोनों हाथों में कमल का फूल लिये रहते हैं। और कमल का फूल ही इनकी राजगद्दी है। सूर्य ग्रह की कद–काठी भी बहुत कमाल की है। सूर्य के शूरवीर की उपाधी से सम्मानित किया गया है। सूर्य ग्रह कम बालों वाला माना गया है। सूर्य ग्रह को क्षत्रिय जाति का सबसे प्रभावशाली ग्रह माना गया है। या जिस जातक की कुण्डली में सूर्य ग्रह का स्थान अच्छा होता है। उस पर सूर्य ग्रह की अपार कृपा होती है। वह जातक पराक्रमिक होता है। और सभी रास्तों पर सबसे आगे चलता है। उसे आत्म सुख की प्राप्ति होती है। और वह जातक प्रतापी भी होता है। राजसेव शक्ति में भी इसका कोई सानी नहीं होता और जिस जातक की हथेली में सूर्य रेखा होती है। उसके पौ बारह हमेशा रहता है। सूर्य रेखा का हाथ में रहना उतना ही जरूरी है। जितना की अन्धकार में रोशनी की जरूरत होती है। इस प्रकार सूर्य ग्रह सभी नौ ग्रहों का मार्गदाता माना जाता है।

सूर्य रेखा जिस हाथ में है। उस जातक को पुत्र प्राप्ति से कोई भी नहीं रोक सकता और साथ ही साथ स्त्री सुख से भी सूर्य रेखा वाले को आनन्द की प्राप्ति होती है। सूर्य रेखा जिस जातक के हाथ में है उसकी लम्बी आयु मानी जाती है। हमारे जीवान में जितनी भी प्रकार की सब्जी, तेल और सोना, ताँबा, चाँदी और सभी प्रकार की गैस हमें हमारे सूर्य ग्रह ही हमें प्रदान करता है। सूर्य ग्रह हमारी धरती से लगभग 14 करोड़ 90 लाख किलोमीटर की दूरी पर है। सूर्य ग्रह हमें कई प्रकार की बिमारियों से बचाता है। सूर्य ग्रह के कारण मौसम बदलते हैं सूर्य यश और प्रतिष्ठा का जनक माना जाता है। नौ ग्रहों के कुप्रभाव को कम या खत्म करने के लिये अनेक प्रकार के रत्नों की भी उत्पत्ति की है सूर्य ने अपने ही कुप्रभाव को कम करने के लिये माणिक की उत्पत्ति की है। माणिक धारण करने से अनेक प्रकार से जातक सुखी होता है। सूर्य का व्यास 13 लाख 72 हजार किलोमीटर से भी अधिक है और धरती से 27 गुणा अधिक। सूर्य ग्रह ब्राह्मण्ड के सबसे खतरनाक ग्रह के शनि के पिता है। मगर दोनों में पटती नहीं। सूर्य ग्रह सभी ग्रहों का अगवा और केन्द्र बिन्दू है सिर्फ सूर्य ग्रह की अराधना करने से जातक के कई प्रकार के दुःखों से छुटकारा मिलता है।

卐 卐 卐

गुरू कृपा ज्योतिष केन्द्र
नया बस्ती, बाबा कुटी, टाटा नगर
फोन :– 9334628066

ज्योतिर्विद् आर.के.शर्मा

विवाह विलंब की विवेचना

आजकल विभिन्न कारणों से युवक और युवतियों के वैवाहिक कार्य में विलंब होने लगा है। अन्यथा दो–तीन दशक पूर्व पहले तक अधिकांश युवक–युवतियॉ आमतौर पर बीस से चौबीस वर्ष की उम्र से पहले ही वैवाहिक सूत्र में बंध जाते थे। तीस–बत्तीश की उम्र के बाद तो उनके विवाह की संभावनाएं काफी हद तक समाप्त मान ली जाती थी। उसके बाद तो ऐसे वयस्क लोगों को ताउम्र कुंवारे या अविवाहित रहकर ही जीवनयापन करना पडता था। यद्यपि अब स्थितियां बिलकुल बदल चुकी है। अब तो पढे–लिखे वर्ग में युवक पच्चीस से लेकर तीस–बत्तीश वर्ष और युवतियॉ चौबीस से लेकर अट्ठाइश वर्ष की उम्र के बाद जाकर अपने विवाह के विषय में सोच पाते है।

बृहस्पति गुरू की दशा में विवाह ज्योतिष शास्त्र में वैवाहिक कार्य की जानकारी देवगुरू बृहस्पति के अनुसार ज्ञात की जाती है। वैवाहिक कार्य के लिए बृहस्पति को जन्मकुंडली में सर्वाधिक महत्व दिया गया है। इससे ही जातक की विद्या, विवाह, पति, संतान, राजयोग, राजनीति, व्यापार, सुख–शांति, अध्यात्म, विदेश यात्रा सहित उनके बातों का अध्ययन–मनन किया जाता है। वैवाहिक कार्य में बृहस्पति का सर्वाधिक महत्व है।

ज्योतिषीय गणना के अनुसार जिस वर्ष जन्म कुंडली के सप्तम् भाव या लग्न भाव को शनि और बृहस्पति दोनों देखते है या गोचर वश उसमें स्थित रहते है, उस अवधि में जातक के विवाह होने की संभावना रहती है। सप्तमेश की दशाअर्न्तदशा या शुक्र और बृहस्पति की दशाश र्न्तदशा में भी विवाह की प्रबल संभावना रहती है।

जिस वर्ष शनि और बृहस्पति दोनों सप्तम् भाव या लग्न भाव को प्रभावित करते है, गोचरवश भ्रमण करते हुए सप्तम या लग्न भाव से संबध स्थापित करते है या दृष्टि प्रभाव डालकर उन्हें प्रभावित करने लगते है, उस अवधि में वैवाहिक कार्य की संभावना एकाएक बढ जाती है। सप्तमेश की दशाप्रर्त्तदशा या शुक्र और बृहस्पति की दशा–अन्तर्दशा में भी वैवाहिक कार्य के प्रबल योग बनते है। सप्तम् भाव में स्थित बृहस्पति या सप्तमेश के साथ युति बनाकर बैठे ग्रह की दशाअर्न्तदशा या सप्तम् भाव को दृष्टि प्रभाव से प्रभापित करने वाले ग्रह की दशाअर्न्तदशा में भी वैवाहिक कार्य की संभावना बढ जाती है।

ookfgd dk; Z dsvU; ;ks fuEu idkj g S%&

◆ लग्नेश सप्तमेश के साथ हो, तो सप्तमेश की दशाअर्न्तदशा के दौरान भी वैवाहिक कार्य सम्पन्न होता है।

◆ शुक्र सप्तमेश के साथ हो, तो सप्तमेश की दशाअर्न्तदशा के दौरान भी वैवाहिक कार्य सम्पन्न होता है।

◆ लग्न, चंद्र लग्न एंव शुक्र लग्न की कुंडली में सप्तमेश की दशाअर्न्तदशा के दौरान वैवाहिक कार्य सम्पन्न होते देखा है।

◆ शुक्र व चन्द्रमा में जो बली हो, चन्द्र राशि के स्फुट और अष्टमेश के स्फुट को जोडने पर जो राशि आए, उसके गोचरवश बृहस्पति के ऊपर से भ्रमण करने के दौरान वैवाहिक कार्य होता है।

◆ लग्नेश की राशि में पंचम, नवम् में जब गोचरवश शुक्र या सप्तमेश भ्रमण करें।

ookfgd vojks/k dsmik; o cgLifr dksicy cukusdsfy, fuEe mik; djs%&

सात साबुत सुपारी, सात हल्दी की गांठ, सात गुड की ढेली, सात पीले रंग के जनेऊ, सात पीले रंग के फूल, 70 ग्राम चने की दाल 70 सेंटीमीटर पीले रंग का वस्त्र, पीले रंग के सात पीतल के छोटे टुकडे और सरसों का तेल। इन सभी वस्तुओं को एक जगह एकत्रित करके गुरूवार के दिन प्रातःकाल कन्या स्नान करके, मां पार्वती के चित्र सामने रखकर प्रार्थना करे और साथ ही मन ही मन मनौती माने, मां पार्वती से मनोनुकूल वर देने की प्रार्थना करे। इसके बाद कुछ दान–दक्षिणा रखकर उन सभी वस्तुओं को उन्हे ही अर्पित कर दें। अर्थात् पूजा के पश्चात् सभी वस्तुओं को पीले वस्त्र में बांधकर किसी ऐसे सुरक्षित स्थान पर रख दे, जहां किसी की दृष्टि न पडे, तो वैवाहिक कार्य यथाशीघ्र सम्पन्न हो जाता है।

उपरोक्त कार्य सूर्य उदय एंव सूर्य अस्त के मध्य एक ही दिन सम्पन्न करना पडता है। जरूरत मुताबिक तीन महीने के बाद इस उपाय को पुनः किया जा सकता है।

पूजा के दौरान मां पर्वती का पूर्ण श्रृंगार करें षोडषोपचार विधि से पूजा करे, साथ ही निम्न मंत्र की पांच माला जप भी सम्पन्न कर लें।

gsl xkSjh 'kadj/kkfxuh ;Fkk Ro 'kadj fi;kA rFkk eka x: dY;kf.k] dkUr dkUrk lnyHkkeA

卐 卐 卐

फोनः 09417014059

किन कार्यों के लिये उपयोगी है 'बगलामुखी साधना'

दस महाविद्याओं तथा उनकी उपासना पद्धतियों के बारे में संहिताओं, पुराणों तथा तंत्र ग्रंथों में बहुत कुछ दिया गया है। बगलामुखी देवी की गणना दस महाविद्याओं में है तथा संयम–नियमपूर्वक बगलामुखी के पाठ–पूजा, मंत्र जाप, अनुष्ठान करने से उपासक को सर्वाभीष्ट की सिद्धि प्राप्त होती है। शत्रु विनाश, मारण–मोहन, उच्चाटन, वशीकरण के लिये बगलामुखी से बढ़कर कोई साधना नहीं है। मुकद्दमें में इच्छानुसार विजय प्राप्ति कराने में तो यह रामबाण है। बाहरी शत्रुओं की अपेक्षा आंतरिक शत्रु अधिक प्रबल एवं घातक होते हैं। अतः बगलामुखी साधना की, मानव कल्याण, सुख–समृद्धि हेतु, विशेष उपयोगिता दृष्टि गोचर होती है। यथेच्छ धन प्राप्ति, संतान प्राप्ति, रोग शांति, राजा को वश में करने हेतु कारागार (जेल) से मुक्ति, शत्रु पर विजय आकर्षण, विद्वेषण, मारण आदि प्रयोगों हेतु अनादि काल से बगलामुखी साधना द्वारा लोगों की इच्छा पूर्ति होती रही है। बगलामुखी के मंदिर वाराणसी (उत्तर प्रदेश) हिमाचल प्रदेश तथा दतिया (मध्य प्रदेश) में हैं, जहाँ इच्छित मनोकामना हेतु जा कर लोग दर्शन करते हैं, साधना करते हैं। मंत्र महोदधि में बगलामुखी साधना के बारे में विस्तार से दिया हुआ है। इसके प्रयोजन, मंत्र जप, हवन विधि एवं उपयुक्त सामान की जानकारी, सर्वजन हिताय इस प्रकार है –

mís; %& धन लाभ, मनचाहे व्यक्ति से मिलन, इच्छित संतान की प्राप्ति, अनिष्ट ग्रहों की शांति, मुकद्दमें में विजय, आकर्षण, वशीकरण के लिये मंदिर में अथवा प्राण–प्रतिष्ठित बगलामुखी यंत्र के सामने इसके स्तोत्र का पाठ, मंत्र जाप, शीघ्र फल प्रदान करते हैं।

ti LFkku %& बगलामुखी मंत्र जाप अनुष्ठान के लिये नदियों का संगम स्थान, पर्वत शिखर, जगंल, घर का कोई भी स्थान, जहाँ शुद्धता हो उपयुक्त रहता है। परंतु खुले स्थान (आसमान के नीचे) पर यह साधना नहीं करनी चाहिये। खुला स्थान होने पर ऊपर कपड़ा, चंदोबा तानना चाहिये।

oL=k %& इस साधना के समय केवल एक वस्त्र पहनना निषेध है तथा वस्त्र पीले रंग के होने चाहिये, जैसे पीली धोती दुपट्टा, अंगोछा लेकर साधना करनी चाहिये।

i"i ,o ekyk %& बगलामुखी साधना में सभी वस्तु पीली होनी चाहिये, यथा पीले पुष्प, जप हेतु हल्दी की गांठ की माला, पीला आसन।

Hkks$u %& दूध, फलाहार आदि, केसर की खीर, बेसन, केला, बूंदियां, पूरी–सब्जी आदि।

e=k ,o t i fo/kku %& साधक अपने कार्य के अनुसार ^Å âh cxyke[kh lon"Vkuk okp e[k in LrEHk; ftgok dhy; cf) fouk'k; âh Å LokgkA* मंत्र के 1 लाख, अथवा 10 हजार जाप, 7, 9, 11 या 21 दिन के अंदर पूरे करें। किसी शुद्ध स्थान पर चौकी पर, अथवा पाटे पर पीला कपड़ा बिछाएं। उस पर पीले चावल से अष्ट दल कमल बनाएं। उस पर मां बगलमुखी का चित्र, या यंत्र स्थापित कर, षोडशी का पूजन कर, जप आरंभ करना चाहिये। ध्यान रहे कि प्रथम दिन जितनी संख्या में जप करें, प्रतिदिन उतने ही जप करने चाहिये, कम या अधिक जप नहीं।

gou %& जप संख्या का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। इस प्रकार साधना करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

;FkBN /ku ikfIr %& चावल, तिल एवं दूध मिश्रित खीर से हवन करने पर इच्छा अनुसार धन लाभ होता है।

lrku ikfIr %& अशोक एवं करवीर के पत्रों द्वारा हवन से संतान सुख मिलता है।

'k=k ij fot; %& सेमर के फलों के हवन से शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

tsy lsefDr %& गूगल के साथ तिल मिलाकर हवन करने से कैदी जेल से छूट जाता है।

jksx 'kkfr gsrs %& 4 अंगुल की रेड़ी की लकडियां कुम्हार के चाक की मिट्टी तथा शहद, घी, बूरा (शक्कर) के साथ लाजा (खील) मिलाकर हवन करने से सभी प्रकार के रोगों में शांति मिलती है।

o'khdj.k %& सरसों के हवन से वशीकरण होता है। सब वश में हो जाते हैं।

vkd"k.k %& शहद, घी, शक्कर के साथ नमक से हवन करने से आकर्षण होता है।

इस प्रकार, मनोकामना हेतु, श्रद्धा–विश्वास से जप द्वारा कार्य सिद्ध होते हैं।

卐 卐 卐

रोगापचार के टोटके

आचार्य इकबाल सिंह जी

प्रायः हमारे रोजमर्रा के जीवन कुछ ना कुछ बाधाएं व परेशानी लगी रहती है। प्रस्तुत लेख में कुछ ऐसे छोटे–छोटे उपाय दिए जा रहे हैं जिनसे रोजमर्रा होने वाली परेशानियों से मुक्ति पाई जा सकती है।

¼1½ c[kkj gksus ij & तवे को गरम कर सिंक में रखें और उस पर 6 टुकड़े (क्यूब) बर्फ के डालें ऐसा 3 दिन सुबह शाम रोजाना करें बुखार उतर जाएगा यह प्रयोग जिसे बुखार हो रहा हो उसे ही करना है।

¼2½ 'kxj gksus ij & रात्रि को सिर के पास ताँबे के गिलास 7 टुकड़े (क्यूब) बर्फ के डालकर उसके ऊपर एक चम्मच चीनी डाले, प्रातः यह पानी गुलाब के पौधे में डाल दें ऐसा एक हफ्ते तक करें। शुगर लेवल ठीक हो जाएगा।

¼3½ jlksbZ esa cjdr gsrs & रसोई में अन्नपूर्णा की तस्वीर अथवा गुरू नानक देव की चूल्हे के समीप बैठकर भोजन करने वाली तस्वीर लगाए।

¼4½ रक्त में शुगर की मात्रा अधिक होने पर काँसे की कटोरी में गर्म देशी में चेहरा देखकर (छाया पात्र) मंदिर में रख दें ऐसा लगातार 7 दिन मरीज स्वयं करें।

¼5½ chekjh ihNk uk NksMs jgh gks rks& मरीज के कमरे में चारपाई के नजदीक वैद्य धनवंतरी का चित्र लगाएं।

¼6½ xnk jksx gksus ij & दाना फिरंग रत्न के बने गणपति जिनकी सूँड़ बाईं तरफ हो गले में लॉकेट के रूप में धारण करें तथा रात को उतार दिया करें।

¼7½ xnsesl tu gksus ij & किडनी स्टोन का पानी ताँबे के पात्र में पीया करें। पत्थर उसी पात्र में रहने दिया करें।

¼8½ ndku esa cjdr gsrs & 3 गोमती चक्र गल्ले में ठोक दें।

¼9½ 'kh?k rjDdh djus gsrs & घर पर कोई व्यवसाय ना करें कार्यालय लेकर ही करें।

¼10½ l[ke; nkEir; gsrs & पति पत्नी एक दूसरे की तस्वीर अलग–अलग पात्र में शहद में डुबोकर घर पर रखें।

卐 卐 卐

फोन – 9811130920

कमजोर बुध के नकारात्मक प्रभाव

पं० नीरज शर्मा

ज्योतिष शास्त्र हमारे ऋषियों की ऐसी गूढ़तम विद्या है जिसके द्वारा जीवन के प्रत्येक अंश का आंकलन किया जा सकता है वैसे तो ज्योतिष में नौ ग्रहों की अपनी पूरी भूमिका है परन्तु नवग्रहों में भी ^c/k* एक ऐसा महत्वपूर्ण ग्रह है जिसकी आवश्यकता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होती है और जन्मकुंडली में यदि बुध कमजोर या पीड़ित हो तो व्यक्ति को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बुध नवग्रहों में सबसे कम आयु का ग्रह है तथा बारह राशियों में मिथुन और कन्या राशि पर इसका आधिपत्य है। बुध – बुद्धि, चातुर्य, वाकशक्ति, निर्णयशक्ति, याददाश, मामा, त्वचा, मस्तिष्क, सूचना संचार, यातायात आदि का कारक है इसके कारक तत्वों में विशेषतः बुद्धि का बहुत अधिक महत्व है क्योंकि बिना बुद्धि क्षमता के किसी भी कार्य में उन्नति करना कठिन होता है अतः यदि कुंडली में बुध अच्छी स्थिति में हो तो उपरोक्त तत्वों की भी स्थिति अच्छी होती है परन्तु जन्मकुंडली में बुध यदि कमजोर या पीड़ित हो अर्थात छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो नीच राशि (मीन) में हो, अष्टमेश या षष्टेश से प्रभावित हो या केतु के साथ हो आदि किसी भी स्थिति में बुध जब पीड़ित होगा तो ऐसे व्यक्ति की बुद्धि क्षमता अच्छा नहीं होगी वह किसी बात का शीघ्र निर्णय नहीं कर पायेगा, कन्फ्यूज रहेगा।

कमजोर बुध वाला व्यक्ति बहुत कम व्यवहारिक होता है उसे प्रत्येक बात में हिचकिचाहट होती है ऐसे व्यक्तियों की वाणी भी प्रभावशाली नहीं होती बुध पीड़ित होने से व्यक्ति को त्वचा, नर्वस सिस्टम तथा गले के रोग या बोलने समस्या आदि की भी संभावना होती है। जिन बच्चों की कुंडली में बुध कमजोर होता है ऐसे बच्चे गणित तथा अन्य गणना वाले विषयों में सदैव पीछे रहते हैं तथा उनका उच्चारण भी पूर्ण स्पष्ट नहीं होता और उनका लेखन भी स्पष्ट नहीं हो पाता तथा चीजों को जल्दी भूलने की भी समस्या होती है जो लोग बुद्धिक्षमता, गणना या वाणी प्रधान कार्य करते हैं उनके जीवन में बुध ग्रह का बहुत अधिक महत्व होता है यदि आपकी कुंडली में बुध कमजोर है और आप भी उपरोक्त समस्याओं से पीडित हो तो निम्न उपाय अवश्य करें।

उपाय –

(1) ॐ बुध बुधाय नमः का प्रतिदिन जाप करें।

(2) बुधवार को गाय को हरा चारा खिलायें।

(3) बुधवार को गणेश जी को बूँदी के लड्डू चढ़ायें।

(4) घर में हरे पौधे लगायें व उन्हें सींचें।

(5) प्रातःकाल हरी घास पर टहलें।

(6) अच्छे ज्योतिषी से सलाह कर पन्ना भी धारण कर सकते हैं।

卐 卐 卐

फोन – 8979867083

अपने शहर में निःशुल्क ज्योतिषीय समाधान शिविर के लिये सम्पर्क करें
फोन : 011–22435495, 9873295495, 9873295490

मध्य भारत के ठगों का उन्मूलन करने के लिये रलीमैन ने रकम रखी थी। मशहूर ठग अमीर अली उसके आंतक के कारण जबलपुर क्षेत्र छोड़कर भाग गया था। अमीर अली लगभग चार सौ हत्याएं कर चुका था। उसकी ठगी के कारण पूरा क्षेत्र परेशान था। अमीर अली हाथ न आ रहा था। मध्य भारत के ग्वालियर क्षेत्र में वह पहुँच गया था। रलीमैंन ने भी ग्वालियर जाने की योजना बना ली। गर्मी का समय था।

लश्कर के पास आते–आते रलीमैंन को हेरतअंगेज समाचार मिला। लश्कर से इन्दौर जाने वाले व्यापारी रामदास और उसके लड़के को अमीर अली ने अपना शिकार बनाकर मार डाला। घोड़ों पर लदा सारा सामान लूट ले गया। रलीमैन घटना स्थल पर रवाना हो गये। बड़ा दर्दनाक दृश्य था। सेठ रामदास तो बूढ़ा था। इस कारण उसके प्राण निकल गये थे सरलता से, पर उसका लड़का प्रेमदास बीसेक साल का था। गले में रूमाल का फंदा पड़ने के कारण वह छटपटा कर मरा था। आंखें बाहर, जीभ लंबी। रलीमैन एकटक देखते रह गये। उनको लगा प्रेमदास अभी भी उनसे प्राण रक्षा की प्रार्थना कर रहा है। रलीमैन की आँखे डबडबा आयीं। मन भर आया। रलीमैन ने मन ही मन निश्चय कर लिया कि वह अमीर अली ठग को खत्म कर ही दम लेंगे।

लश्कर में डेरा डाल दिया। तम्बू लग गये। उस स्थान को एक छोटी–सी छावनी का रूप दे दिया गया। चारों तरफ सिपाही तैनात हो गये। जिला कलैक्टर के नाते रलीमैन की सुरक्षा का विशेष प्रबंध था।

रात का गहरा सन्नाटा फैल गया था। रलीमैन गहरी नींद में थे। बाहर पहरे पर सिपाही सतर्क थे। यकायक एक सिपाही चौंक पड़ा। देखा, कोई रलीमैन के तम्बू की ओर सावधानी से बढ़ रहा है। उसने दूसरे सिपाही को इशारा किया। दोनों सतर्क हो गये। वह आदमी थोड़ा और आगे आया तो दोनों कड़क उठे। ^^gkYVA toku** मगर वह न रूका। ^^gkYVA** वह जोर से चीखे।

फिर भी वह रूका नहीं। बेखबर बढ़ता रहा।

सिपाही लपके पर तब तक वह गायब हो गया। हलचल मच गयी। सब चारों तरफ खोजने लगे। किधर गया। किधर गया ....। पर उसका कुछ पता न था। चप्पा छान गया, तब रलीमैन की नींद खुल गई। ^^D;k ckr g\ og dlh gypy**

पूछा उन्होंने। उनको सब बतला दिया गया। रलीमैन चुप रह गये। वह फिर लेट गया। उस आदमी का कुछ पता न लगा। तब सिपाही पहले से ज्यादा सतर्क हो गये।

तम्बू में आरामदेह बिस्तर पर लेटे थे, पर नींद न आ रही थी। यकायक कुछ आहट सुनकर चौंक गये। 'कौन?' वह उठकर बैठ गये। पहले तो कुछ न दिखा। फिर यकायक उनके सामने बीसेक साल का एक नवयुवक आकर खड़ा हो गया। उसने दोनों हाथ जोड़ रखे थे। चेहरे पर दर्द और आंखों में आंसू थे।

सर..... मेरा नाम प्रेमदास है। अमीर अली ठग ने मेरा सब लूट लिया। 'अमीर अली।' रेलीमैन चौके।

साब, इस समय वह दो मील पर अपने साथियों सहित पीपल के पेड़ के नीचे सो रहा है। उत्तर दिशा में ... सरकार।

'तुमको कैसे मालूम?' रेलीमैन ने पूछा।

'मैं देख रहा हूँ सरकार। आप उसे फौरन घेर लें।'

'लेकिन तुम मेरे पास आये कैसे?'

'बस, आ गया सरकार।'

'थोड़ी देर पहले क्या तुम्हीं थे?'

'हाँ, सरकार।'

'अच्छा ठीक है।' यकायक रेलीमैन चौंक पड़े, क्या बताया तुमने अपना नाम ... प्रेमदास .... सेठ रामदास का लड़का .. .. अरे तुम्हारी लाश तो मैं कुछ देर पहले देखकर आया था। लेकिन उत्तर देने वहाँ कोई नहीं था।

वह उठकर खड़े हो गये। पथराये से रहे। यकायक वह बाहर आ गये। सबको तुरन्त कूच का आदेश दिया।

देखते–देखते सब उत्तर दिशा की ओर बढ़ चले। पीपल का पेड़ घेर लिया गया। थोड़ी देर की हाथापाई के बाद अमीर अली और उसके साथी गिरफ्तार कर लिये गये। रलीमैन की खुशी का ठिकाना न था।

ठग अली को फाँसी की सजा मिली। उसका जिंदा या मुर्दा लाने पर पाँच हजार रूपये का नकद इनाम था। रलीमैंन ने इस रूपये से प्रेमदास के नाम से एक छोटा–सा चबूतरा मध्य प्रदेश में बनवा दिया।

सर रलीमैन अपनी पुस्तक 'अमीर अली द ग्रेट ठग' में स्वीकार करते हैं कि उसे गिरफ्तार करा देने का श्रेय प्रेमदास की मृतात्मा को है। इस पुस्तक में उन्होंने भारत की पराशक्ति एवं पराविज्ञान की खुले मन से प्रशंसा की है।

卐 卐 卐

डॉ० आचार्य किशोर घिल्डियाल

कौन पहुँचेगा सत्ता के करीब कांग्रेस या भाजपा

इस माह लोकसभा के चुनाव होने वाले हैं सभी भारतीय यह जानना चाहते हैं कि इस बार देश में किसकी सरकार बनेगी आइये ज्योतिषीय दृष्टि से चुनाव परिणाम जानने का प्रयास करते हैं।

भारत की कुंडली

Hkkjr 15@8@1947] 00%01] fnYyh & वृषभ लग्न की इस पत्रिका में वर्तमान समय सूर्य में बुध की दशा 30/4/2014 तक चल रही है इसके बाद 6/9/2014 तक सूर्य में केतु की दशा चलेगी चूँकि अंर्तदशा केतु की होगी जो सप्तम भाव में है जो स्पष्ट रूप से किसी बदलाव को दर्शा रहा है केतु हमेशा से बदलाव करता है केतु के लिये कहा जाता है कि 'केतु छुडावे खेत' अर्थात जो कार्य सुचारू रूप से चल रहा होता है केतु दशा लगते ही वह बदल जाता है अनुभव में भी ऐसा देखा जाता रहा है अतः स्पष्ट रूप से केन्द्र सरकार में बदलाव होगा चूँकि केन्द्र में कांग्रेसी गठबंधन की सरकार है तो उसका जाना निश्चित जान पड़ता है।

आईए कांग्रेस व भाजपा पार्टी की कुंडली का अध्ययन भी करते हैं इसमें हम विशोंत्तरी दशा के अतिरिक्त जैमिनी दशा का प्रभाव भी देखेंगे।

कांग्रेस की कुंडली

कांग्रेस 2/1/1978, 11:59, दिल्ली मीन लग्न की इस प्रत्रिका में वर्तमान समय गुरू में बुध की अंर्तदशा चल रही है जो 12/2/2016 तक चलेगी जिसमें चुनाव समय गुरू/बुध/केतु व गुरू/बुध/शु का प्रत्यंतर चलेगा गुरू चतुर्थ व बुध नवम भाव में है जो क्रमश लग्नेश, कर्मेश, चतुर्थेश व सप्तमेश भी है और उनमें 6/8 की स्थिति है जो पार्टी को नुकसान ही प्रदान करती दिख रही है गोचर में गुरू चतुर्थ व बुध द्वादश में चल रहे हैं जो 5/9 का सम्बंध बना रहे हैं परन्तु 16 मई चुनाव परिणाम वाले दिन गुरू व बुध में 2/12 का सम्बंध होगा जो स्पष्ट रूप से कांग्रेस गठबंधन सरकार का बदलाव दर्शा रहा है चूंकि गुरू कुछ ही माह बाद चतुर्थ से पंचम भाव में जाएंगे जो जनता के कांग्रेस के प्रति मोह भंग का प्रतीक होगा (चतुर्थ भाव जनता का होता है) तथा शनि जनता कारक का गुरू से दृष्टि सम्बंध हो जाएगा वही शनि की पहले से ही दशम भाव स्थित सूर्य, शुक्र पर दृष्टि है जो अब प्रत्यंतर में चल रहा होगा स्पष्ट रूप से बड़े–बड़े कांग्रेसी नेताओं की गद्दी से छुट्टी होना निश्चित कर देगा। इस चुनाव में कांग्रेस अकेली 100 सीटें जीत ले तो बहुत होगा।

जैमिनी दृष्टि से देखें तो कांग्रेस पाटी पर सिंह में धनु की दशा 2/9/2014 तक चलेगी जिनमें 28 व 23 बिंदु है जो उठापटक करवाकर रहेगी वैसे भी दशम भाव में 23 बिन्दु दशानुसार हानिकारक ही है। जो कार्य क्षेत्र में गिरावट बता रहे हैं।

भाजपा की कुंडली

भाजपा 6/4/1980, 11:45

दिल्ली मिथुन लग्न की इस पत्रिका में चुनाव समय सूर्य राहु व सूर्य गुरू (26/2/2015) की अंतरदशा चलेगी उसमें भी चुनाव समय सूर्य में गुरू में गुरू प्रत्यंतर 16/06/2014 तक रहेगा सूर्य दशम भाव में तृतीयेश होकर तथा गुरू तृतीय भाव में कर्मेश होकर बैठा है जिनमें परिवर्तन योग है जो स्पष्ट रूप से भाजपा को सहयोगी दलो द्वारा (गुरू सहयोगी तथा सूर्य पडोसी) सबसे बड़ी पार्टी के रूप में मजबूती प्रदान कर रहे हैं जिससे यह प्रतीत होता है कि पार्टी इन चुनावों में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरेगी परन्तु सरकार बनाने के लिये इसे सहयोगी दलों की जरूरत अवश्य पड़ेगी पूर्ण बहुमत नहीं मिल पाएगा चुनाव के नतीजे वाले दिन (16/5/2014) को गोचर में सूर्य व गुरू में 2/12 का सम्बंध बना होगा जो बदलाव दर्शा रहा है स्पष्ट रूप से भाजपा संगठित केन्द्र सरकार का उदय होना निश्चित जान पड़ता है भाजपा 210–240 सीटें जीतेगी ऐसा जान पड़ता है। जैमिनी दृष्टि से देखें तो भाजपा पर कुंभ में कन्या राशि की दशा चल रही है जिसमें क्रमशः 21 व 30 बिन्दु है तथा यह कुंडली के नवम व चतुर्थ भाव है जो स्पष्ट रूप से भाग्य प्रदत्त सिंहासन प्राप्ति बता रहे हैं।

fo'ks"k & इस वर्ष का वह सन् 1947 का कलैण्डर एक समान है उस वर्ष भी देश में बदलाव आया था इस वर्ष भी बदलाव आएगा।

卐 卐 卐

92 डी, पॉकेट डी–1, मयूर विहार दिल्ली
फोन – 9540715969

मानव जीवन के पुरूषार्थों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है विवाह, विवाह से ही सृष्टि का सृजन वंश क्रम की वृद्धि संभव है, विवाह चाहे जिस रूप में हो वह समाज की अपनी एवं वर्तमान में नवयुवक युतियों की अपनी पसंद है वह इसे साथी एवं समझौते के रूप में स्वीकारें अलग बात है।

जीवन की पूर्णता विवाह से ही संभव है, विवाह सृष्टि का आरंभ है इस चराचर जगत में प्रकृति ने सभी प्राणी मात्र एवं वृक्ष वनस्पति को अपने आप को बढ़ाने की शक्ति प्रदान की है मनुष्य ने स्वविवेक बुद्धि से समाज की रचना कर अपने को नियमों से बाँधा है इसी सामाजिक बन्धन का नाम विवाह है कि दम्पत्ति का दाम्पत्य सुरक्षित रहें सामाजिक बुराई समाज न बढ़ने पाये।

श्रेष्ठतम जीवन साथी की चाह में जीवन को सुखमय बनाने का प्रयास प्रत्येक माता–पिता अपने संतान के लिये करते हैं, सभी का जीवन सुखमय हो जीवन श्रेष्ठतम हो यह जानकर हमारे ऋषि मुनियों ने अनेकों प्रकार के नियम एवं पूजा–पाठ–जप मंत्र अनुष्ठान इत्यादि की रचना की है।

आज की स्थिति में प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या 900 के करीब औसत है फिर भी अनेकों कन्याओं को योग्य वर नहीं मिलते एवं अनेकों अविवाहित रह जाती है विवाह की उम्र भी अभी के वर्षों में सामाजिक व्यवस्था में बदलाव शिक्षा के कारण भी बढ़ी है, बाल विवाह पर सरकार की रोक है ही समाज के खुलेपन ने आपसी सहमति को प्रधान बना दिया ही इस कारण अहं का टकराव बढ़ रहा है।

विवाह का मुख्य बाधक मंगल है जो कि 27 वर्ष तक विवाह में रूकावट देता है शुक्र एकादश होने पर 18 वर्ष में भी विवाह सम्मन्न करवा देता है गुरू 16 से 18 एवं शनि 30–32 वर्ष राहु केतु 36 एवं 42 तक रूकावट प्रदान करते हैं।

मांगलिक होने पर तुलसी विवाह पीपल विवाह या घट विवाह का चलन है यह क्रिया करने के पश्चात भी कोई गारंटी नहीं कि कन्या का वर चिरायु हो

ही या विवाह (तलाक) समाप्त न हो या दूसरा विवाह न हो।

सप्तमेश के जितना पास या गुरू दृष्टि सम्बंध में होगा उतना ही विवाह शीघ्र होगा।

पितृदोष के कारण भी विवाह अत्याधिक विलम्ब से होता है शांति पश्चात ही विवाह सम्पन्न करें अन्यथा यह जीवन को एवं आने वाली संतान को भी प्रभावित करता है।

dU;k ds'kh?k fookg gsrq & कन्या पीपल वृक्ष के समीप दीपदान कर हरीद्रा (हल्दी) वृक्ष देव को समर्पित करें।

कन्या कात्यायनी देवी का पूजन नित्य करें या गौरी पूजन करें। कन्या शिवलिंग का अभिषेक करें, मगर भूलकर भी ज्यादा संख्या में पार्थिव लिंगों का पूजन न करें

कन्या गुरूवार का व्रत रखें, पीला भोजन करें, पीले वस्त्र धारण करें एवं बृहस्पति का पूजन करें।

कन्या अपनी कामनानुसार पति की इच्छा हेतु श्री कृष्ण, श्री विष्णु, श्री राम एवं गणेश, श्री कार्तिकेय देवता का नित्य पूजन समान पति प्राप्ति हेतु करें नृत्य एवं गायन सम्बंधी पति की कामना हेतु गंधर्व का पूजन करें अत्याधिक सुन्दर पति की कामना वाली कन्या कामदेव का पूजन करें।

इंजीनियर की कामना वाली कन्या विश्वकर्मा की आराधना करें शनि दर्शन करें।

डॉक्टर पति की कामना वाली कन्या भगवान धन्वतरी का पूजन एवं भगवान श्री गणेश की आराधना करें।

आई.ए.एस. पति की कामना रखने वाली कन्या सूर्य की आराधना करें एवं पति प्राप्ति की प्रार्थना करें मावे की मिठाई बाँटे घी का दीपक पूर्व दिशा की ओर मुख कर लगायें।

आई.पी.एस. या पुलिसकर्मी की कामना पति रूप में यदि हो तब मंगल (अंगारक) एवं सूर्य की उपासना पति प्राप्ति संकल्प के साथ करें।

शिक्षक पति की कामना वाली कन्या भगवान श्री बृहस्पति की आराधना करें।

लेखक पति की कामना करने वाली कन्या बृहस्पति देव एवं श्री गणेशजी की उपासना करें।

नेता पति की कामना हेतु भगवान श्रीकृष्ण का पूजन एवं शनिदेव की आराधना करें।

पत्रकार पति की कामना हेतु राहु की उपासना कर बृहस्पति पूजन करें।

यदि कन्या यह सुनिश्चित नहीं कर पा रही हो कि मुझे किस प्रकार का पति मिले जो उचित हो तब आप अपने पूजन में मंत्र के साथ यह कहें।

^eukssrkuqlkj ifr nsghA*

यह जोड़ने पर उस समय आपकी मनोदशा होगी उस प्रकार का ही पति आपको प्राप्त होगा ही।

तुम्हें न्यायाधीश पति की कामना हो तब आप भगवान सूर्य एवं चित्रगुप्त की आराधना करें इस प्रकार आप अपनी पसंद का ही पति चुनें कभी भी भावनाओं में बहकर या वशीभूत होकर तत्काल विवाह नहीं करें कुछ दिन आपसी व्यवहार जाने तत्पश्चात ही निर्णय करें साथ ही योग्य व्यक्ति–विद्वान या ज्योतिष की सलाह ले अपना निर्णय स्वयं लेना कभी–कभी उचित नहीं होता है।

सभी प्रकार के पूजन उपायों एवं अनुष्ठानों के पूर्व आप अपने आस–पास के किसी भी योग्य विद्वान से सम्पूर्ण जानकारी एवं पद्धति का ज्ञान प्राप्त कर ही इस ओर अग्रसर हो ताकि आपको सफलता मिलेगी।

अभी जो तत्काल विवाह की अपेक्षा कर रहे हैं वह ज्यादा से ज्यादा पाठ देवता के या मंत्र जाप अधिक संख्या में सम्पन्न करें।

जिनका अभी विवाह सम्पन्न हो रहा हो वह एवं जिन्हें 1–2 वर्षों में संतान की चाह हो वह अभी के समय में ही सन्तानोत्पत्ति के प्रयास मई माह के पूर्व ही सम्पन्न करें ताकि श्रेष्ठतम् भाग्यवर्धक संतान का जन्म हो आपका एवं संतान का भविष्य भी उज्जवल हो सके।

व्यक्ति विशेष की कामना कर कभी भी आराधना न करें हो सकता है कि आपका लगाव क्षणिक या भावनात्मक या लालच से उपजा हो देवता को प्रार्थना करें। कि मेरे योग्य जो श्रेष्ठतम् वर हो वहीं मुझे प्राप्त हो।

मेरा इतना बताने का मतलब यही है कि आप कल्पनालोक के बजाय यथार्थवादी होकर श्रेष्ठतम दाम्पत्य जीवन का आनन्द उठायें न कि कुछ गलत निर्णयों के कारण जीवनदुःखमय हो।

इस जमीन पर आप सुख भोगने हेतु ही जन्मे हैं न कि दुःख उठाने के लिये जीवन के आनन्द पर आपका पूर्ण अधिकार है। छोटी सी भूल जीवन बर्बाद कर देती है आपका एवं आपके परिवार को दुःख उठाने हेतु प्रेरित करती है विवाह सृष्टि का सृजन एवं आपके संसार का आरंभ है, चंद नपुंसकों ने ब्रह्मचर्य को ज्यादा श्रेष्ठ बता दिया है उन्हें कौन समझाये कि ब्रह्मचर्य श्रेष्ठतम होता तो परमात्मा मैथुनी सृष्टि की रचना ही क्यों करता हाँ सयंम आवश्यक है अत्याधिक भोग शरीर का क्षरण करता है, एक बात ओर कभी भी भूलकर कामोत्तेजक औषध ा का सेवन न करें यह आपको बलवान के बजाय कमजोर करती है इनके परिणाम घातक सिद्ध हुए हैं।

卐 卐 卐

फोन – 09926077010

राज्यकारक राहु एवं धनकारक केतु

ज्योतिषविद् अजीत रघुवंशी

प्राचीन ज्योतिष शास्त्रों में यह वर्णन किया गया है कि राहु व केतु क्रमशः शनि व मंगल ग्रहों के छाया ग्रह होने के बावजूद व्यक्ति विशेष के जन्म से लेकर मृत्यु के मध्य स्वतंत्र रूप से अपना फल प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम है। एक आम जनमानस राहु–केतु का नाम सुनते ही नकारात्मकता एवं उसके दुष्प्रभावों के बारे में सोच कर आतंकित हो जाता है। ऐसा इसलिये नहीं होता कि राहु व केतु क्रूर ग्रह होने के कारण सिर्फ अशुभ फल ही प्रदान करते हैं वरन् यह डर इसलिये है क्योंकि लोगों को राहु–केतु के महत्ता का ज्ञान नहीं है।

प्राचीन शास्त्रों एवं पुराणों में राहु व केतु मे उद्दम की कथा भी मिलती है। समुंद्र मंथन के समय जब समुंद्र से अमृत की प्राप्ति हुई तो देवों व राक्षसों में विवाद उत्पन्न हो गया कि इस अमृत का सेवन कौन करे। परिस्थिति को बिगड़ता देख भगवान विष्णुजी ने एक सुन्दरी का रूप धारण कर वहाँ प्रकट हुये, तथा देवों व राक्षसों में स्वयं समान रूप से अमृत वितरित करने का प्रस्ताव रखा। भगवान विष्णु की लीला से राक्षस परिचित न थे तथा उन्होंने विष्णु के सुन्दरी रूप पर मोहित हो अमृत वितरण के प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी। देवों को यह भली–भांति ज्ञात था कि यदि राक्षसों ने अमृत पान कर लिया एवं वे अमर हो गये तो सम्पूर्ण विश्व की मानव जाति के साथ–साथ देवों व अन्य जातियों का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है। इसलिये भगवान विष्णु ने सुन्दरी रूप धारण कर यह प्रस्ताव रखा ताकि राक्षसों को अमृत के सेवन से रोका जा सके। फिर सुन्दरी देवों व राक्षसों को दो अलग–अलग पंक्तियों में खड़ा कर अमृत का सेवन कराने लगीं। एक बार देव को फिर एक बार राक्षसों को सेवन कराती। यह भी भगवान विष्णु की लीला ही थी कि उसी कलश से देवों को अमृत की प्राप्ति होती तो राक्षसों को उसी कलश से मीठा जल मिलता जिसका वे अमृत समझ कर सेवन कर रहे थे। अचानक एक राक्षस को लगा कि राक्षसों के साथ छल किया जा रहा है तथा उस मायावी ने देव रूप धारण कर लिया और देवों की पंक्ति में जाकर खड़ा हो गया। सुन्दरी एक के बाद एक सबको अमृत वितरण करती हुई देवों की पंक्ति में खड़े उस राक्षस के पास पहुँची व उसे देव समझकर अमृत पान करा दिया। परन्तु इससे पहले कि अमृत उस राक्षस के कंठ से नीचे उतरता तथा वह अमर हो जाता, सुन्दरी रूप में भगवान विष्णु ने राक्षस को पहचान लिया तथा अमृत के कण्ठ से नीचे उतरने के पहले ही अपने सुदर्शन से उसका सिर काट दिया। चूंकि अमृत उस राक्षस के कण्ठ तक पहुँच चुका था इसलिये वह दो भागों में कटने के बाद भी अमर हो गया व उसके ऊपर का धड़ 'राहु' कहलाया तथा नीचे का धड़ 'केतु' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

ज्योतिष शास्त्र में वर्णित है कि राहु आलस्य अस्थिरता, उदर रोग का कारक होने के साथ–साथ सम्पत्ति, योगाभ्यास, राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञता यहाँ तक की लोकसभा–विधान के पद का भी कारक है। वहीं केतु की बात की जाये तो वह व्यसन, ठगी, विषाक्त सेवन, अंग–भंग के साथ–साथ अकस्मात धन–लाभ, शत्रु विजय, बहुभाषाभाषी, सफल वक्ता एवं मशीनी कार्यों में प्रवीणता का भी कारक है। राहु तृतीय, छठे एवं दशम भाव का कारक है तो केतु द्वितीय एवं अष्टम भाव का कारक ग्रह है। यदि राहु–केतु अशुभ फल के दाता है तो वे अन्य शुभ ग्रहों से उत्तम परिणाम देने में भी पूर्णतः सक्षम हैं, तो फिर इनसे डरा क्यों जाये वरन् अपनी जन्म पत्रिका में राहु–केतु की स्थिति, दृष्टि, षट्बल, इष्टबल एवं कष्टबल का अध्ययन करवा कर इसे नकारात्मक से सकारात्मक बना शुभ फलों की प्राप्ति कर अपने जीवन को समृद्धशाली बनाने का प्रयास किया जाये।

इस अंक में हम राहु की शुभता पर ही विचार करेंगे ताकि पाठकगण इसे पढ़कर सकारात्मक ज्ञान प्राप्त कर सके एवं भ्रम की स्थिति से बाहर निकल सके। अतः राहु के शुभ प्रभावों का वर्णन उनके कारक भावों के आधार पर

कर रहा हूँ।

rrh; HkkoLFk jkgq dk Qy %& तृतीय भाव में राहु होने पर जातक यशस्वी, पराक्रमी, विवेकशील, दृढ़ निश्चयी, योगाभ्यासी, धन–धान्य एवं ऐश्वर्य सम्पन्न, विद्वान एवं विद्वानों के संग रहने वाला, अवसर लाभ उठाने में प्रवीण, सुख–समृद्धि युक्त, व्यवसाय करने वाला, शत्रु विजयी एवं शुभ ग्रह युक्त हो तो कण्ठ पर चिन्ह वाला होता है।

f}rh; HkkoLFk ds dk Qy %& द्वितीय भावस्थ केतु (यदि स्वगृही, सिंह, कन्या, वृश्चिक या धनु राशि में हो) होने पर जातक सुख–सम्पन्नता से युक्त होगा एवं धन के कोष में महान वृद्धि करने वाला हो। यदि शुभ ग्रह की युति अथवा दृष्टि प्राप्त कर रहा हो तो केतु जातक को अकस्मात धन प्राप्ति भी कराता है। कभी–कभी तो यह भी देखने को मिलता है कि द्वितीय भावस्थ केतु गुरू की युति में होने पर अपनी अन्तर्दशा अथवा प्रत्यन्तर में जातक को अचानक लॉटरी या सट्टे में बड़ा लाभ करवाता है।

"k"B HkkoLFk jkgq dk Qy %& स्वगृही, उच्च अथवा मित्र राशिस्थ राहु छठे भाव में स्थित होने पर जातक को अत्यंत सबल एवं शत्रु–नाशक बनाता है। ऐसा जातक विधर्मियों से भी लाभ अर्जित कर लेता है तथा अरिष्टों का नाश करने वाला होता है। जातक हर प्रकार से सुखी, ऐश्वर्य सम्पन्न, विद्वान होता है तथा अपने जीवन में कई बड़े–बड़े कार्य सम्पन्न करता है।

,dknk'k HkkoLFk ds dk Qy %& स्वराशिस्थ, उच्च अथवा मित्र राशीस्थ केतु एकादश भाव में स्थित होने पर जातक धन–धान्य से युक्त बनाता है तथा नौकर–चाकर रखने वाला होता है। एकादश भावस्थ केतु जातक को मधुरभाषी, विद्वान, सुन्दर स्वरूप वाला, दर्शनीय, भोगी, उत्तम वस्त्राभूषण युक्त एवं महातेजस्वी बनाता है। ऐसा केतु विशेषतः 45वें वर्ष में धन–पुत्रादि का उत्तम सुख प्रदान करता है।

n'ke HkkoLFk jkgq dk Qy %& दशम भावस्थ राहु होने पर जातक विद्वान, शूरवीर, धन–धान्य–ऐश्वर्य सम्पन्न, शत्रुओं का बल नष्ट करने वाला, राजमंत्री, ग्राम प्रधान, काव्य–नाटक शास्त्र का ज्ञाता, भ्रमणशील एवं वस्त्र व्यवसाय में दक्ष होता है। दशम भाव में चंद्र–राहु की युति विशेष राजयोग कारक होती है।

उपरोक्त सारे फल बताने से पहले शेष ग्रहों की स्थिति, दृष्टि एवं युतियों का भी विशेष ध्यान रखना चाहिये

卐 卐 卐

ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)
फोन :– 9627518446, 9958100901

पाठक सर्वेक्षण व नि:शुल्क ज्योतिषीय परामर्श

प्रिय पाठकों इस सर्वेक्षण से हम आपसे यह जानना चाहते हैं कि आप पत्रिका में किस प्रकार के लेख पसंद करते हैं। जिससे हम आपकी पसंद को ध्यान में रखते हुये 'ज्योतिष गुरू' पत्रिका को और अधिक रोचक, ज्ञानवर्द्धक और सरल रूप में प्रस्तुत कर सके।

कृपया आप निम्नलिखित विकल्पों में से अपने विशेष रूचिकर बॉक्स में (✓) का निशान लगायें :-

ज्योतिष ☐ आयुर्वेद ☐ प्रेरक प्रसंग ☐ पुराण कथा ☐
आध्यात्मिक ☐ यौगिक साधना ☐ कर्म-काण्ड ☐ विविध तंत्र ☐

अन्य विवरण .....

.....

.....

निःशुल्क ज्योतिषीय परामर्श

नाम ..... व्यवसाय ..... स्त्री ☐ पुरूष ☐

जन्म तिथि DD MM YYYY जन्म समय ☐☐☐☐ AM PM जन्म स्थान .....
(शहर एवं राज्य सहित)

फार्म भरने का दिनांक,
समय एवं स्थान .....

पता .....

..... पिन कोड ☐☐☐☐☐☐

फोन ..... ई मेल (यदि है तो) .....

आपका प्रश्न
(केवल एक) .....

प्रपत्र भेजने का पता :
JYOTISH GURU ASTRO POINT
F-8A, Gali No.3, Vijay Block, Near Nathu Sweets, Laxmi Nagar, Delhi-92
Ph.: 011-22435495, Mobile : 9873295490, 9873295495
web.: jyotishgurudelhi.com e mail : jyotishgurumagazine@gmail.com

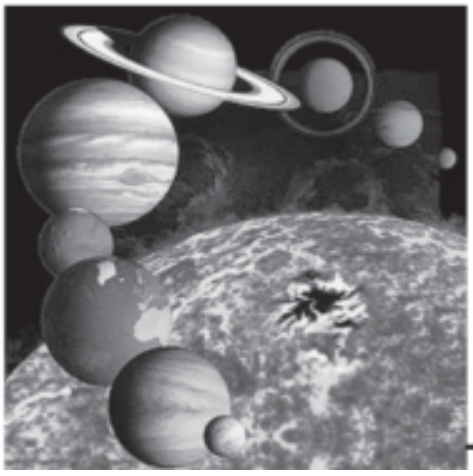

शुभ ग्रह भी महामारक बनते हैं।

डॉ० भवानी शंकर खण्डेलवाल

मनुष्य जन्म का अति महत्व का ध्येय यानि अंतिम यात्रा, जिसकी मृत्यु सुधरी उसका सफल मृत्यु का ज्ञान प्राप्त हो तो मृत्यु सुधर जाती है अंत काल जानने के लिये ज्योतिष शास्त्र यह दो मुख्य मार्ग है। मृत्यु कब और किस तरह होगी इस बारे में ज्योतिष शास्त्र में दिव्य ज्ञान दिया गया है।

ज्योतिष शास्त्र के अनेक ग्रंथ है परंतु कलीकाल में प्रत्यक्ष फलदाई महामुनी पारासर कृत ब्रह्म पराशर होरा शास्त्र मुख्य है।

v"Ve ák;"k% LFkku v"V ekn"V p ;ÙkA r;kjsf; 0;; LFkku ekjd LFkku eP;rsAA

जन्म कुंडली में आठवां स्थान आयुष्य है। जिससे आठवां तीसरा स्थान आयुष्य स्थान माना जाता है। इन दोनों स्थानों में बारहवाँ व्यय स्थान यानी मारक स्थान और उसका अधिपति मारकेश होता है। अब आठवें से बारहवां व्यय स्थान मारक स्थान और उसका अधिपति मारकेश होता है। अब आठवें से बारहवाँ यानि सातवाँ जाया। स्त्री स्थान तीसरे से बारहवें यानि दूसरा स्थान जिसे धन स्थान कहते हैं इस तरह दूसरा और सातवां स्थान मारक स्थान माना जाता है। मतलब की स्त्री और धन यह दो मृत्यु मुख्य कारण है।

1- इस तरह दूसरे और सातवें स्थान को मारक तथा उस भाव के स्वामी को मारकेश कहते हैं। मारकेश की दशा महादशा में मृत्यु होती है।

dsUnkf/kiR; nks"kLr cyoku x: 'kØe;k%A ekjdRosi psr;kskjdsLFkku lfLFkfr%AA

केन्द्र के अधिपति के रूप में गुरू शुक्र हो तो वह अशुभ माना जाता है और वह दूसरे या सातवें स्थान में पड़ा हो तो महामारक कहलाता है। इस तरह शुभ ग्रहों में उत्तम ऐसे गुरू और शुक्र अगर ज्यादा उत्तम स्थान केन्द्र के मालिक बने तो महा अशुभ बनता है। अमृत जहर बनता है। ऐसे ही जहर, जहर अमृत बनता है इस तरह अति सर्वत्र वर्जयेत इस नियम अनुसार केन्द्राधिपति के रूप में गुरू को महादोष लगता है। तथा मारक स्थान 2, 9, 7 वें स्थान जाने से प्रबल मारक बनता है। जिस कारण उनकी दशा महादशा में मृत्यु होती है।

इस तरह शुभ ग्रह केन्द्र के मालिक के रूप में पाराशर ने अशुभ बताया है। उसमें भी एक साथ दो केन्द्र मालिक बनने से अधिक दोषी बनते हैं और वे गुरू शुक्र को ही अधिक दोष कारक मानते हैं। जबकि बुध और चंद्र शुभ ग्रह होते हुये भी केन्द्र अधिपति बनने से प्रमाण कम दोषकारक माना गया है। क्योंकि बुध जिसके साथ वैसा बनने से नैसर्गीक तथा चंद्र क्षय वृद्धि के कारण समान फलदाई नहीं है। इसलिये यहाँ गुरू शुक्र को केन्द्र के मालिक के रूप में अशुभ माना गया है तथा दो केन्द्र के मालिक के रूप में ज्यादा अशुभ माना गया है। साथ ही मारक स्थान में अधिक मारक शांति बताई गई है।

इसका सारांश यही है कि शुभ ग्रह चंद्र के मालिक बनने से चंद्र को कम दोष लगता है चंद्र से बुध ज्यादा और उससे शुक्र और गुरू सबल अशुभ और मारक बनते हैं।

iki xgksHkh 'kHk j{kd cursg %&

djk'ps 'kHk ásssicyk'pksjkÙsjk%A djk% l; Hkks 'ku;% dsn vf/k;k%rfg v'kHksu fn'kfUrA

f=kdks ir;% f=k"kMk; ir;% dsn ir; p Årjksj icyk% HkofUrAA

मंगल त्रिकोण और केन्द्र का मालिक बनता हो यानी योगकारक बनता हो तो वह शुभ फलदाई बनता है और मारक नहीं बनता।

यहां पापग्रह केन्द्र त्रिकोण दोनों का मालिक बनने से योगकारक महाशुभ बनता है। जिससे मारक हानि बनता है।

vc eR; ds;kssdsfo"k; esfopkjs n?kVuk eR; ;ks %&

आकस्मिक मृत्यु के योग देखते हुये क्रूर यानि निर्दयी ग्रहों ही महत्व की भूमिका से मृत्यु होती है।

1- कुंडली में चौथे स्थान पर मंगल और दसवें स्थान पर सूर्य पड़ा हो तो पहाड़ से ऊंचे मकान की छत पर से गिरने से मृत्यु होती है अथवा वाहन से मृत्यु होती है।

2- जिसकी कुंडली में चौथे स्थान पर शनि, सातवें पर चंद्र और दसवें पर मंगल बैठा हो तो नदी, सरोवर या कुएं में गिरने से जल पानी में डुबने से मृत्यु होती है। द्विस्वभाव यानि लगन में सूर्य– चंद्र पड़े हो तो भी जल से मृत्यु होती है।

3- सूर्य और चंद्र कन्या राशि में पड़े हो और उसके ऊपर पापग्रह की दृष्टि पड़ती हो तो पारिवारिक कारणों से आत्महत्या से मृत्यु होती है।

4- चंद्र मंगल के घर में 1, 5, 8 पड़ा हो और पापकर्तरी योग में पड़ा हो तो वह व्यक्ति शस्त्र, अग्नि से या धनुरथी से मृत्यु होती है।

5- अगर चंद्र शनि क्षेत्र में 1, 9, 11 राशि में पड़ा हो और पापकर्मी योग यानि चंद्र के आगे–पीछे पाप ग्रह पड़े हो तो गले में फाँसी या अग्नि से जलकर या किसी भी तरह आत्महत्या कर मृत्यु होती है।

6- पाँचवे और नौवें भाव में पापग्रह पड़े तथा शुभकारी की दृष्टि या समयोग न हो तो जेल में मृत्यु होती है।

7- चंद्र कन्या का सातवें में अकेला पड़ा हो शुभ दृष्टि न हो सूर्य लग्न में और शुक्र दूसरे स्थान पर हो तो स्त्री द्वारा या स्त्री के कारण जातक मृत्यु होती है।

8- सूर्य मंगल चौथे भाव में और दसवें में शनि अशुभ दृष्टि विहीन फाँसी की सजा मृत्यु योग बनता है। इसके अलावा सू, श, श, साथ में 1, 5, 9 साथ में स्थान में चंद्र युक्त पड़े हो तो भी शूली फाँसी से मृत्यु होती है।

9- सूर्य चौथा मंगल दसवाँ क्षीण चंद्र से दृष्टि में हो तो फाँसी या गले में फंदा लगाकर मरण होता है।

10- सूर्य दसवां मंगल चौथा तथा शनि दृष्टि योग से वाहन द्वारा या वाहन दुर्घटना से मृत्यु होती है।

eR; dk LFkku %& उदीत लग्न नवमांश अधिपति ग्रह अथवा अष्टम स्थान उसमें पड़े हुये ग्रह अथवा आठवें में कोई ग्रह होती है।

jkf'k vuqlkj %& es"k & भेड़ बकरियाँ चरने की जगह, o"kHk & बैलों की जगह, feFkqu & घर, ddZ & कुआँ, तालाब, flag & जंगल, dU;k & तालाब, नदीतट, rqYkk & बाजार, of'pd & खड्डा, गुफा, /kuq & घोड़ों का तबेला, edj & जल प्रदेश, dHk & घर, ehu & जलाशय।

ग्रहों के आधार पर स्थल नीचे अनुसार –

lq; & धर्म स्थान, चंद्र फार्म हाऊस, बगीचा, exy & फैक्ट्री, होस्पिटल या युद्ध का मैदान, c/k & खेल की जगह, xq: & पैसे रखने का स्थान, 'kØ & अपना बेडरूम, 'kfu & अशुद्ध जगह ऊपर बताए अनुसार अंतिम स्थान का निर्णय करना चाहिये।

eR; dk le; %&

1- दूसरे और सातवें को मारक माना गया है। मारकेश की दशा अंतरदशा में मृत्यु होती है।

2- मारकेश सूर्य चंद्र बनते हो तो उसे छोड़कर 21 स्थान में जो अन्य मारक बनता हो उसकी महादशा या उसकी अंतर दशा में मृत्यु होती है।

3- मारक स्थान में पड़ा ग्रह या मारकेश या अष्टमेश उसमें जो ज्यादा बलवान हो सकी अंतर दशा में मृत्यु होती है।

4. तमाम मृत्यु कारक ग्रहों में सर्वोपरी मारक शनि माना जाता है। शनि कुंडली में अशुभ हो पाप ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो सर्वापरी मारक बनता है।

ijek; ;ksx %& मीन राशि में आखिरी नवमांश में जन्म हो बुध वृषभ के 25 अंश पर से और अन्य ग्रह उच्च के हो तो 120 वर्ष और 5 दिन का आयुष्य होता है।

vkdfLed eR; ;ksx vkj cpko %&

आकस्मिक मृत्यु अथवा महाव्याधि से बचने और पापों में से बचने के लिये नीचे दिये गये मृतसंजीवनी महामृत्युंजय विधान से रोग कष्ट मुक्ति और दुर्घटना में दैविक बचाव होता है।

यह महासंजीवनी महामृत्युजंय पुरश्चरण विद्वान ब्राह्मणों द्वारा सवा लाख का करवाना चाहिये साथ में सुवर्णदान, गौदान, दशांस हवन तर्पण मार्जन और ब्राह्मण भोजन तथा पीड़ित ग्रहों का दान देने से महाव्याधि रोगों में से मृत तथा अपमृत्यु निवारण होता है।

卐 卐 卐

2–ए–17, हाउसिंग बोर्ड,
बांसवाड़ा (राज.)
फोन :– 9414101332

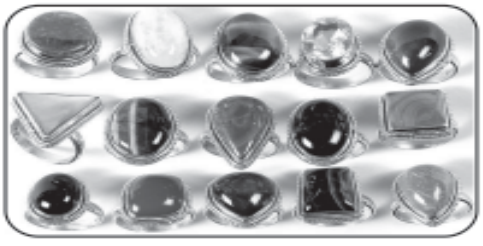

जाने अपना भाग्य रत्न

भाग्य रत्न जानने के लिए अपना जन्म विवरण भेजें और 50 रूपये की डाक टिकिट भेजें हम आपको भेजेंगे एक सूक्ष्म कुण्डली एवं बतायेंगे आपका भाग्य रत्न जिसके धारण करने से आपका भाग्य प्रबल होगा और जीवन में आ रही बाधायें दूर होगी।

नाम .... स्त्री [ ] पुरूष [ ]

जन्म तिथि .... जन्म समय .... जन्म स्थान ....

पता ....

....

राज्य .... पिन कोड ....

फोन .... मोबाईल ....

ई मेल (यदि है तो) ....

JYOTISH GURU ASTRO POINT

F-8A, Vijay Block, Gali No.3, Near Nathu Sweet Laxmi Nagar, Delhi-92
website : jyotishgurudelhi.com e mail : jyotishgurumagazine@gmail.com

Ph. : 011-22435495
(M) 09873295490

विद्या प्राप्ति के आसान उपाय

आरजू पंडित

fo}Ùk p uiRo p uorY; dnkpuA
LonsÓksiT;rsjktk fo}ku lo=k iT;rsAA

भावार्थ यह है कि विद्वान और राजा आपस में कभी भी तुलनीय नही हैं क्योंकि राजा तो केवल अपने देश में ही पूजा जाता है जबकि विद्वान व्यक्ति हर जगह पूज्यनीय होता है, अर्थात विद्वान होना राजा से कई गुना श्रेष्ठ है परन्तु क्या विद्वान बनना सहज कार्य है? शायद नहीं! क्योंकि उच्च शिक्षित व्यक्ति ही विद्वान कहलाता है और उच्च शिक्षा प्राप्त करना कोई बच्चों का खेल नहीं है, जबकि शिक्षा की शुरुआत बालापन से ही होती है। प्रत्येक अभिभावक अपने सामर्थ्य के अनुसार अपने बालक को अच्छे से अच्छे विद्यालय में विद्या अध्ययन के लिए दाखिला दिलाता है। अच्छे विद्यालय में दाखिला लेने के बावजूद भी बहुत से विद्यार्थी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते। यद्यपि उच्च अंकों को प्राप्त करने का प्रयास तो सभी बच्चें करते हैं परन्तु कुछ बच्चें असफल भी रह जाते हैं। कई बच्चों की समस्या होती है कि कड़ी मेहनत के बावजूद उन्हें अधिक याद नहीं रह पाता, वे कुछ न कुछ जबाव भूल ही जाते हैं। जिस वजह से वे बच्चें परीक्षा में उच्च अंकों से उत्तीर्ण नहीं हो पाते अथवा असफल हो जाते हैं। भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म कुंडली के पंचम भाव से विद्या का विचार किया जाता हैं। विद्या एवं वाणी का निकटस्थ संबध है। इसलिए विद्या का विचार करने के लिए द्वितीय भाव का भी विचार करना चाहिए।

विद्या प्राप्ति के मामले में जातक के मानसिक संतुलन एवं मन की स्थिति का आंकलन किया जाना भी आवश्यक होता है। अतः विद्या के लिए कारक ग्रह बुध के साथ–साथ चन्द्रमा का भी विचार किया जाता है। ज्योतिष के अनुशार असफलता का कारण बच्चे की जन्म कुंडली में चंद्रमा और बुध पर अशुभ प्रभाव है। कई विद्वानों के अनुसार बुध तथा शुक्र की स्थिति से व्यक्ति की विद्वता एवं सोचने की शक्ति का विचार किया जाता है। शास्त्रों के अनुसार बुध विद्या, बुद्धि और ज्ञान का स्वामी ग्रह हैं, इस लिये 12 वर्ष से 24 वर्ष की उम्र विद्याध्ययन की होती है, चाहे वह किसी प्रकार की विद्या हो, इस अवधि को बुध का दशा काल माना जाता हैं। जातक में विद्या की स्थिरता, अस्थिरता एवं विकास का आंकलन बृहस्पति (गुरु) से किया जाता है। चंद्रमा और बुध का संबंध विद्या से है, क्योकि मन–मस्तिष्क का कारक चंद्रमा है, और जब चंद्र अशुभ हो तो चंचलता लिए होता है जिससे मन–मस्तिष्क में स्थिरता या संतुलन नहीं रहता एवं बुध की अशुभता की वजह से बच्चे में तर्क व कुशाग्रता की कमी आती है। इस वजह से बच्चें का मन पढाई मे कम लगता हैं और अच्छे अंकों से बच्चा उत्तीर्ण नहीं हो पाता। जब बात विदेशी भाषा एवं शिक्षा की हो तो इसका विचार शनि की स्थिति से किया जाता हैं।

आइए जानते हैं कि किन ज्योतिषीय योगों के कारण विद्यार्थी को विद्या प्राप्ति में रुकावट का सामना करना पड़ता है :–

यदि बृहस्पति (गुरु) ग्रह जन्म कुंडली में पंचम भाव में अकेला स्थित हो तो विद्या प्राप्ति में स्थाई या अस्थाई रुप बाधांए आती हैं।

यद्यपि बुध एवं शुक्र की युति को अच्छा माना गया है लेकिन जन्म कुंडली में पंचम भाव में इनकी युति विद्या प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न करती है।

यदि जन्म कुंडली का पंचमेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो तो माध्यमिक शिक्षा प्रभावित हो सकती है।

शिक्षा प्राप्ति के समय यदि राहु

की महादशा चल रही हो पढ़ाई में रुकावट आ सकती है।

यदि पंचमेश किसी अशुभ ग्रह के साथ स्थित हो या अशुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो जातक उचित शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता या उसकी शिक्षा प्राप्ति में बाधाएं आती हैं।

यदि जन्म कुंडली में गुरु या बुध तीसरे, छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो अथवा शत्रुगृही हो, तो भी शिक्षा प्राप्ति में बाधाएं आ सकती हैं।

यदि जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो या अशुभ ग्रहो का प्रभाव हो, तो भी विद्या प्राप्ति में बाधा हो सकती हैं।

परन्तु जन्म कुंडली में अष्टम भाव में नीच ग्रह, अशुभ, पापी या क्रूर ग्रह स्थित होने से भी जातक कई बार उच्च शिक्षा की प्राप्ति कर लेता है। इस स्थिति में जातक के दूरस्थ स्थान या विदेश में विद्याध्ययन के योग बनते हैं।

f'k{kk çkflr dh ck/kk, nj djusds mik;%&

भारतीय मनीषियों ने मां सरस्वती को विद्या की देवी बताया है। अतः जिस जन्मकुंडली में चंद्रमा और बुध पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव हो उसे विद्या की देवी सरस्वती की कृपा प्राप्ति में कठिनाई होती है। ऐसे मे मां सरस्वती को प्रसन्न कर उनकी कृपा से चंद्रमा और बुध ग्रहों के अशुभ प्रभावों को दूर किया जा सकता है। लेकिन ध्यान रहे मां सरस्वती उन्हीं की मदद करती हैं, जो मेहनत मे विश्वास करते हुए मेहनत करते हैं। बिना मेहनत के कोइ मंत्र–तंत्र–यंत्र परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने मे सहायता नहीं करता है। मंत्र–तंत्र–यंत्र के प्रयोग से एक तरह की सकारात्मक सोच उत्पन्न होती है जो बच्चें को पढ़ाई मे उसकी स्मरण शक्ति का विकास करती है।

विद्या अध्ययन में आने वाली रुकावटो एवं विघ्न बाधाओं को दूर करने हेतु शास्त्रो में कुछ विशिष्ट मंत्रो का उल्लेख मिलता हैं। जिसके जप से पढ़ाई में आने वाली रुकावटें दूर होती हैं एवं कमजोर स्मरण शक्ति में लाभ मिलता है।

¼1½ ljLorh e=k%&

;k dqns r"kkj gkj /koyk ;k 'kHk oL=kojkA

;k oh.kk oj n.M efMr djk ;k 'os inekluk AA

;k cgekP;Ùk 'kdjçHkfrfHk ns% lnk ofUnrk A

lk eke ikr ljLorh Hkxorh fu%'k"s tkM;kigkAA

¼2½ ljLorh e=k rU=k¨Dr%&

;k nsoh loHkrs"k cf):iss.k lfLFkrkA

ueLrL; ueLrL; ueLrL; ue¨ ue%AA

¼3½ fo|k çkflr dsfy;sljLorh e=k%&

?kVk'kygykfu 'k[ke lyspØ /ku% lk;d gLrkCt n?krh /kukUrfoylPNhrk'k rY;çHkkeA

x©jhnsglenHkok f=u;ukek/kkjHkrk egkioke=k ljLorh eusets'kEHkkfn nR;kfnuheAA

¼4½ vR;r ljy ljLorh e=k ç;¨x%&

प्रतिदिन सुबह स्नान इत्यादि से निवृत्त होने के बाद मंत्र जप आरंभ करें। अपने सामने मां सरस्वती का यंत्र या चित्र स्थापित करें । चित्र या यंत्र के ऊपर श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प व अक्षत (चावल) भेंट करें और धूप–दीप जलाकर देवी की पूजा करे तथा अपनी मनोकामना का मन में स्मरण करके स्फटिक की माला से किसी भी सरस्वती मंत्र की शांत मन से एक माला फेरें।

सरस्वती मूल मंत्रः

,sljLoR; ,sue%A

सरस्वती मंत्रः

,sgh Dyh egklljLorh ns; ue%A

सरस्वती गायत्री मंत्रः

1 &¬ ljLoR; fo/keg}scgei=;

/khefg A rUu¨ nsoh çp¨n;krA

2 & okXns; fo/kegsdke jkT;k /khefg A rUu¨ ljLorh% çp¨n;krA

ज्ञान वृद्धि हेतु गायत्री मंत्र :

¬ HkHko% Lo% rRlforojs; Hkx¨ nsoL; /khefg f/k;¨ ;¨ u% çp¨n;krA

परीक्षा भय निवारण हेतुः

¬ ,sgh Jh oh.kk iLrd /kkfj.kh ee Hk; fuokj; fuokj; vHk; nsfg nsfg LokgkA

स्मरण शक्ति नियंत्रण हेतुः

¬ ,sLeR; ue%A

विघ्न निवारण हेतुः

¬ ,sgh Jh vrfj{k ljLorh ije jf{k.kh ee lo fo?u ck/kk fuokj; fuokj; LokgkA

स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिए :

¬ ,sue% Hkxofr on on okXnsfo LokgkA

परीक्षा में सफलता के लिए :

1 & ue% Jh Jh vg on on okXokfnuh Hkxorh ljLoR; ue% Lokgk fo|k nsfg ee gh ljLoR; LokgkA

रामचरित मानस की चौपाई

2 –tsfg ij Ñik djfg tu tkuh] dfo mj vftj upkofg ckuhA

e¨fj l/kkfjfg l¨ lc Hkkrh] tklq Ñik ufg Ñik v?kkrhAA

उपरोक्त मंत्रों में से एक या अधिक का नियमपूर्वक जप करने से विद्या प्राप्ति का मार्ग सुगम होता है।

卐 卐 卐

फोन : 9968332266

आत्मा और परमात्मा

अल्केमिस्ट कहते हैं कि हम खोज रहे हैं वह तत्व जिससे आदमी अमर हो जायेगा। वे कभी न खोज पाएंगे। आदमी अमर है ही, किसी चीज से अमर करने की जरूरत नहीं है। चेतना अमर है ही। और ऐसा मत सोचना कि पदार्थ मरता है और चेतना अमर है। पदार्थ भी अमर है और चेतना भी अमर है। पदार्थ इसलिये अमर है कि वह जीवित ही नहीं है। जो जीवित हो मर सकता है। पदार्थ कैसे मरेगा जब जीवित ही नहीं? इसलिये पदार्थ अमर है, उसकी मृत्यु का कोई उपाय नहीं है।

आत्मा इसलिये अमर है कि वह जीवित है। जो जीवित है वह मर कैसे सकता है? जीवन की कोई मृत्यु नहीं हो सकती, मृत्यु का कोई जीवन नहीं हो सकता। पदार्थ का सिर्फ अस्तित्व है, जीवन नहीं। आत्मा का जीवन भी है और अस्तित्व भी।

इस बात को ख्याल रखें : एक्झिस्टेंस एंड लाइफ बोथ – आत्मा की, पदार्थ की – एक्झिस्टेंस ओनली! पदार्थ सिर्फ है, लेकिन पदार्थ को अपने होने का पता नहीं है। आत्मा है भी और उसे अपने होने का भी पता है। बस यह होने का पता उसे जीवन बना देता है।

हम आत्मा हैं, क्योंकि हम हैं और हमें अपने होने का भी पता है, हम जीवित भी हैं। लेकिन हम क्या हैं, इसका हमें कोई भी पता नहीं। होने का पता हो और यह पता न हो कि क्या हैं, तो अज्ञान की स्थिति है। होने का पता हो और यह भी पता हो कि क्या हैं, तो ज्ञान की स्थिति है।

अज्ञानी में उतनी ही आत्मा है जितनी ज्ञानी में, रत्ती भर कम नहीं है। लेकिन अज्ञानी अपने प्रति बेहोश है, ज्ञानी अपने प्रति होश से भरा हुआ है। ऐसे व्यक्ति जो ज्ञान–अमृत को उपलब्ध हो जाते हैं, वे परलोक में परम परात्पर ब्रह्म हो पाते हैं।

परलोक का क्या अर्थ है? क्या मरने के बाद? आमतौर से हमें यही ख्याल है कि परलोक का अर्थ मरने के बाद है। लेकिन जब आत्मा मरती ही नहीं तो मरने के बाद परलोक का अर्थ ठीक नहीं है। परलोक कहीं मरने के बाद और नहीं है, परलोक अभी और यहीं मौजूद है, जस्ट बाइ दि कार्नर। पर हमें उसका कोई पता नहीं। जिसे अपना पता नहीं उसे परलोक का पता नहीं हो सकता। क्योंकि परलोक में जाने का द्वार स्वयं का अस्तित्व है, स्वयं का ही होना है। जिसे अपना पता है, वह एक ही साथ परलोक और लोक की देहरी पर खड़ा हो जाता है। इस तरफ झाँकता है तो लोक, उस तरफ झाँकता है तो परलोक। बाहर सिर करता है तो लोक, भीतर सिर करता है तो परलोक।

परलोक अभी और यहीं है। ब्रह्म कहीं दूर नहीं है, आपके बिलकुल पड़ोस में है, आपके पड़ोसी से भी ज्यादा पड़ोस में है। आपके बगल में जो बैठा है आदमी, उसमें और आप में भी फासला है। लेकिन उससे भी पास ब्रह्म है। आप में और उसमें फासला भी नहीं है।

जब जरा गर्दन झुकाई देख ली
दिल के आइने में है तस्वीर यार

बस इतना ही फासला है, गर्दन झुकाने का। यह भी कोई फासला हुआ? बाहर लोक है और भीतर परलोक है।

तो ध्यान रखें, लोक और परलोक का विभाजन समय में नहीं, स्थान में है। इस बात को ठीक से ख्याल में ले लें। लोक और परलोक का विभाजन टाइम डिवीजन नहीं है कि मैं मरूंगा, मरने की घटना या विदा होने की घटना समय में घटेगी, और फिर उस मरने के बाद जो होगा वह परलोक होगा। हमने अब तक परलोक को टेंपोरल समझा है, टाइम में

बांटा है। परलोक भी स्पेसियल है, स्पेस में बंटा है, टाइम में नहीं। अभी यही लोक भी मौजूद है, परलोक भी मौजूद है, पदार्थ भी मौजूद है, परमात्मा भी मौजूद है। फासला समय का नहीं, फासला सिर्फ स्थान का है। और स्थान का भी फासला हमारी दृष्टि का फासला, अटेंशन का फासला है। अगर हम बाहर की तरफ ध्यान दे रहे हैं तो परलोक खो जाता है, अगर हम परलोक की तरफ ध्यान दें तो लोक खो जाता है।

रात को आप सो जाते हैं तब लोक खो जाता है। मैं पूछता हूं, क्या आपको तब याद रहता है कि बाजार में आपकी एक दुकान है? आपका एक बेटा है? कि आपकी एक पत्नी है? कि आपका बैंक बैलेंस इतना है? कि आप कर्जदार हैं कि लेनदार हैं? यानी जब सोते हैं तो लोक खो जाता है। लेकिन परलोक शुरू नहीं होता। निद्रा, लोक और परलोक के बीच में है। निद्रा मूर्च्छा है। लोक भी खो जाता है, परलोक भी शुरू नहीं होता।

ध्यान की अवस्था लोक और परलोक के बीच में है। लोक खोता है, परलोक शुरू हो जाता है। जैसे एक आदमी अपने मकान के दरवाजे की दहलीज पर बैठ जाये आंख बंद करके, तो न घर दिखाई पड़े, न बाहर दिखाई पड़े। फिर वह आदमी बाहर की तरफ देखे, तो भीतर का दिखाई न पड़े। फिर वह मुड़कर खड़ा हो जाये, तो भीतर का दिखाई पड़े, बाहर का दिखाई न पड़े।

ऐसी तीन स्थितियां हुई। लोक की– जब हम बाहर देख रहे हैं और कांशसनेस, चेतना बाहर की तरफ जाती हुई हो। परलोकर की – जब चेतना भीतर की तरफ जाती हुई हो।

^T;ksfr"k x:* if=dk dsi dk'ku lslcf/kr lpuk

Qke & IV

¼ns[ksfu;ekoyh & 8 ½

1- idk'ku dk LFkku	&ch 44] xyh u- 4 cãij h] fnYyh 53
2- idk'ku vof/k	&ekfld
3- end dk uke	&dsds'kek
D;k vki Hkkjr dsukxfjd g	&gk
¼vxj fons'kh gksrksey ns'k dk uke ns½	
4-idk'kd dk uke	&dsds'kek
D;k vki Hkkjr dsukxfjd g	&gk
¼vxj fons'kh gksrksey ns'k dk uke ns½	
5- l iknd dk uke	&dsds'kek
D;k vki Hkkjr dsukxfjd g	&gk
¼vxj fons'kh gksrksey ns'k dk uke ns½	
6-mu O;fDr;ksdsuke vkj irs tkslekpkj if=dk dsLokeh vkj fgLlsnkj g ;k ,d ifr'kr lsvf/kd ds'ks;jgkYMj gA	&&dsds'kek

e] ¼dsds'kek½] ,rn}kjk ?kks".kk djrk g fd Åij fn;k x;k leLr fooj.k esjh tkudkjh vkj fo'okl dsvuqlkj lR; gA

gLrk{kj

dsds'kek

जब कहा जाता है कि परलोक में व्यक्ति आनंद को उपलब्ध होता है, तो क्या इसका यह मतलब है कि जिस व्यक्ति ने ब्रह्म का जाना, आत्मा ही अमरता को जाना, वह मरने के बाद आनंद को उपलब्ध होगा और अभी नहीं होगा? नहीं, अभी हो जायेगा।, यहीं हो जायेगा। लेकिन जो व्यक्ति इस अमृतत्व को नहीं जानता वह उस परलोक में, उस भीतर के लोक में, उस पार के परलोक में कैसे आनंद को उपलब्ध होगा? वह संसार में भी दुःख पाता है, यानी बाहर भी दुःख पाता है, और भीतर भी दुःख पाता है।

इसे ठीक से समझ लें। बाहर इसलिये दुःख पाता है कि जिसको यह ख्याल है कि मृत्यु है, वह बाहर कभी सुख नहीं पा सकता। मृत्यु का ख्याल बाहर के सब सुखों को विषाक्त कर जाता है, पायजनस कर जाता है। बाहर अगर सुख लेना है थोड़ा बहुत तो मृत्यु को बिलकुल भूलना पड़ता है। इसलिये हम मृत्यु को भुलाने की कोशिश करते हैं। लेकिन ध्यान रहे, जिसे भी हम भुलाते हैं उसकी और याद आती है। स्मृति का नियम है, भुलाएं याद आयेगी।

अरथी निकलती है द्वार से तो लोग घर का दरवाजा बंद करके बच्चों को भीतर कर लेते हैं – मौत याद न आ जाये। क्योंकि जिसे मौत याद आ गई उसके जीवन में सन्यास को ज्यादा देर नहीं है। जो मौत को भुला ले वही संसार में हो सकता है। इसलिये मौत को छिपाते हैं, हजार ढंग से छिपाते हैं।

卐 卐 卐

–साभार मैं कहता आंखन देखी–

जातक की जन्मपत्रिका में यदि समस्त ग्रह राहु तथा केतु के मध्य अवस्थित हों तो कालसर्प योग का सृजन होता है। यह दोष जातक के जीवन को संघर्ष से भर देता है। यद्यपि इस दोष की शांति के लिये वैदिक अनुष्ठान का प्रावधान है, तथापि लाल किताब में वर्णित विभिन्न उपाय भी कालसर्प योग के अशुभ प्रभाव को कम करने में सक्षम होते हैं। यह सही है कि लाल किताब में कालसर्प दोष का वर्णन प्राप्त नहीं होता है। फिर भी लाल किताब के आधार पर राहु तथा केतु की शांति तथा प्रसन्नता हेतु किये जाने वाले उपाय विभिन्न प्रकार के कालसर्प दोषों की शांति में भी अपना अच्छा प्रभाव दिखाते हैं।

vur dkyli ;kx %&

राहु तथा केतु क्रमशः प्रथम तथा सप्तम भाव में स्थित हों तो अनंत कालसर्प दोष का सृजन होता है। राहु का उपाय करने से इस कालसर्प दोष के अशुभ प्रभावों में कमी होती है –

◆ बिल्ली की जेर को लाल रंग के कपड़े में डालकर धारण करें।

◆ दूध का दान करें।

◆ चांदी की थाली में भोजन करें।

◆ काले तथा नीले रंग के कपड़े पहनने से बचें।

◆ जेब में लोहे की साबुत गोलियां रखना भी लाभप्रद होता है।

dfyd dkyli ;kx %&

जातक की जन्मपत्रिका में राहु द्वितीय तथा केतु अष्टम भाव में होकर कालसर्प दोष का निर्माण कर रहे हों तो यह कालसर्प दोष कुलिक नाम से जाना जाता है। निम्न उपाय करें।

◆ चांदी की ठोस गोली अपने पास रखें।

◆ सोना, केसर अथवा पीली वस्तुएं धारण करें।

◆ चारित्रिक फिसलन से बचें।

◆ दोरंगा काला, सफेद कम्बल ध र्म स्थान में दान दें।

◆ कान का छेदन भी लाभप्रद होता है।

◆ हाथी के पांव की मिट्टी कुएं में डालें।

okfld dkyli ;kx %&

राहु तृतीय तथा केतु नवम भाव में होकर वासुकि कालसर्प योग बनाते हैं। इस योग के कारण उत्पन्न अशुभ प्रभावों को दूर करने के लिये निम्नलिखित उपाय कल्याणप्रद होते हैं –

◆ हाथी दांत की वस्तु भूलकर भी अपने पास न रखें।

◆ चारपाई के पायों पर तांबे की कील लगवा लें।

◆ रात्रि सिरहाने अनाज रखें तथा प्रातः यह अनाज पक्षियों को खिला दें।

◆ झूठ बोलने से बचें।

◆ स्वर्ण की अंगूठी या कोई भी आभूषण धारण करें।

'k[kukn dkyli ;kx %&

यदि जातक की जन्मपत्रिका में चतुर्थ भावस्थ राहु तथा दशम भावस्थ केतु कालसर्प योग की सृष्टि कर रहे हों तो यह योग शंखनाद कालसर्प योग कहा जाता है।

◆ गंगा स्नान करें।

◆ चांदी की अंगूठी धारण करना लाभप्रद रहेगा।

◆ मकान की छत पर कोयला रखने से बचें।

◆ यदि रोग ज्यादा परेशान कर रहे हों तो 400 ग्राम बादाम नदी में प्रवाहित करें।

◆ चांदी की डिब्बी में शहद भरकर

घर से बाहर सुनसान स्थान में दबा दें।

ine dkyli ;kx %&

पंचम भाव में राहु तथा एकादश भाव में केतु स्थित होकर इस योग की रचना करते हैं। दोष शांति के लिये ये उपाय करें।

◆ अपनी स्त्री के साथ समस्त रीति–रिवाजों के साथ दूसरी बार शादी करें।

◆ घर में गाय या कोई भी दुधारू पशु पालें।

◆ चांदी का छोटा सा ठोस हाथी अपने पास रखें।

◆ दहलीज बनाते समय जमीन के नीचे चांदी का पत्तर डाल दें।

◆ पराई स्त्री से दूर रहें।

◆ नित्य सरस्वती स्तोत्र का पाठ करें।

egkine dkyli ;kx %&

राहु तथा केतु क्रमशः षष्ठ तथा द्वादश भाव में स्थित होकर इस योग की रचना करते हैं। निम्न प्रयोग लाभकारी रहेंगे।

◆ घर में पूरा काला कुत्ता पालें।

◆ काला चश्मा पहनना शुभ होगा।

◆ भाईयों या बहनों के साथ किसी रूप में झगड़ा न करें।

◆ चाल–चलन पर संयम रखें।

◆ कुंआरी कन्याओं का आशीर्वाद लेते रहें।

◆ सरस्वती की आराधना कष्ट दूर करने में सहायक होगी।

r{kd dkyli ;kx %&

इस कालसर्प योग में राहु सप्तम तथा केतु लग्न भाव में स्थित होता है। ये उपाय करें।

◆ भूलकर भी कुत्ता न पालें।

चलते पानी में नारियल बहाएं।

◆ विवाह के समय चांदी की ईंट अपनी पत्नी को दें। ध्यान रहे इस ईंट का बेचना विनाश का कारण होता है। अतः हमेशा संभालकर रखें।

◆ घर में चांदी की ईंट रखें।

◆ किसी बर्तन में नदी का जल लेकर उसमें एक चांदी का टुकड़ा रखकर धर्म स्थान में दें।

◆ तांबे की वस्तुओं को दान में न दें।

◆ तांबे की गोली अपने पास रखें।

ddksd dkyli ;kx %&

यदि राहु अष्टमस्थ तथा केतु द्वितीयस्थ होकर कालसर्प योग की सृष्टि कर रहें हों तो यह योग कर्कोटक कालसर्प योग कहा जाता है। ये उपाय करें।

◆ माथे पर तिलक लगायें।

◆ भडभूजे की भट्ठी में तांबे का पैसा डालें।

◆ चार नारियल नदी में बहाएं।

◆ बेईमानी से पैसे न कमाएं।

◆ सूखे मेवे चांदी के बर्तन में डालकर धर्म स्थान में दें।

◆ जन्म के आठवें मास से कुछ बादाम मंदिर ले जाएं, आधे वहीं छोड़ दें बाकी बचे बादाम अपने पास रख लें। यह क्रिया अगले जन्मदिन आने तक करें।

◆ चांदी का चौकोर टुकड़ा जेब में रखें।

'k[kpM dkyli ;kx %&

जब जातक की जन्म पत्रिका में समस्त ग्रह नवमस्थ राहु तथा तृतीयस्थ केतु के मध्य हो तो इस कालसर्प योग का निर्माण होता है। निम्न उपाय कारगर होंगे।

◆ कुत्ते या दुनियावी तीन कुत्ते (ससुर के घर जमाई, बहन के घर भाई तथा नाना के घर दोहता) का पूरी ईमानदारी से पालन करें।

◆ सोना धारण करें।

◆ केसर का तिलक लगायें।

◆ पीला वस्त्र धारण करें।

◆ सुबह–सुबह पक्षियों को दाना–पानी डालें।

?kkrd dkyli ;kx %&

दशमस्थ राहु तथा चतुर्थ भावस्थ केतु के मध्य समस्त ग्रह स्थित हों तो यह योग बनता है। ये उपाय करें।

◆ सिर खाली न रखें। टोपी या साफा कोई चीज सिर पर हमेशा रखें।

◆ सरस्वती का पूजन करें।

◆ चांदी का चौकोर टुकड़ा जेब में रखें।

◆ सोने की चेन पहनें।

◆ हल्दी का तिलक लगायें।

◆ मसूर की दाल (बिना छिलके वाली) नदी में प्रवाहित करें।

fo"kkDr dkyli ;kx %&

जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित राहु तथा पंचम भाव में विराजमान केतु के मध्य समस्त ग्रहों के होने पर विषाक्त कालसर्प योग का निर्माण होता है। दोष शांति के लिये ये उपाय करें।

◆ मंदिर में दान करें।

◆ तांबे या लाल वस्तु दान न दें।

◆ अस्त्र–शस्त्र घर में न रखें।

◆ सोने की अंगूठी पहनें।

◆ चार नारियल जल में प्रवाहित करना इस योग के अशुभ फलों में न्यूनता लायेगा।

◆ चांदी के गिलास में पानी पीयें।

◆ रात में दूध न पियें।

'k"kukx dkyli ;kx %&

राहु द्वादश भाव में तथा केतु षष्ठ भाव में स्थित होकर शेषनाग कालसर्प योग का निर्माण करते हैं।

लाल मसूर दाल का दान दें।

धर्म स्थान में तांबे के बर्तन में दें।

चांदी का ठोस हाथी घर में रखें।

सोने की चेन पहनें।

सरस्वती का पूजन नीले पुष्पों से करें।

कन्या तथा बहन को उपहार देते रहें।

卐 卐 卐

इस माह की शुरूआत चैत्र शुक्ल पक्ष द्वितीय मंगलवार अश्विनी नक्षत्र में हो रही है। इस माह में पाँच सोमवार तथा पाँच मंगलवार होने के कारण मिश्रित फल मिलेगा लालमिर्च, लालचंदन, लाल वस्त्र आदि लाल रंगों की वस्तुओं में तेजी की संभावना है। अच्छी फसल होने की संभावना है। देश को खनिज पदार्थों सम्बंधी लाभ हो सकता है। विश्व में कहीं बड़ा अग्निकांड हो सकता है। आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा को लाभ तथा कांग्रेस, सपा, जेडीयू आदि पार्टियों को भारी नुकसान होने की संभावना है अरविन्द केजरीवाल को आशा से कम सीटें मिलेगी।

1 viy exyokj & अलसी, सरसों, मजीठ, नमक, कुमकुम, मूँगफली, चीनी, गुड़, शक्कर, चावल, लालमिर्च, सुपारी, पाट, बारदाना, मसूर, बाजरा, छोटी व बड़ी इलायची, मैथोल, सूखे मेवों, लाल रंग की वस्तुओं में अगले दो–तीन दिनों तक तेजी की संभावना है। किसी–किसी वस्तु में तो भारी तेजी आ सकती है। ग्वारगम, खल, ग्वार, बिनौला आदि पशु आहार में विशेष तेजी का योग है। रूई, सफेद, वस्त्र, चाँदी आदि सफेद रंग की वस्तुओं में तेजी का लक्षण है।

4 viy 'kqØokj & गेहूँ, चना, चावल, मैथोल, छोटी व बड़ी इलायची, खाद्य व अखाद्य तेल, देशी तथा वनस्पति घी, चीनी, गुड़, शक्कर आदि इस पदार्थों, रूई, बिनौला आदि में तेजी का लक्षण है।

5 viy 'kfuokj & सभी प्रकार की दलहन, तिलहन में तेजी का रूख रहेगा।

7 viy lkseokj & गेहूँ, चावल, सरसों, अलसी, रूई, कपास, सफेद वस्त्र, मक्का, हल्दी बिनौला, आलू, बाजरा, खाद्य तथा अखाद्य तेल, देशी व वनस्पति आदि में तेजी की संभावना है। ग्वारगम, ग्वार, खल आदि पशु आहार में कुछ गिरावट देखी जा सकती है।

11 viy 'kqØokj & गेहूँ, चावल, चना, लालमिर्च, लालचंदन, लालवस्त्र आदि लाल रंग की वस्तुओं, खाद्य तथा आखाद्य तेल, देशी तथा वनस्पति घी, दलहन, तिलहन, रूई, जौ आदि में मंदी की संभावना है। यह गिरावट जल्दी ही समाप्त हो जायेगी आगे अच्छी तेजी बन सकती है।

14 viy lkseokj & कपास, सूत, कपड़ा, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, नारियल, सुपारी, बादाम, काजू, किशमिश, अंजीर, अखरोट आदि सूखे मेवों हल्दी तुअर, मैथी, तरल द्रव्य पदार्थों, चावल, खोपरा, गोला आदि में तेजी की संभावना है। आज के दिन वर्षा होना बहुत ही शुभफल दायक रहती है।

15 viy exyokj & आज के दिन यदि कोई उत्पात हो तो गेहूँ, जौ, चना आदि का शीघ्र स्टॉक करना चाहिये आगे चार माह बाद बेचने पर अच्छा लाभ मिल सकता है।

19 viy 'kfuokj & सरसों, बिनौला, मूँगफली, मैथोल आदि में तेजी जबकि रूई कपास, सूत में मंदी की लक्षण है सर्राफा बाजार में गिरावट देखी जा सकती है।

21 viy lkseokj & गेहूँ, जौ, तिल, सरसों, रूई, कपास, देशी तथा वनस्पति घी चीन, गुड, शक्कर आदि इस पदार्थों, बिनौला, खल, कालीमिर्च, मूँग, मोठ, अरहर, हल्दी, ज्वार, सुपारी आदि में तेजी का वातावरण रहेगा। किसी–किसी वस्तु में भारी तेजी आ सकती है।

24 viy x:okj & गेहूँ, चावल, तिलहन, दलहन, बिनौला, खल, ग्वार, ग्वारगम, आलू, अदरक, हल्दी आदि मूल पदार्थों, चीनी, गुड़, शक्कर आदि रस पदार्थों, लालमिर्च, कालीमिर्च, अमचूर, सुपारी, नारियल आदि में मंदी की संभावना है। रूई में भारी गिरावट देखी जा सकती है।

28 viy lkseokj & सरसों, मूंगफली, अलसी, अरण्डी, चीनी, गुड़, शक्कर आदि रस पदार्थों, दलहन, तिलहन का बाजार नरम रहेगा। चांदी के बाजार में एक तरफा लाइन चल सकती है।

ukV & यह तेजी मंदी ग्रहों के आधार पर की गई है ग्रहों का प्रभाव एक दो दिन आगे पीछे हो सकता है अतः बाजार का रूख देखकर अपने विवेक के कार्य करें।

卐 卐 卐

चैम्बर ऑफ एस्ट्रोलॉजी एण्ड आयुर्वेद
हनुमान गेट, लाडनूं (राज0)
फोन – 9828424318

नि:शुल्क ज्योतिषीय समस्या समाधान

पाठकों की समस्याओं के समाधान हेतु पत्रिका नि:शुल्क समस्या समाधान कूपन प्रत्येक माह प्रकाशित करती है तथा आने वाले सभी प्रश्नों का उत्तर आगामी अंक में प्रकाशित किया जाता है। यह सेवा निरंतर अब ज्योतिष गुरू एस्ट्रो पॉइंट के अध्यक्ष 'श्री के. के. शर्मा जी' द्वारा यह सेवा प्रदान की जायेगी।

——— पं० के. के. शर्मा ———

i'u 1 %& अपना मकान कहाँ बनाऊँ?
fot; dekj] 30-11-1977] 01%15] ikoVkslkfgcA

mÙkj %& आपका मकान आपके जन्म स्थान से बाहर होने की संभावना नजर आती है।

i'u 2 %& कौन सा काम करना सही रहेगा।
jes'k] 28-07-1986] 05%10] fnYyhA

mÙkj %& आपको घूमने फिरने से सम्बंधित कार्य जैसे टूर एण्ड ट्रेवल्स, मार्केटिंग इत्यादि करना चाहिये।

i'u 3 %& कौन सा रत्न धारण करूँ?
';kefcgkjh xlrk] 12-09-1966] 23%45] fnYyhA

mÙkj %& आपको पन्ना व नीलम रत्न धारण करना शुभ रहेगा।

i'u 4 %& मुझे वर्तमान समय कौन सा रत्न पहनना चाहिये?
jfo dij] 12-08-1963] 08%20] vgenkcknA

mÙkj %& वर्तमान दशानुसार आपको कोई भी पुखराज पहनने का सुझाव देगा परन्तु हमारी गणनानुसार आपको माणिक रत्न धारण करना शुभ रहेगा साथ में गौरी शंकर रूद्राक्ष भी धारण करें।

i'u 5 %& पिछले एक साल से स्वास्थ्य ठीक नहीं है उपाय बताए?
jf'e Bkdj] 17-01-1984] 18%55] y[kuÅA

mÙkj %& वर्तमान दशानुसार आपको चतुर्थ भाव अथवा छाती से सम्बंधित कोई बड़ा रोग हो सकता है अतः पूर्ण इलाज कराएं तथा साथ–साथ महामृत्युजंय जप की 1 माला तथा नारायण कवच का पाठ नित्य करें लाभ होगा।

i'u 6 %& इस बच्चे का जन्म लग्न व राशि बताएं?
jkgy] 04-07-2010] 22%34] fnYyh

mÙkj %& जातक का जन्म लग्न कुंभ व राशि मीन है।

i'u 7 %& बेटी मानसिक रोगी है कोई उपाय बतायें?
iz dekj] 31-10-1990] 15%30] iVukA

mÙkj %& आपकी बेटी को स्वस्थ्य होने में वक्त लगेगा उसे बुध ग्रह के मंत्र का जाप नित्य कराएं ^Å czka czha czkSa l% c/kk; ue%* व पुखराज रत्न की अंगूठी धारण लाभ अवश्य होगा।

i'u 8 %& नौकरी में स्थायित्व नहीं है उपाय बतायें?
ejkjh] 28-1-1978] 3%00] dkuiqjA

mÙkj %& सवा 6 रत्ती का माणिक स्वर्ण अंगूठी में अनामिका में धारण करें।

i'u 9 %& क्या मुझे कालसर्प दोष है?
vt] 10-2-1987] 02%30] ifV;kykA

mÙkj %& आपकी पत्रिका में कालसर्प दोष नहीं है।

i'u 10 %& किस देवता की पूजा करनी चाहिये?
inhi] 9-5-1982] 1%40] mYgkj uxjA

mÙkj %& आप भैरव जी की पूजा करें शुभ रहेगा।

i'u 11 %& क्या मूंगा धारण कर सकती हूँ?
jhVk tu] 11-10-1961] 1%30] vyhx<A

mÙkj %& रीटा जी आप मूंगा अवश्य धारण कर सकती हैं।

i'u 12 %& शनि में शुक्र दशा में कार्य विस्तार होगा या नहीं, दवा की मार्केटिंग का काम सफल होगा या नहीं?
lnhi] 22-9-1970] 2%15] vyhx<A

mÙkj %& संदीप जी आपकी धनु लग्न की पत्रिका में शनि नीच राशि का तथा शुक्र स्वराशि का होकर सम–सप्तक बैठे हैं अतः इस समय आपको कार्य क्षेत्र में विस्तार नहीं करना चाहिये इस समय आप जो कार्य कर रहे हैं वही करते रहें शुभ रहेगा कुछ नया करने की नहीं सोचे दवा की मार्केटिंग का काम अवश्य सफल रहेगा।

mik; %& 27 दिन सूरमा जल प्रवाह करें तथा चाँदी की एक ठोस गोली हमेशा संग रखे कार्यस्थल में कार्यसिद्धि एवं व्यापार वृद्धि यंत्र कार्यालय से मंगवाकर स्थापित करें।

卐 卐 卐

,d i'u dk mÙkj tkuusdsfy;s if=kdk esfu%'kYd leL;k&lek/kku diu Hkjdj dk;ky; irsij Hkst\$A

मेष — चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ

1 viy ls 15 viy rd % इस समय व्यवसाय में काफी उतार–चढ़ाव एवं आर्थिक परेशानियों से सामना रहेगा। स्वभाव में कुछ तेजी और मानसिक तनाव रहेगा सांझेदारी कार्यों में विशेष सावधानी बरतें। इस राशि पर केतु का संचार एवं राशि स्वामी मंगल वक्री होने से मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। अनाज, वस्त्र, फलादि का दान करना शुभ होगा।

16 viy ls 30 viy rd % इस समय समय परिवार में संघर्ष के बावजूद आमदनी के निर्वाह योग्य साधन बनते रहेंगे। धन का खर्च भी अधिक होगा। परन्तु सिर–दर्द, आंखों में कष्ट एवं मानसिक तनाव रहेगा। सरकारी क्षेत्रों से भी कुछ परेशानी रहेगी। उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बंध बनेंगे। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। गत रूके हुए कार्यों में प्रगति होगी। भूमि सम्बंधी कार्यों में परेशानी एवं बनते हुए कार्य बिगड़ सकते हैं। अचानक धन–हानि एवं अत्याधिक धन खर्च होने के संकेत हैं। सावधानी बरतें।

वृष — इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वु, वे, वो

1 viy ls 15 viy rd % इस राशि स्वामी दशम में संचार करने से बनते कामों में अड़चनें एवं व्यवसायिक परेशानियों का सामना रहेगा। अत्याधिक परिश्रम के बाद भी विशेष लाभ में कमी परन्तु धन का खर्च अधिक होगा। गुप्त चिन्ता एवं शत्रु हानि पहुँचाने की चेष्टा करेंगे। संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। परन्तु निर्वाह योग्य आमदनी के साधन बनते रहेंगे। अत्याधिक क्रोध पर नियन्त्रण रखें अन्यथा हानि होगी।

16 viy ls 30 viy rd % इस समय व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। उलझनपूर्ण परिस्थितियों और वातावरण के बावजूद सफलता एवं लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु विलासादि कार्यों पर धन खर्च अधिक होगा। धन का लेन देन करते समय विशेष सावधानी बरतें। किसी निकटस्थ से धोखा मिलने के भी संकेत हैं। माह के अंत में मिश्रित प्रभाव होगा। व्यवसाय में आंशिक सफलता एवं वृथा मानसिक तनाव रहेगा। वाहनादि सुख–सुविधाओं एवं मनोरंजन कार्यों पर खर्च भी अधिक होंगे।

मिथुन — का, की, कु, घ, ड, छ, के, को, हा

1 viy ls 15 viy rd % इस समय किसी मित्र के सहयोग से बिगड़ा कार्य बनेगा विघ्न–बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आमदनी के साधन बनते रहेंगे। परन्तु खर्च भी अधिक रहेंगे। धन का अपव्यय और चोटादि का भय रहेगा। सावधानी बरतें। राशि स्वामी बुध नीच राशिगत होने से घरेलू परेशानियों के कारण मन व्यथित रहेगा। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगा।

16 viy ls 30 viy rd % इस समय बुध नीच राशिगत होने से स्वास्थ्य हानि एवं परिवारिक परेशानी रहेगी। गुप्त चिन्ता एवं चोटादि का भय रहेगा। 20 तारीख के पश्चात हालात कुछ परिवर्तन होंगे। धन लाभ के अवसर मिलेंगे। संतान सम्बंधी चिंता बनी रहेगी। सवारी आदि पर धन का खर्च होगा। गुप्त शत्रुओं से सर्तक रहेगा। माह के अंत में कुछ सुधार होगा। धन लाभ के अवसर मिलेंगे। परन्तु निजी कारणों से उचित लाभ प्राप्त नहीं होगा। क्रय विक्रय करते समय विशेष सावधानी बरतें। वाहनादि से चोटादि का भय रहेगा।

कर्क — ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

1 viy ls 15 viy rd % इस समय प्रयास करने पर धन लाभ के अवसर पहले से बेहतर होंगे। विकट समस्याओं के समाधान होने के अवसर प्राप्त होंगे। सुख–साधनों एवं वाहनादि पर खर्च होगा। नये व्यवसाय की योजना के सम्बंध में उलझनें होंगी। जरा सी भूल से नुकसान होगा। सावधानी बरतें। विद्यार्थी वर्ग को विद्या में उन्नति के अवसर मिलेंगे। माता–पिता का सहयोग प्राप्त होगा।

16 viy ls 30 viy rd % इस समय सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी परन्तु धन का खर्च विलास–मनोरंजन आदि कार्यों पर अधिक होगा। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। अधिकांश समय वृथा कार्यों में व्यतीत होगा। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। मंगल के कारण व्यर्थ के वाद–विवाद से बचें। अन्यथा धन हानि और स्वास्थ्य परेशानी होगी। शुभ–फलदायी रहेगा। किसी मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा। गृह में किसी मंगल कार्य का आयोजन होगा। पदान्नति व मान–सम्मान में वृद्धि होगी।

सिंह

मा, मी, मू, मो, टा, टी, टू, टे

1 viy ls15 viy rd %& इस समय राशि स्वामी सूर्य अष्टम भाव में होने से बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। स्वास्थ्य भी ढीला रहेगा। मित्रों एवं सम्बन्धियों के सहयोग से किसी नवीन कार्य की योजना भी बनेगी। परन्तु कार्यरूप देने में अभी विलम्ब होगा। मानसिक तनाव व धन सम्बंधी चिंता रहेगी। परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे। देश–विदेश यात्रा की योजना बनेगी।

16 viy ls30 viy rd %& आर्थिक हालात कुछ परेशानी वाले रहेंगे। परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे। किसी निकट सम्बंधी के सहयोग से कार्य विशेष में सफलता मिलेगी कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। कोई रूका हुआ कार्य बनने के योग हैं। विदेश सम्बंधी कार्यों में कुछ विघ्न उत्पन्न होंगे। नए–नए सम्पर्क एवं गठजोड़ बनेंगे। भाग्य विकास में सहायक होंगे। शनि–राहु के कारण मानसिक तनाव और कुछ स्वास्थ्य परेशानी रहेगी। शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, शत्रु भय और अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। घरेलू सुख में कमी होगी।

कन्या

टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

1 viy ls15 viy rd %& इस राशि पर मंगल का संचार है। सूर्य की दृष्टि व शनि साढ़ेसाती का प्रभाव भी है। अत्यंत संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आमदनी के साधन बनेंगे। मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें भी बनी रहेंगी। पारिवारिक सहयोग मिलने पर भी कुछ कमी महसूस होगी। व्यवसाय में काफी उतार–चढ़ाव और आर्थिक परेशानियों का सामना रहेगा। स्वभाव में कुछ तेजी और मानसिक तनाव रहेगा।

16 viy ls30 viy rd %& इस समय कार्य व्यवसाय में सांझेदारी के कार्यों में सावधानी बरतें। स्वास्थ्य कुछ ढीला और गुप्त चिन्ता रहेगी परन्तु निर्वाह योग्य आमदनी के साधन बनते रहेंगे। खर्चे की अधिकता रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न और स्वास्थ्य सम्बंधी परेशानियां रहेंगी। परिवार में अधिक खर्च होगा। कुछ परिवारिक कार्यों में मित्र वर्ग के सहयोग से सफलता मिलेगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। उत्साह की भी कमी रहेगी। मानसिक तनाव व असंतोष रहेगा। कर्जा भी लेना पड़ सकता है। ईश्वर का नित्य प्रति ध्यान एवं पूजन करें।

तुला

रा, री, रू, रे, रा, ता, ती, तू, ते

1 viy ls15 viy rd %& इस समय राशि स्वामी शुक्र पंचमस्थ होकर मित्रक्षेत्री है। जिससे कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। व्यवसाय नौकरी में कुछ परिवर्तन का विचार बनेगा। आमदनी कम और धन का अपव्यय होगा। बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। धन लाभ के योग हैं। विदेश सम्बंधी कार्यों में गत किए प्रयासों में सफलता मिलेगी।

16 viy ls30 viy rd %& भूमि–सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। अचानक धन लाभ के योग हैं धन लाभ एवं भाग्योन्नति के योग हैं। शुभ कार्य पर खर्च होगा। माता–पिता व मित्रों के सहयोग से रूका हुआ कार्य बनने के योग हैं। माह के अंत में अचानक खर्च अधिक होगा तथा दीर्घ यात्रा का भी प्रोग्राम बन सकता है। व्यवसाय में आंशिक सफलता एवं विलासादि कार्यों पर खर्च होगा। शनि–राहु की स्थिति इस राशि पर होने से संघर्ष के पश्चात निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। परिवार में शुभ मंगल कार्यों पर खर्च होगा।

वृश्चिक

तो, ना, नी, नू, नो, या, यी, यू

1 viy ls15 viy rd %& इस समय संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। व्यवसाय अथवा नौकरी में परिवर्तन का विचार बनेगा। आमदनी कम व खर्च अधिक होंगे। शरीर कष्ट एवं रक्त विकार का भय होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। धर्म–कर्म में रूचि बढ़ेगी। स्त्री व संतान सम्बंधी चिन्ता रहेगी। शनि की साढ़ेसाती कारण व्यवसाय में दिक्कत होगी।

16 viy ls30 viy rd %& अत्याधिक कठिनाई से निर्वाह योग्ह धन प्राप्त होगा। उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। अपने परिश्रम और उद्यम से लाभ प्राप्त करें। अचानक स्वास्थ्य में विकार और बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न हो। कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेगी। अत्यंत कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति रहेगी। शरीर अस्वस्थ रहेगा। दौड़–धूप एवं घरेलू उलझनें अधिक बढ़ेंगी। आमदनी के साधनों में विघ्न बाधाएं रहेंगी किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा।

धनु

ये, यो, भा, भी, भु, धा, फा, ढ़ा, भे

1 viy ls15 viy rd % इस राशि पर स्वामी गुरू की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। किसी शुभ शुभ कार्य पर धन खर्च होगा। भलाई करने पर भी बुराई मिलेगी। स्वास्थ्य सम्बंधी सावधानी बरतें। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। उलझनपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद सफलता व लाभ मिलेगा।

16 viy ls30 viy rd % इस समय किसी से लेन देन करते समय विवाद उत्पन्न होगा। सतर्कता बरतें। खर्चों की अधिकता होगी। किसी निकट सम्बंधी से धोखा मिलने के संकेत हैं। राशि पर गुरू की दृष्टि होने से मान सम्मान में वृद्धि, कुछ बिगड़े काम बनेंगे। घरेलू कार्यों पर खर्च अधिक होंगे। भूमि–सवारी आदि का क्रय–विक्रय तथा बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। मानसिक तनाव अथवा बाधाओं के कारण परेशानी तथा चिंता रहेगी। माह के अंत में स्त्री–सुख एवं परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा।

मकर

भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

1 viy ls15 viy rd % इस समय आप अपने गुस्से पर काबू रखें नजदीकी भाई बन्धुओं से तनाव एवं मतान्तर पैदा होंगे। कारोबार में उतार–चढ़ाव और संघर्ष रहेगा। धनागमन के साधनों में वृद्धि और परिवार में धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा और गुप्त चिंता बढ़ेगी। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। आलस्य एवं निराशा में वृद्धि होगी। धन का कुछ दुरूपयोग भी होगा।

16 viy ls30 viy rd % इस समय विघ्न बाधाओं और परिश्रम के उपरांत ही धन प्राप्त होगा। स्त्री व संतान की तरफ से चिंता रहेगी। शरीर में कष्ट, उदर विकार व सिर दर्द होगा। क्रोध व उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। कार्य – व्यस्तताएं अधिक रहेंगी। गुजारे योग्य धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त रहेंगे। बनते कामों में अड़चनें पड़ेंगी। परिवारिक जीवन में तनाव व उलझनें होगी। आर्थिक परेशानियां उत्पन्न होंगी। किसी उच्चाधिकारी के सहयोग से विशेष कार्य में सफलता के आसार बढ़ेंगे।

कुम्भ

गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

1 viy ls15 viy rd % इस राशि पर गुरू की दृष्टि होने से शुभ कार्यों पर धन का खर्च होगा। बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। शनि–राहु के कारण किसी प्रिय बन्धु से मनमुटाव व गलतफहमी उत्पन्न हो। कोई मंगल कार्य भी होगा। किसी निकट बन्धु से धोखा मिलने के भी संकेत हैं। व्यवसायिक क्षेत्रों में विशेष चुनौती का सामना करना पड़ेगा। पारिवारिक परेशानी एवं धन का खर्च अधिक होगा।

16 viy ls30 viy rd % इस समय भाग्य स्थान पर शनि–राहु के कारण कुछ सोची योजनाओं में विघ्न उत्पन्न होंगे। निर्वाह योग्य आमदनी के साधन बनते रहेंगे। अत्याधिक परिश्रम के पश्चात निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। व्यवसाय में विघ्न–बाधाएं उत्पन्न होगी। पुरूषार्थ द्वारा किसी कार्य के बनने से खुशी मिलेगी। विद्या के क्षेत्र में अड़चनें और चिंता बनी रहेगी। धर्म–कर्म में रूचि एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। परिवार में सुख साधनों में वृद्धि और अचानक धन लाभ भी होने के योग हैं उन्नति के अवसर मिलेंगे।

मीन

दी, दू, झा, झा, था, दे, दो, चा, ची

1 viy ls15 viy rd % इस राशि मीन राशि पर सूर्य संचार करने से मिश्रित फल प्राप्त होंगे। बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। मानसिक तनाव व परिवार में उलझनें बढ़ेंगी। नये–नये कार्यों की योजना बनेगी और किसी श्रेष्ठ व्यक्ति द्वारा लाभ प्राप्त होगा। धन सम्बंधी परेशानी और किसी उच्च अधिकारी से विरोध पैदा होगा। शरीर कष्ट, मानसिक तनाव व बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

16 viy ls30 viy rd % इस समय निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। मान–सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नए–नए मित्रों के साथ सम्पर्क बनेंगे। विदेश जाने की भी योजना बन सकती है अथवा विदेशी कार्यों में प्रगति होगी। शनि की ढैय्या के कारण मानसिक तनाव, शरीर कष्ट, उदर विकार से परेशानी होगी। उलझनें व समस्याएं उभरती व सिमटती रहेंगी। किसी से भी व्यर्थ का वाद–विवाद न करें। परिवार की ओर से सहयोग कम मिल पाएगा।

'ज्योतिष गुरू' मासिक पत्रिका की सदस्यता लेने पर पाये आर्कषक छूट

अवधि	साधारण डाक	रजिस्टर द्वारा	कोरियर द्वारा
1 वर्ष	₹ 300/–	₹ 500/–	₹ 500/–
2 वर्ष	₹ 550/–	₹ 900/–	₹ 950/–
5 वर्ष	₹ 1400/–	₹ 1900/–	₹ 2400/–
आजीवन	₹ 3000/–	₹ 4500/–	₹ 5000/–

सदस्यता प्राप्त करने पर 5 प्रतिशत छूट पायें हर बार सौभाग्यवर्धक सामग्री खरीदने पर।

यदि आप 'ज्योतिष गुरू' मासिक पत्रिका की सदस्यता लेना चाहते हैं तो नीचे दिये गये फार्म को भर कर, पत्रिका कार्यालय में सदस्यता राशि का बैंक ड्राफ्ट/चैक JYOTISH GURU ASTRO POINT के नाम बना कर भेजें।

No.

सदस्यता फार्म

कृपया फार्म को पूरा एवं साफ–साफ अक्षरों में भरें।

1 वर्ष ☐ 2 वर्ष ☐ 3 वर्ष ☐ 5 वर्ष ☐ आजीवन ☐

नाम ..... स्त्री ☐ पुरूष ☐

जन्म तिथि ..... जन्म समय ..... जन्म स्थान .....

पता .....

.....

राज्य ..... पिन कोड .....

फोन ..... मोबाईल .....

ई मेल (यदि है तो) .....

No. ☐

नाम ..... स्त्री ☐ पुरूष ☐

पता .....

राज्य ..... पिन कोड .....

फोन ..... मोबाईल .....

ई मेल (यदि है तो) .....

JYOTISH GURU ASTRO POINT

F-8A, Vijay Block, Gali No.3, Near Nathu Sweet Laxmi Nagar, Delhi-92

website : jyotishgurudelhi.com e mail : jyotishgurumagazine@gmail.com

Ph. : 011-22435495

(M) 09873295490/5

ए. के. जैन
वास्तु आचार्य

For Health, Wealth & Prosperity

बिना तोड़-फोड़ के वास्तु निवारण करायें
हमारा और आपका.... थोड़ा सा.... योगदान?
परिणाम एक भविष्य महान।

For Appointment
Mobile: +91 9810 430 290

Services :

Commercial Vaastu Residential Vaastu
Pyramids Numerology Fengshui

घर बैठे वास्तु नि:शुल्क समाधान पत्र द्वारा प्राप्त करने के लिए टिकिट लागा लिफाफा व नक्सा भेजें।
घर बैठे लाल किताब पर आधारित कुण्डली जीवन सार के साथ केवल 3100 रूपये में प्राप्त करें।

पत्राचार द्वारा 90 दिनों में ज्योतिष व वास्तु सीखें।

Dimention Vastu Vigyan Kendra
B 72, New Govindpura, Gali No.5
Near Gandhi Park, Delhi - 51
Email : vastu.s.acharaya@gmail.com,

पत्र व्यवहार का पता

Jyotish Guru Astro Point
F-8A, Gali No.3, Near Nathu Sweets
Vijay Block, Laxmi Nagar, Delhi-92
web: www.allvastu.com

WANTED

Third Party Manufacturing Facility Available

Propaganda Distributors/Sales Executive /Franchisees all over India for

FMCG PRODUCTS

as Rubing Cough & Cold Ointment as Cough Drops, Churans, Candies, Pain Oil, Cool Oil, Syrup, Ayurvedic Medicine and Herbal Health Care Products etc.

AN ISO 9001 : 2008 CERTIFIED COMPANY

For details contact : **Shri Vishwanath Ayurved**

Helpline : 08881-292-001, SMS - 9286198832
Email : vishwayurvedherbs@gmail.com

For All Kind of certified gemstone (राशि रत्न) Please contact Helpline No.- 08881-110-110

घुटनों का दर्द,
जोड़ों का दर्द,
कमर दर्द, सियाटिका,
स्पॉण्डिलाइटिस
आदि का सम्पूर्ण इलाज किया जाता है।

शराबी को बिना बताए

शराब छुड़वाएँ

बीड़ी-सिगरेट, गुटका, तम्बाकू, अफीम आदि
मात्र दस दिन में छुड़वाएँ

मरीज घर बैठे दवा मँगाएँ
चिकित्सकों को सैम्पल मुफ्त

To Get free copy of our magazine & for all sexual disorder Call or SMS your Address

For Postel Communication Only : **Vishwanath Herbs India**
18/1, Grd. Floor, P.L. Complex, School Marg, Babarpur (East), Delhi-32

॥ जय माता दी ॥

9711583474
9210063979

महन्त विरेन्द्र शास्त्री

हवन, पूजन, शादी-विवाह, नवग्रह शांति मंत्र जाप,
नामकरण, जन्म पत्रिका, वास्तु शास्त्र आदि
अन्य कर्मकाण्ड के लिए सम्पर्क करें।

CIII B, कच्चा बाग, काली का मन्दिर, नजदीक रामजस स्कूल,
मेट्रो स्टेशन, चादनी चौक, दिल्ली-110006

Aug.2012

M : 07837334792
09478184288

निशा शर्मा

अंक शास्त्र एवं हस्तरेखा विशेषज्ञ

आस्था एस्ट्रोलोजीकल रिसर्च सेन्टर

संतान, कैरियर, शादी, शिक्षा आदि सभी समस्याओं का अंक शास्त्र
एवं हस्तरेखाओं द्वारा ज्योतिषीय समाधान हेतु सम्पर्क करें।
(यहाँ पर सभी प्रकार के यंत्र, माला, राशि रत्न एवं रूद्राक्ष आदि उचित मूल्य पर मिलते हैं)
Nisha Sharma PNB Bank 4163000102019946

197/वार्ड नं.9, मैनिया मोहल्ला, नियर गुडिया शिवालय मन्दिर, मुकेरियन, जिला होशियारपुर (पंजाब)

Dr. Kishan Chand
MD (ALT.MED.)
Reiki Grand Master

ॐ Shanti Reiki Centre

E-946, Upper Ground Floor, Palam Extn. Part-I
Near Ramphal Chowk, Sector-7, Dwarka, New Delhi-110075,

Reiki Training : Degree Ist to Grand mastership

★ A Complete Treatment of body, mind and spirit.
★ Mental, physical and all materialistic Problems.

FREE MASS HEALING EMPOWERMENT

NO MEDICINES
SIDE EFFECTS

Contract Strictly after 6:30 PM only
Ph.+91 9868216162, Resi. +91 11 28086780,
Email - kishandec56@gmail.com

卐

ARCHANA JAIN

Tarot Reader

91-9873502503

★ TAROT CARD READING
★ NUMEROLOGY
★ AURA READING
★ UNIVERSAL HEALER
★ FACE READING

★ HYPNOTHERAPIST
★ MOTIVATIONAL SPEAKERS
★ PSYCHIC READER
★ RELATIONSHIP COUNSELLING

archanamckjain@yahoo.co.in **www.archanaaura.com**

शुल्क 500 रू. दो प्रश्न **M : 09899338999, 09599338999**

E Mail : mj.astrology@gmail.com

JYOTISH ACHARYA MANOJ JAIN (Gold Medalist)

KUNTHUNATH FUTURE POINT

JYOTISH ACHARYA IN VEDIC ASTROLOGY

Deals in : All Types of Gems

फोन द्वारा भी आप अपनी समस्या का ज्योतिषीय समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

1501 रू. में ग्रहों के उपायों सहित जन्म तिथि से 120 वर्षों तक की कुण्डली बनवायें।

1/6830, Gali No.2, East Rohitash Nagar, Shahdra, Delhi-110032

AXIS BANK 911010008988964 (MANOJ KUMAR JAIN)

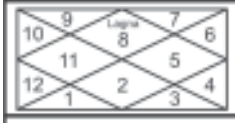

ASTRO-HELP

Registered under Dept. of Labour Certificate No. **2013036579**

All desperate & frustrated people from any kind of problems contact : **"ASTRO-HELP"** (A place for genuine Astrological guidance) GOD is almighty, he definitely bless we all & made solution for every problems. Just like doctor can prescribe medicines I can raise 'HOPE' in you that you might have lost. A little hope can rejuvenate your life further so don't get disappointed. **HAVE TRUST.** Astrology science works as better as your birth data is correct. You can avail our services over phone, on E-mail or personal visit at our office detailed mentioned below. Astrological Remedies/Guidance scientifically acts like vaccination which if taken at the right time fights with the destiny/unfavourable conditions/influences our labour/efforts in right direction to make our life smoother, happier, healthier, wealthier & prosperous.

Our Consultation Charges : for Short Analysis -450/- for detailed Analysis-900/-

Note :- **"ASTRO-HELP"** can also provide **only solution** to a particular problem which a person is facing even if he has no birth detail.

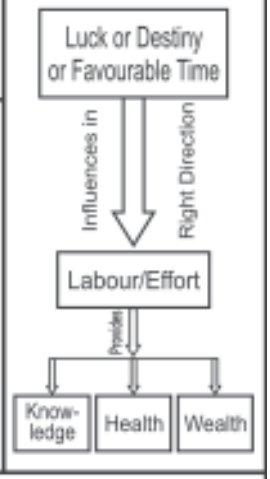

H. No. : 108, Gali No. 6, Near City Hospital, Samaypur, Delhi-110042
M. : 07428583215, 08802549449 • E-mail : astrohelp9771@gmail.com

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

25 वर्षों से सेवा में

खानदानी भारत प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य

आचार्य किशन लाल जी

(गोल्ड मैडलिस्ट)

कुंडली बनवाएं या दिखाएं अपनी समस्या मुझे बतायें आसान हल पायें। ज्योतिष मान सागरी - नक्षत्र मिलान, भृंगु सहिंता, रावण संहिंता लाल किताब द्वारा हल पायें।

शास्त्रों द्वारा संशोधन करके जन्मपत्री, हस्तरेखा देखकर जीवन का पूरा हाल बताते हैं। जैसे नौकरी धन सम्पत्ति घर दुकान फैक्ट्री मानसिक शान्ति कर्जा असाध्य बीमारी गृह क्लेश परीक्षा, विदेश यात्रा, प्यार में धोखा, मंगल दोष, कालसर्प, बिवाह में रुकावट, पति-पत्नी में अनबन शत्रु घरेलु कलह क्लेश पारिवारिक समस्याओं के समाधान हेतु मिलें।

पता : ए-2/18, गेट नं0 6, सेक्टर 8, रोहिणी दिल्ली - 110085

फोन :- 011-27949760, 9891144593, 9313508363, 8586945010

Aug.2012

विश्व विख्यात ज्योतिष आचार्य द्वारा हर समस्या का समाधान

माँ कल्याणी ज्योतिष

बिना जन्मपत्री भविष्य जानिए

बिना तोड-फोड के वास्तु दोष ठीक कराए

कम्प्यूटर व हाथ से बनी जन्मपत्री व मिलान करवायें

वास्तु रत्न व ज्योतिष विशेषज्ञ

मंहत आचार्य पं. तुलसी शर्मा

B-1115, Sec.-7, Avantika, Rohini, Near Masjid, B Block

M. 9540550670, 9213629885

www.astrovaastuexpert.com Email : pt.tulsisharma@gmail.com

नवरत्न धारण करने से भाग्य भी बदल सकता है।

नवरत्न लॉकेट

नवरत्न ब्रेसलेट

नवरत्न अंगूठी

नवग्रहों के दुष्प्रभावों को दूर करने तथा भाग्य परिवर्तन में सहायक नवरत्न लॉकेट, ब्रेसलेट एवं अंगूठी को सप्ताह के किसी भी दिन धारण किया जा सकता है। नवरत्न को स्त्री-पुरुष एवं बच्चा कोई भी धारण कर सकता है।

किसी भी रत्न के शुभ परिणाम के लिए उसकी प्राण प्रतिष्ठा आवश्यक है,
हमारे द्वारा भेजे गये सभी रत्न रुद्राक्ष कवच प्राण प्रतिष्ठा के बाद ही भेजे जाते हैं।

JYOTISH GURU ASTRO POINT

F-8A, Vijay Block, Gali No.3, Laxmi Nagar, Delhi-92

Email : jyotishgurumagazine@yahoo.com, jyotishgurumagazine@gmail.com

Ph. : 011-22435495

(M) 09873295490

अप्रैल 2014, विक्रम संवत : 2071, राष्ट्रीय शक : 1936, चैत्र-बैशाख

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
	गणेश रूद्राक्ष	**1** चैत्र शु. द्वितीया 21:11 अश्विनी 23:28 मेष –– सू. उ. 06:13 सूर्यास्त 18:37	**2** चैत्र शु. तृतीया 20:35 भरणी 24:07 मेष –– सू. उ. 06:11 सूर्यास्त 18:38	**3** चैत्र शु. चतुर्थी 20:41 कृतिका 24:58 वृष 06:16 सू. उ. 06:10 सूर्यास्त 18:38	**4** चैत्र शु. पंचमी 21:29 रोहिणी 26:30 वृष –– सू. उ. 06:09 सूर्यास्त 18:39	यमुना छठ **5** चैत्र शु. षष्ठी 22:56 मृगशिरा 28:38 मिथुन 15:30 सू. उ. 06:08 सूर्यास्त 18:39
6 चैत्र शु. सप्तमी 24:55 आर्द्रा –– मिथुन 15:30 सू. उ. 06:07 सूर्यास्त 18:40	**7** चैत्र शु. अष्टमी 27:14 आर्द्रा 07:14 कर्क 27:22 सू. उ. 06:06 सूर्यास्त 18:40	राम नवमी **8** चैत्र शु. नवमी 29:40 पुनर्वसु 10:06 कर्क –– सू. उ. 06:05 सूर्यास्त 18:41	**9** चैत्र शु. दशमी –– पुष्य 13:02 कर्क –– सू. उ. 06:03 सूर्यास्त 18:42	**10** चैत्र शु. दशमी 08:00 आश्लेषा 15:49 सिंह 15:49 सू. उ. 06:02 सूर्यास्त 18:42	**11** चैत्र शु. एकादशी 10:02 मघा 18:17 सिंह –– सू. उ. 06:01 सूर्यास्त 18:43	**12** चैत्र शु. द्वादशी 11:39 पू.फा. 20:18 कन्या 26:43 सू. उ. 06:00 सूर्यास्त 18:43
महावीर जयंति **13** चैत्र शु. त्रियोदशी 12:44 उ.फा. 21:48 कन्या –– सू. उ. 05:59 सूर्यास्त 18:44	बैशाखी **14** चैत्र शु. चतुर्दशी 13:16 हस्त 22:45 कन्या –– सू. उ. 05:58 सूर्यास्त 18:44	चंद्र ग्रहण **15** चैत्र पूर्णिमा 13:14 हस्त 22:45 तुला 11:02 सू. उ. 05:57 सूर्यास्त 18:45	**16** बैशाख कृ. प्रतिपदा 12:43 स्वाति 23:09 तुला –– सू. उ. 05:56 सूर्यास्त 18:46	**17** बैशाख कृ. द्वितीया 11:44 विशाखा 22:42 वृश्चिक 16:51 सू. उ. 05:55 सूर्यास्त 18:46	गुड फ्राइडे **18** बैशाख कृ. तृतीया 10:23 अनुराधा 21:54 वृश्चिक –– सू. उ. 05:54 सूर्यास्त 18:47	**19** बैशाख कृ. चतुर्थी 08:43 ज्येष्ठा 20:51 धनु 20:51 सू. उ. 05:53 सूर्यास्त 18:47
20 बैशाख कृ. पंचमी 06:49 बैशाख कृ. षष्ठी 28:44 मूल 19:35 धनु –– सू. उ. 05:52 सूर्यास्त 18:48	**21** बैशाख कृ. सप्तमी 26:31 पू.षा. 18:10 मकर 23:48 सू. उ. 05:51 सूर्यास्त 18:48	**22** बैशाख कृ. अष्टमी 24:15 उ.षा. 16:41 मकर –– सू. उ. 05:50 सूर्यास्त 18:49	**23** बैशाख कृ. नवमी 21:59 श्रवण 15:10 कुंभ 26:25 सू. उ. 05:49 सूर्यास्त 18:50	**24** बैशाख कृ. दशमी 19:46 धनिष्ठा 13:41 कुंभ –– सू. उ. 05:48 सूर्यास्त 18:50	**25** बैशाख कृ. एकादशी 17:39 शतभिषा 12:17 मीन 29:21 सू. उ. 05:47 सूर्यास्त 18:51	**26** बैशाख कृ. द्वादशी 15:44 पू.भा. 11:04 मीन –– सू. उ. 05:46 सूर्यास्त 18:51
27 बैशाख कृ. त्रियोदशी 14:03 उ.भा. 11:04 मीन –– सू. उ. 05:45 सूर्यास्त 18:52	**28** बैशाख कृ. चतुर्दशी 12:42 रेवती 09:24 मेष 09:24 सू. उ. 05:44 सूर्यास्त 18:53	सूर्य ग्रहण **29** बैशाख अमावस्या 11:46 अश्विनी 09:08 मेष –– सू. उ. 05:43 सूर्यास्त 18:53	**30** बैशाख शु. प्रतिपदा 11:19 भरणी 09:18 वृष 15:27 सू. उ. 05:42 सूर्यास्त 18:54			

भाग्य पत्रिका
मूल्य 1100/- एवं 550/-
ज्योतिष की सही और सटीक गणना पर आधारित उपायों के साथ वृहद जन्म कुण्डली

मालाएं

रूद्राक्ष माला (साधारण बिना गांठ)	50/–
रूद्राक्ष माला (जप के लिए)	100/–
रूद्राक्ष माला (जीरो नं.)	450/– से 1500/–
रूद्राक्ष + स्फटिक माला	400/–
रूद्राक्ष + मोती माला	700/–
स्फटिक माला	250, 750/–
स्फटिक माला मध्यम (डायमंड कटिंग)	700 से 1050/–
स्फटिक माला उत्तम (डायमंड कटिंग)	1100 से 2100/–
पुत्रजीया माला	100/–
तुलसी माला	90/–
चन्दन माला (लाल)	100/–
चन्दन माला (सफेद)	150/–
कमल गट्टे की माला	75/–
हल्दी माला	90/–
मोती माला	900/– से 2100/–
हकीक माला	225/– से 450/–
बैजंती माला	50/–
मूँगा+मोती माल	950/–
नवरत्न माला (मध्यम)	950/–
नवरत्न माला (उत्तम)	2100/–

मिश्रित सामग्री

घोड़े की नाल	200/–
शनि का छल्ला	10/–
शनि रक्षा कवच	150/–, 999/–
श्वेतार्क गणपति	250/– से 500/–
नर्मदेश्वर शिवलिंग	150/–
लघु नारियल	150/–
वास्तु कम्पास	100/–
राशि के लॉकेट	100/–
अष्टधातु गणेश	1000/–
मूंगा गणेश	900, 1500/–
सिद्ध साई कवच	150/–
तॉबे की अंगूठी	30/–
पंचधातु छल्ला	30/–
कालसर्प अंगूठी	250/–
दक्षिणावर्ती शंख	250, 600/– से 1800/–
लाल गुंजा	05/–
काली गुंजा	15/–
सफेद गुंजा	15/–
गोमती चक्र	10/–
गोमती चक्र (बड़े)	15/–
नजर बट्टू	40/–
तांत्रोक्त नारियल	300/–
काली हल्दी	30/–
लक्ष्मी चरण पादुका	100/–

पारद व स्फटिक

स्फटिक श्रीयंत्र	600/–,950/–2100/–
स्फटिक लक्ष्मी	450/– से 1800/–
स्फटिक गणेश	450/– से 1800/–
स्फटिक शिवलिंग	450/– से 1800/–
स्फटिक लॉकेट	300/–
स्फटिक पिरामिड	250/– से 500/–
स्फटिक सूर्य/चांद	300/–
स्फटिक बॉल	250/– से 500/–
पारद शिवलिंग	500/–,900/–, 1800/–
पारद शिव परिवार	1800/–, 3600/–
पारद दुर्गा	300/– से 1500/–
पारद लक्ष्मी	500/– से 1800/–
पारद गणेश	500/– से 1800/–
पारद लक्ष्मी गणेश	900/– से 2100/–
पारद विष्णु लक्ष्मी	900/– से 2100/–
पारद पंचमुखी हनुमान	900/– से 2100/–

नवरत्न लॉकेट	550/–
नवरत्न लॉकेट (चांदी)	1500/–
नवरत्न ब्रेशलेट	550/–
नवरत्न ब्रेशलेट (चांदी)	1500/–
नवरत्न अँगूठी	550/–
नवरत्न अंगूठी (चांदी)	1250/–

लेबोरटरी टैस्ट सर्टीफिकेट के साथ उपलब्ध

रुद्राक्ष

एक मुखी (काजू दाना)
आत्म विश्वास व ऐश्वर्य प्राप्ति हेतु
₹ 2000

दो मुखी नेपाल
दाम्पत्य सुख, मानसिक शांति व संतोष प्राप्ति
₹ 1100

तीन मुखी
शत्रु बाधा मुक्ति, विजय
₹100 ₹ 450

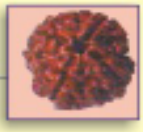

चार मुखी
शिक्षा, एकाग्रता, तनाव मुक्ति
₹ 30

पांच मुखी
अध्यात्मिक उन्नति, ज्ञान एवं स्वास्थ्य
₹ 30

छः मुखी
प्रेम, आर्कषण एवं काम शक्ति
₹ 50

सात मुखी
शनि कष्ट निवारण
₹ 710

आठ मुखी
रोग मुक्ति, बाधा शांति
₹ 1800

नौ मुखी
वीरता, कर्मठता, साहस वृद्धि
₹ 2400

दस मुखी
सफलता, उन्नति, कामयाबी
₹ 2700

ग्यारह मुखी
आय, लाभ, संम्पत्ति
₹ 3500

बारह मुखी
विदेश यात्रा, दरिद्रता नाशक, व्यापार वर्धक
₹ 5500

तेरह मुखी
आकर्षण, सुख, सौंदर्य एवं प्रेम
₹ 7500

चौदह मुखी
सत्ता, शक्ति, यश, कीर्ति
₹ 25000

गौरी शंकर
वैवाहिक सुख, आकर्षण, प्रसन्नता
₹ 4100

गणेश रुद्राक्ष
ऋद्धि, सिद्धि, बुद्धि प्राप्ति हेतु
₹ 550

रुद्राक्ष लॉकेट के रूप में चांदी की चेन सहित लेने के लिए ₹ 1100 रूपये अतिरिक्त।

॥ यंत्र ॥

श्री सूर्य यंत्र
श्री चन्द्र यंत्र
श्री मंगल यंत्र
श्री बुध यंत्र
श्री गुरु यंत्र
श्री शुक्र यंत्र
श्री शनि यंत्र
श्री राहु यंत्र
श्री केतु यंत्र
श्री नवग्रह यंत्र
श्री भैरों यंत्र
वास्तु यंत्र
श्री श्री यंत्र
श्री कुबेर यंत्र
श्री दुर्गा यंत्र
श्री महाकली यंत्र
श्री सरस्वती यंत्र
श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र
श्री पंचागुली यंत्र
श्री नवदुर्गा यंत्र
श्री बगलामुखी यंत्र
श्री दुर्गाबीसा यंत्र
श्री गायत्री यंत्र
श्री हनुमान यंत्र
कालसर्प यंत्र
वशीकरण यंत्र
कार्यसिद्धि यंत्र
श्री कनकधारा यंत्र
श्री गणेश यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र
सम्पूर्ण बाधामुक्ति यंत्र
सम्पूर्ण रोगनाशक यंत्र
सम्पूर्ण कष्टनिवारक यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र
वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र

यंत्र 3X3 गोल्ड प्लेटिड	75/–
यंत्र 3X3 गोल्ड प्लेटिड स्टैण्ड के साथ	150/–
यंत्र 6X6 गोल्ड प्लेटिड	300/–
यंत्र 6X6 गोल्ड प्लेटिड फ्रेम के साथ	450/–
यंत्र 8X8 गोल्ड प्लेटिड	501/–
यंत्र 8X8 गोल्ड प्लेटिड फ्रेम के साथ	700/–

अपनी राशि एवं व्यवसाय के अनुसार अंगूठी मंगवाने के लिए मूल्य राशि का चैक/डी.डी. (JYOTISH GURU ASTRO POINT) के नाम बनाकर भेजें अथवा मनीऑडर करें आप मूल्य राशि हमारे **icici Bank** के खाता संख्या **003705016585** में भी जमा कर सकते हैं।

JYOTISH GURU ASTRO POINT F-8A, Vijay Block, Gali No.3, Laxmi Nagar, Delhi-92
Phone 011-22435495, 65575495, 09873295490, 09873295495
e mail : jyotishgurumagazine@gmail.com
website : www. jyotishgurudelhi.org

Gems on Approval

Always Buy Certified Gems

Toll Free : 1800 3000 5055

Show this adv & get free gift of Rs. 1100/- (for first 100 visitors only)

Franchisees Open

राष्ट्रीय उद्योग रत्न अवार्ड एवं क्वालिटी ब्रांड इन्डिया 2013 अवार्ड से सम्मानित

Mr. Amit Gupta of Gem Mines was recently honoured with the most Prestigious Rashtriya Udyog Ratan Award & Quality Brand of India 2013 from Smt. Jayawanti Ben Mehta, Former Union Minister of Power, Govt. Of India.

Yellow Sapphire पुखराज | Blue Sapphire नीलम | Emerald पन्ना

Ruby माणिक | Hessonite गोमेद | Rudraksha रुद्राक्ष

GIS
www.gis-usa.com

GEM MINES™
CERTIFIED & NATURAL GEMS

Always buy Certified Gems & Hallmarked Jewellery

An ISO 9001:2008 Certified company

M/s. Admantine Jewels, 2547/6, Beadonpura, Gurudwara Road, Karol Bagh, New Delhi

Call us : 098100 91024 / 098100 41024 / 9999691024

अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष वास्तु महासम्मेलन 2014 (दिल्ली)

दिनॉक -26 जुलाई 2014 शनिवार

(YMCA- हॉल) जय सिंह मार्ग, कनाट प्लेस, नई दिल्ली, निकट केन्द्रीय सचिवालय मेट्रो स्टेशन)

(इन्टरनेशनल कॉलेज ऑफ एस्ट्रो वास्तु रिसर्च) उत्तराखण्ड के तत्वाधन मे

(अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष वास्तु महासम्मेलन) आयोजित किया जा रहा है

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करे

पंजीकरण शुल्क-1100रू0

डा0 शुभोद्युती कुमार मंडल/ संस्थापक/अध्यक्ष

फो0- (05944)210066, 210555 मो0-084496-70000 प्रभारी- पं0 के0 के शर्मा - 098732-95490,5,

ग्राम- पंचाननपुर, पोस्ट-दिनेशपुर, ऊ0 सिं0 नगर (उत्तराखण्ड)263160

नोट:- सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले प्रतिभागियों को आने- जाने ठहरने एंव खान- पन की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

रजिस्ट्रेशन एवं मेम्बर शिप लेने के लिये सम्पर्क करे। मो0 084496-70000

अवार्ड, मेडल रजिस्ट्रेशन व अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करे 09568895555, 084496-70000

RNI No. DELHIN/2011/36240
Postal Reg. No. DL (E) 20/5374/2011-13

आचार्य शशि मोहन (तांत्रिक बहल)

(शताधिक पुस्तकों के लेखक)

के मार्गदर्शन में विद्वान ज्योतिषाचार्यों

आचार्य किशोर घिल्डियाल, आचार्य आशुतोष झा
एवं डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा

ज्योतिष सीखें

सीमित सीटें

पंजीकरण के लिए शीघ्र सम्पर्क करें

ज्योतिष गुरू एस्ट्रो पॉइट

एफ 8 ए, गली नं. 3, विजय ब्लाक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली - 92

फोन : 011-22435495, 09873295495, 9873295490

workshop.jg@gmail.com, jyotishgurumagazine@gmail.com